इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ

एम.टी.टी.–017

कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

–इन्दिरा गांधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

—Indira Gandhi

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ

एम.टी.टी.-017

कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. मैनेजर पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. गंगा प्रसाद विमल
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. सी.पी. शिवदासन
पूर्व प्रोफेसर
रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंगलिश, बंगलौर

प्रो. हरीश नारंग
पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी अध्ययन केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. चमन लाल
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. हरिमोहन शर्मा
हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. रामबक्ष
अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

डॉ. पूरन चंद टंडन
हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री कुमार विक्रम
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

प्रो. जवरीमल पारख
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

प्रो. रीतारानी पालीवाल
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

संकाय सदस्य, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ

डॉ. राजेंद्र प्रसाद पांडेय
डॉ. देवशंकर नवीन
डॉ. जगदीश शर्मा
डॉ. मनजीत बरूआ
डॉ. हरीश कुमार सेठी
डॉ. ज्योति चावला

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद पांडेय
डॉ. देवशंकर नवीन
अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण
विद्यापीठ, इग्नू

पाठ्यक्रम समन्वय

डॉ. हरीश कुमार सेठी
सहायक प्रोफेसर
अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण
विद्यापीठ, इग्नू

पाठ्यक्रम संपादक

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
पूर्व पत्रकारिता, हिंदी विभागाध्यक्ष
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

पाठ लेखक

डॉ. ज्योति चावला, सहायक प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	इकाई 1
डॉ. पूरनचंद टंडन, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	इकाई 2 एवं 7
डॉ. विनीता कुमारी, एसोशिएट प्रोफेसर, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	इकाई 3
डॉ. शिव कुमार शर्मा, एसोशिएट प्रोफेसर, महाराज अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	इकाई 4
प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, पूर्व निदेशक, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू	इकाई 5
प्रो. सत्यदेव मिश्र, प्रोफेसर एमेरिट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं डॉ. हरीश कुमार सेठी, इग्नू	इकाई 6
डॉ. हरीश कुमार सेठी, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	इकाई 8, 10 एवं 12
प्रो. हेमचंद्र पाँडे, पूर्व डीन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	इकाई 9
प्रो. हरिशंकर मिश्र, पूर्व प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं डॉ. हरीश कुमार सेठी, इग्नू	इकाई 11

सामग्री उत्पादन

श्री जितेन्द्र सेठी
सहायक कुलसचिव,
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार
अनुभाग अधिकारी,
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

मई, 2014

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2014

ISBN: 978-81-266-6675-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में कापीराइटधारक से लिखित में अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ या किसी अन्य माध्यम से पुनरुत्पादित न किया जाए।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में और अधिक जानकारी मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068 स्थित विश्वविद्यालय मुख्यालय या इग्नू की सरकारी वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की ओर से प्रो. अवधेश कुमार सिंह, निदेशक, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ एवं कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाइपिंग : राजश्री कंप्यूटर्स, वी-166, सेक्टर-ए, भगवती विहार, उत्तम नगर (नजदीक सेक्टर 2, द्वारका), नई दिल्ली-110059

मुद्रक : गीता ऑफसेट प्रिंटर्स प्रा. लि., सी-90, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-1, नई दिल्ली-110020

विषय सूची

खंड 1 कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और आयाम

इकाई 1	कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और उपादेयता	9
इकाई 2	कोशों के प्रकार और परंपरा	20
इकाई 3	कोश उपयोग की प्रविधि	49

खंड 2 कोश, कंप्यूटर कोश और अनुवाद

इकाई 4	कोश निर्माण की प्रक्रिया	71
इकाई 5	कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश	88
इकाई 6	अनुवाद में कोशों की उपयोगिता	109

खंड 3 पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और विकास

इकाई 7	शब्द : अवधारणा और आयाम	131
इकाई 8	पारिभाषिक शब्दावली : प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षण	150
इकाई 9	पारिभाषिक शब्दावली का विकास और मानकीकरण	164

खंड 4 पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद

इकाई 10	पारिभाषिक शब्दावली : विचारधाराएँ, सिद्धांत और युक्तियाँ	177
इकाई 11	पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद का संदर्भ	195
इकाई 12	विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली : अभ्यास	210

पाठ्यक्रम परिचय

'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' (एम.टी.टी.-017) अनुवाद अध्ययन में एम.ए. (एम.ए.टी.एस.) कार्यक्रम का एक पाठ्यक्रम है। जैसा कि इस पाठ्यक्रम के शीर्षक से ही स्पष्ट होता है, इसमें 'कोशविज्ञान' और 'पारिभाषिक शब्दावली' तथा उनके साथ अनुवाद के संबंध को अध्ययन का आधार बनाया गया है। इसे ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित किया गया है, जिनमें से पहले दो खंड 'कोशविज्ञान और अनुवाद' से संबंधित हैं और अगले दो खंड 'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' से।

'कोशविज्ञान' और 'पारिभाषिक शब्दावली' पदों का प्रयोग करने से मोटे तौर पर यह महसूस होता है कि ये दोनों अलग-अलग अवधारणाएँ हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि कोशविज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली मूलतः एक ही हैं। दोनों का संबंध शब्दों और उनमें निहित अर्थों आदि जैसे आयामों से है। कोशविज्ञान, कोश निर्माण का विज्ञान है। कोशविज्ञान के अंतर्गत कोश निर्माण संबंधी सभी सैद्धांतिक जानकारी दी जाती है। इसी तरह, पारिभाषिक शब्दावली को भी देखा जा सकता है, जोकि शब्द-संग्रह आदि के रूप में कोशों का एक प्रकार विशेष ही है। इसलिए अपने व्यापक संदर्भ में पारिभाषिक शब्दावली भी कोशविज्ञान से ही संबंधित है। इन दोनों में तात्त्विक समानता के कारण ही हमने इन्हें एक ही पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया है।

कोशविज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली में समानता के बारे में चर्चा करने के बाद अनुवाद के साथ इनके संबंध पर विचार करना भी जरूरी है। अनुवाद करते समय एक भाषा की सामग्री में निहित कथ्य को दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। स्वाभाविक है कि अनुवाद संबंधी यह भाषा-सामग्री शब्दों और वाक्यों आदि का रूप लिए हुए होती है। शब्द, भाषा की सबसे छोटी किंतु सार्थक इकाई होते हैं। ये अर्थ का संवहण किए हुए होते हैं। शब्दों में निहित अर्थ अथवा शब्दों के कथ्य को अनुवादक अपनी मेधा या स्मरण शक्ति के आधार पर लक्ष्य भाषा के शब्दों के जरिए प्रस्तुत करता है। लेकिन उसकी स्मरण शक्ति की भी एक सीमा होती है। इसलिए स्रोत भाषा के कथ्य के आशय को भली प्रकार से समझने एवं लक्ष्य भाषा के शब्दों में समुचित रूप में प्रस्तुत करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के साधनों (tools) का सहारा लेना पड़ता है। ऐसे में शब्दों के कोश उसका सबसे बड़ा साधन-उपकरण सिद्ध होते हैं। कोश उसके लिए एक अनिवार्य उपकरण होता है। जिस प्रकार युद्ध के मैदान में सिपाही का हथियारों से लैस होना जरूरी होता है, उसी प्रकार अनुवादक को भली प्रकार से और निपुणता के साथ अनुवाद करने के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों आदि का सहारा लेना पड़ता है। कोश के जरिए उसे शब्दों की रूपपरक और कथ्यपरक जानकारी मिलती है। रूपपरक जानकारी के अंतर्गत शब्द के मानक उच्चारण, मानक वर्तनी, शब्द, वर्ग संबंधी संरचना, लिंग एवं वचन संबंधी सूचना, शब्द की व्युत्पत्ति, उत्पादक रूप, मानक एवं बोलीगत/ग्राम्य/वर्जित रूप आदि को शामिल कर सकते हैं तथा कथ्यपरक जानकारी के अंतर्गत शब्द का वस्त्वर्थ, लक्ष्यार्थ, शब्द से बनने वाले मुहावरे, भिन्न अर्थ-छटाएँ आदि को शामिल किया जा सकता है।

सफल अनुवाद के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों की जरूरत पड़ती है। इन विभिन्न प्रकार के कोशों में से अनुवादक आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त कोश का इस्तेमाल करके विवेकानुसार पर्याय चयन कर अनुवाद कार्य करता है। लेकिन जब ज्ञान की किसी शाखा या विषय केंद्रित सामग्री का अनुवाद किया जाता है तो अनुवादक को उस विषय से संबंधित तकनीकी-पारिभाषिक शब्दों के लक्ष्य भाषा में पर्याय लिखने पड़ते हैं। उसकी स्मरण-शक्ति में विषय-विशेष की जानकारी संचित होती है, जिसके आधार पर वह समतुल्य पर्याय लिखता चलता है। किंतु यह जरूरी नहीं होता कि वह उस विषय-विशेष की समस्त पारिभाषिक शब्दावली और लक्ष्य भाषा में उनके सटीक पर्यायों से परिचित हो ही। ऐसे में पारिभाषिक शब्द संग्रह (Technical Terminology/ Glossary) उसके लिए बड़े साधन-उपकरण सिद्ध होते हैं। विशेष बात यह है कि ये शब्द-संग्रह ज्ञान-क्षेत्र या विषय-विशेष केंद्रित तैयार किए हुए होते हैं और आम तौर पर द्विभाषिक रूप में होते हैं। इनके निर्माण की प्रक्रिया क्या होती है आदि कई ऐसे पक्ष हैं जो गंभीर अध्ययन का विषय हैं। इसलिए प्रस्तुत पाठ्यक्रम में कोशों के निर्माण में सहायक सामान्य सिद्धांतों को विवेचित करने वाले विषयों को कोशविज्ञान के साथ-साथ पारिभाषिक शब्दावली को रखा गया है।

अनुवाद-कर्म सीखने वाले और अनुवाद अध्ययन करने वाले किसी भी विद्यार्थी को कोश एवं पारिभाषिक शब्दावली के बारे में विशेष तौर पर जानना बहुत जरूरी होता है। उन्हें जहाँ कोशों और पारिभाषिक शब्दावली आदि की जरूरत पड़ती है, वहीं यह जानना भी जरूरी होता है कि कोशों का निर्माण आदि किस प्रकार किया जाता है? पारिभाषिक शब्दावली कैसे निर्मित की जाती है? कोश और पारिभाषिक शब्दावली के ये पक्ष अनुवाद के संदर्भ में उपयोगी भी हैं और महत्त्वपूर्ण भी। हालाँकि इनके निर्माण आदि से संबंधित कार्य अनुवाद से सीधे तौर पर जुड़े हुए नहीं हैं, लेकिन यह भी सही है कि ये अनुवाद के सहवर्ती कार्य हैं। अनुवाद में शब्दार्थ और शब्द के पर्याय पर प्रमुख बल रहता है और कोशविज्ञान तथा पारिभाषिक शब्दावली का संबंध भी शब्दों से ही है। शब्दों से यही संबंध कोशविज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली को अनुवाद से जोड़ते हैं और इनका निर्माण सहवर्ती कार्य बन जाता है। इसीलिए अनुवाद से जुड़े व्यक्ति और इसमें संलग्न संस्थाएँ कोश निर्माण भी करते-कराते हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुवाद का कोशविज्ञान और पारिभाषिक शब्दावली से सीधा संबंध है।

आइए अब हम प्रस्तुत पाठ्यक्रम का परिचय प्राप्त करें। चार खंडों में विभाजित **'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद'** नामक इस पाठ्यक्रम के प्रत्येक खंड में तीन-तीन इकाइयाँ हैं।

खंड 1 **'कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और आयाम'** में कोश और कोशविज्ञान की अवधारणा और आयामों को स्पष्ट करते हुए इनकी उपादेयता को रेखांकित किया गया है। इसके साथ-साथ कोशों के विविध प्रकारों के बारे में बताया गया है और हिंदी कोश निर्माण परंपरा पर चिंतन किया गया है। इसके साथ-साथ, इस खंड में कोश उपयोग की प्रविधि के बारे में विस्तार से समझाने का भी सार्थक प्रयास किया गया है। इस खंड की इकाई 3 में आपको 'कोश उपयोग की प्रविधि' से परिचित कराते हुए अंग्रेजी और हिंदी के शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का अभ्यास भी कराया जाएगा। आपसे **अनुरोध है कि आप इकाई में स्पष्ट की गई प्रविधि को ध्यान में रखते हुए हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का भरपूर अभ्यास करें। कृपया यह ध्यान रखें कि सत्रांत परीक्षा में अंग्रेजी और हिंदी के चयनित शब्दों को वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे।** उस स्थिति में आपके द्वारा किए गए ये अभ्यास उन प्रश्नों को हल करने में मददगार सिद्ध होंगे।

खंड 2 **'कोश, कंप्यूटर कोश और अनुवाद'** में सबसे पहले कोश निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों और इस प्रक्रिया में कंप्यूटर की भूमिका जैसे पक्षों को शामिल किया गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति एवं विकास के कारण कंप्यूटर और इंटरनेट जैसे आयामों ने हमारे जीवन-व्यवहार को दूर तक प्रभावित किया है। कोश और कोशविज्ञान का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रह गया है। कोश और कोशविज्ञान में कंप्यूटर एवं इंटरनेट का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। इसे ध्यान में रखते हुए इस खंड में हमने कंप्यूटर कोश और ऑनलाइन कोश के स्वरूप और महत्त्व आदि की जानकारी भी दी है। इसके अलावा, अनुवाद और कोशों के अंतःसंबंध और महत्त्व पर प्रकाश भी डाला गया है। वहीं अनुवाद में एकभाषिक कोशों के उपयोग के औचित्य पर विचार किया गया है और अनुवाद के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के कोशों की उपयोगिता को उद्‌घाटित भी किया गया है।

खंड 3 **'पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और विकास'** से संबंधित है। पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा को स्पष्ट करने से पहले इस खंड में 'शब्द' से तात्पर्य-महत्त्व, शब्दों के स्रोत एवं प्रकार, निर्माण-प्रक्रिया और शब्द शक्तियाँ जैसे पक्षों पर प्रकाश डालकर शब्द की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। इसमें शब्द संपदा और अनुवाद पर चर्चा के साथ-साथ अनुवाद में शब्द के महत्त्व को भी रेखांकित किया गया है। इसके बाद पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, प्रकार और अभिलक्षणों पर सविस्तार चर्चा की गई है। इस खंड में पारिभाषिक शब्दावली की सहज एवं नियोजित विकास प्रक्रिया को स्पष्ट करने के साथ-साथ पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की परंपरा एवं इनके मानकीकरण के प्रयासों और समस्याओं को भी विवेचित किया गया है।

खंड 4 **'पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद'** में भारत में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण से संबंधित विभिन्न विचारधाराओं-दृष्टिकोणों, सिद्धांतों और युक्तियों/तकनीकों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें अखिल भारतीय शब्दावली की आवश्यकता, इसके निर्माण की पद्धति और पहचान के सामान्य पक्ष उजागर किए गए हैं। इसके साथ-साथ पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद के विभिन्न पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके लिए अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता, अनुवाद के साधन के रूप में पारिभाषिक शब्दावलियाँ, अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की चयन प्रक्रिया और प्रासंगिकता, अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग की सहजता का संदर्भ और पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद में क्या-क्या कठिनाइयाँ संभव हैं? आदि विषयों को चिंतन का आधार बनाया गया है। खंड के अंत में विभिन्न विषय-क्षेत्रों की प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली के अंग्रेजी-हिंदी शब्दों के अभ्यास के लिए पारिभाषिक शब्दावली के अनुप्रयोग को व्यावहारिक रूप देने की कोशिश की गई है। इसके लिए खंड की अंतिम इकाई में प्रशासन, विधि, मीडिया, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, बैंकिंग-बीमा-वाणिज्य आदि विषय-क्षेत्रों की चयनित पारिभाषिक शब्दावली दी गई है। हालाँकि इकाई में इन्हें अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है, किंतु इन्हें हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद के संदर्भ में भी समान रूप से व्यवहार में लाया जाता है। **सत्रांत परीक्षा में इन विभिन्न विषय-क्षेत्रों की इस पारिभाषिक शब्दावली और इनके अनुवाद से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे। ये प्रश्न दोनों में से किसी भी रूप में यानी अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद अथवा हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद करने से संबंधित हो सकते हैं। इसलिए विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे इनके हिंदी अनुवाद का अच्छी तरह से अभ्यास कर लें ताकि सत्रांत परीक्षा में उपयुक्त और उचित पर्याय दे सकें।**

खंड

1

कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और आयाम

इकाई 1

कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और उपादेयता 9

इकाई 2

कोशों के प्रकार और परंपरा 20

इकाई 3

कोश उपयोग की प्रविधि 49

खंड 1 का परिचय

अनुवाद अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम के 'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' (एम.टी.टी.-017) नामक पाठ्यक्रम का पहला खंड **'कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और आयाम'** से संबंधित है। कोश एवं कोशविज्ञान का संबंध शब्दों और उनमें निहित अर्थों आदि जैसे आयामों से है। कोशविज्ञान, कोश निर्माण का विज्ञान है। कोश निर्माण को 'कला' कह दिया जाता है। लेकिन, कोश की रचना प्रक्रिया 'कला' न होकर 'विज्ञान' है क्योंकि कोश तैयार करने की अवधारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा रखती है। यही कारण है कि कोश निर्माण की कला को 'विज्ञान' मानते हुए इसे 'कोशविज्ञान' कहा जाता है। इस प्रकार, कोशविज्ञान का संबंध कोश बनाने की प्रविधि और प्रक्रिया की सैद्धांतिक जानकारी से है। कोशविज्ञान के अंतर्गत कोश निर्माण संबंधी सभी सैद्धांतिक जानकारी दी जाती है। वास्तविकता यह है कि 'कोश और कोशविज्ञान' एक विशिष्ट संकल्पना है और इसके कई आयाम हैं। प्रस्तुत खंड में इनकी अवधारणा और आयामों को स्पष्ट करते हुए इनकी उपादेयता आदि विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

इस खंड में कुल तीन इकाइयाँ हैं।

इकाई 1 **'कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और उपादेयता'** से संबंधित है। इसमें सबसे पहले कोश एवं कोशविज्ञान के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ-साथ 'शब्दकोश' और 'शब्द-संग्रह' में भिन्नता पर विचार किया गया है और कोशविज्ञान का अन्य विषयों से संबंध स्पष्ट किया गया है। कोशविज्ञान के संबंध में भ्रांतियों के कारण इसे 'शब्दार्थविज्ञान' भी मान लिया जाता है। इसलिए इस इकाई में शब्दार्थविज्ञान के अर्थ और स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है और कोशविज्ञान के साथ इसके अंतर को स्पष्ट किया गया है। इकाई के अंत में कोशों की आवश्यकता-महत्त्व तथा कोशविज्ञान और अनुवाद में अंतर्संबंध को भी रेखांकित गया है।

इकाई 2 **'कोशों के प्रकार और परंपरा'** में सबसे पहले कोशों के वर्गीकरण के प्रमुख आधारों को विवेचित किया गया है। इसके बाद इन आधारों के आलोक में कोशों के विभिन्न प्रकारों की सोदाहरण चर्चा की गई है और इकाई के अंत में हिंदी कोश निर्माण की परंपरा पर चिंतन किया गया है। यह चिंतन हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकासक्रम के आलोक में किया गया है। कहने का अभिप्राय यह है कि इस विकासक्रम को संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → हिंदी में कोश निर्माण के संदर्भ में विवेचित किया गया है। 'हिंदी में कोश निर्माण' को भी आगे आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल के संदर्भ में अवलोकित-विवेचित किया गया है। इस तरह हम कह सकते हैं कि इस इकाई में हिंदी कोश निर्माण की परंपरा को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

इकाई 3 **'कोश उपयोग की प्रविधि'** से संबंधित है, जिसमें कोश उपयोग की प्रविधि के बारे में विस्तार से समझाने का सार्थक प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में कोश उपयोग में संकेत प्रणाली की भूमिका और महत्त्व को स्पष्ट किया गया है और कोशों में प्रयुक्त संकेत चिह्नों को वर्गीकृत किया गया है। इकाई के अंत में, कोश में शब्द ढूँढने के तरीके पर प्रकाश डाला गया है। अनुरोध है कि इस इकाई में स्पष्ट की गई कोश उपयोग की प्रविधि के आलोक में शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का भरपूर अभ्यास करें। आप यह अभ्यास अंग्रेजी और हिंदी, दोनों भाषाओं के शब्दों के संदर्भ में करें। **कृपया यह ध्यान रखें के सत्रांत परीक्षा में अंग्रेजी और हिंदी के चयनित शब्दों को वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे।** विश्वास है कि आपके द्वारा किए गए ये अभ्यास उन प्रश्नों को हल करने में मददगार सिद्ध होंगे।

इकाई 1 कोश और कोशविज्ञान : अवधारणा और उपादेयता

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 कोश : अर्थ एवं स्वरूप

1.3 शब्दकोश और शब्द-संग्रह

1.4 कोशों की आवश्यकता और महत्त्व

1.5 कोशविज्ञान : अर्थ और आयाम

- 1.5.1 कोशविज्ञान : अर्थ और स्वरूप
- 1.5.2 कोशविज्ञान का अन्य विषयों से संबंध

1.6 कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान

- 1.6.1 शब्दार्थ विज्ञान : अर्थ और स्वरूप
- 1.6.2 कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान में अंतर

1.7 कोशविज्ञान और अनुवाद में अंतर्संबंध

1.8 सारांश

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कोश के अर्थ और स्वरूप को जान सकेंगे;
- कोशों की आवश्यकता एवं उनके महत्त्व से परिचित हो सकेंगे;
- कोशविज्ञान और कोश में अंतर को समझ सकेंगे;
- कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान में अंतर और उनकी उपयोगिता के क्षेत्र से परिचित हो सकेंगे; और
- कोशविज्ञान और अनुवाद के बीच संबंध को जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

अनुवाद अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम के 'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' से संबंधित एम.टी.टी.-017 पाठ्यक्रम की यह पहली इकाई है। इस इकाई में हम कोश के अर्थ और स्वरूप के साथ-साथ कोशों की उपयोगिता के बारे में जानेंगे। साथ ही, इस इकाई में यह भी बताया जाएगा कि शब्दकोश और शब्द-संग्रह में क्या अंतर है। इसके अलावा आपको कोशविज्ञान से भी परिचित कराया जाएगा और शब्दार्थ विज्ञान से उसकी भिन्नता भी बताई जाएगी। इकाई के अंत में कोशविज्ञान और अनुवाद में अंतर्संबंध को रेखांकित किया जाएगा। इस क्रम में कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान के प्रयोग के क्षेत्रों पर भी प्रकाश डाला जाएगा। इस इकाई के अध्ययन से कोश की अवधारणा और उससे जुड़े आयामों की जानकारी तो मिलेगी ही, साथ ही आपको वर्तमान समय में बेहद उपयोगी तथा उद्योग के रूप में उदित होती अनुवाद विधा के क्षेत्र में कोशों की भूमिका का आधार भी स्पष्ट हो सकेगा।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1.2 कोश : अर्थ एवं स्वरूप

सभ्यताओं की स्थापना के साथ ही मनुष्य को अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती आई है। विभिन्न भावों, अनुभूतियों और कालांतर में मौखिक एवं लिखित साहित्य का मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार अनुवाद करता आया है। तब से लेकर आज तक मनुष्य ने बेहद प्रगति एवं विकास किया है। मानव सभ्यता के इस विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। इस विकास के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य के अनुवाद भी होते रहे हैं। आज जब हम इक्कीसवीं सदी में रह रहे हैं और भूमंडलीकरण ने सीमाओं को धूमिल कर दिया है तब दूसरे समाज और उसकी संस्कृति को जानने के लिए अनुवाद की भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। लेकिन इस महत्त्व की भली प्रकार से प्राण-प्रतिष्ठा के लिए अनुवादकों को आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रकार के कोशों का सहारा लेना पड़ता है। अनुवादकों के लिए ये कोश उपयोगी साधन-उपकरण सिद्ध होते हैं। अनुवाद के बढ़ते महत्त्व के कारण अनुवाद में प्रयुक्त होने वाले साधन-उपकरणों की आवश्यकता और उन पर निर्भरता भी बहुत बढ़ गई है। अनुवाद के अनेक साधन-उपकरणों में सबसे महत्त्वपूर्ण साधन हैं – कोश।

भारतीय साहित्य में 'कोश' शब्द का प्रयोग बहुत प्राचीन है। ऋग्वेद में यह शब्द कई बार आया है। 'कोश' के लिए 'कोश' तथा 'कोष' दोनों वर्तनियों का प्रयोग होता आया है। कोश का प्राचीन अर्थ 'पीपा', 'कटोरा', 'म्यान', 'ढक्कन', 'खोल', 'संदूक' आदि है। अर्थात 'कोश' शब्द से तात्पर्य किसी ऐसी वस्तु से है जिसमें कुछ रखा जा सके। शब्दकोश का अर्थ भी मूलतः यही है अर्थात ऐसी वस्तु जिसमें शब्द एवं उनके विभिन्न अर्थ रखे जाते हैं। इसी से 'कोश' शब्द विकसित होकर 'खजाना', 'भंडार' आदि के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

लंबे समय तक 'कोश' तथा 'कोष' दोनों शब्दों का प्रयोग 'शब्दकोश' तथा 'खजाना' दोनों अर्थों में होता रहा। किंतु बीसवीं सदी में हिंदी के मानकीकरण के समय 'कोश' शब्द का प्रयोग 'शब्दकोश' के लिए तथा 'कोष' का प्रयोग 'खजाने' के लिए निश्चित कर दिया गया।

'कोश' की अवधारणा भारत के लिए बेहद प्राचीन है। प्राचीन ग्रंथों में 'कोश' के लिए 'निघंटु' शब्द का प्रयोग किया गया है। द्रविड़ भाषाओं में से प्रमुख मलयालम, तमिल और तेलुगु में कोश के लिए आज भी 'निघंटु' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

'निघंटु' के अलावा, कोश के लिए एक अन्य शब्द 'अभिधान' का भी प्रयोग होता है। संस्कृत के इस 'अभिधान' शब्द का प्रयोग ओड़िया में 'कोश' शब्द के लिए आज भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त, कोश के लिए अन्य प्रयुक्त शब्द हैं – 'शब्दार्थ कौस्तुभ', 'शब्द सागर', 'शब्द संग्रह', 'शब्द रत्नाकर' आदि।

अंग्रेजी में 'कोश' के लिए 'dictionary' शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह मूलतः लैटिन शब्द diecere से बना है, जिसका अर्थ है – कहना या बोलना। इसी से बना शब्द है – diction, जिससे 'dictionary' शब्द की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार, व्युत्पत्तिमूलक अर्थ-संदर्भ में कहा जा सकता है कि 'बोले गए शब्दों का संग्रह 'dictionary' कहलाता है।'

अंग्रेजी में 'dictionary' को 'lexicon' भी कहा जाता है। इसी 'lexicon' शब्द से 'Lexicography' और 'Lexicology' जैसे शब्द बनाए गए हैं, जिनके बारे में हम इस इकाई के अगले भागों में चर्चा करेंगे।

'कोश', 'dictionary' और 'lexicon' के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ को जानने के बाद आइए अब हम कोश (dictionary) की परिभाषा पर विचार करें।

कोश की परिभाषा

'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' (Encyclopedia Britannica) में 'Dictionary' (कोश) शब्द को निम्नलिखित शब्दों में परिभाषित किया गया है :

> 'Dictionary, a book listing words of a language, with their meaning in the same or another language usually in alphabetical order, often with date regarding pronounciation, origin and usage.' (अर्थात कोश एक ऐसी पुस्तक है जिसमें एक भाषा के शब्दों को उसी भाषा अथवा किसी अन्य भाषा में उनके

अर्थों के साथ सामान्यतः उनके उच्चारण, व्युत्पत्ति, प्रयोग संबंधी जानकारी के साथ वर्ण-अनुक्रम में रखा जाता है।)

इसी प्रकार, 'विकिपीडिया' के अनुसार, 'Dictionary' (कोश) शब्द का अर्थ है :

'A **dictionary**, also called a **lexicon**, **wordbook**, or **vocabulary**, is a collection of words in one or more specific languages, often listed alphabetically, with usage information, definitions, etymologies, phonetics, pronunciations, and other information, or a book of words in one language with their equivalents in another, also known as a lexicon.' (अर्थात कोश (जिसे शब्दकोश या शब्द-संग्रह भी कहा जाता है) मूलतः एक या एकाधिक भाषाओं के शब्दों का संग्रह है जिसमें शब्दों के प्रयोग की जानकारी, उनकी परिभाषाएँ, शब्द व्युत्पत्ति, स्वर विज्ञान, उच्चारण तथा अन्य सबंधित जानकारी दी जाती है। इनमें शब्दों का संग्रह प्रायः वर्णानुक्रम में दिया जाता है। अथवा वह ग्रंथ जिसमें एक भाषा के शब्दों के दूसरी भाषा में समतुल्य दिए जाएँ, वह भी शब्दकोश कहलाता है।)

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक 'कोशविज्ञान' में 'कोश' को परिभाषित करते हुए लिखा है :

'कोश ऐसे संदर्भ ग्रंथ को कहते हैं जिसमें भाषा-विशेष के शब्दादि का संग्रह हो, या संग्रह के साथ उनके इसी या दूसरी या दोनों भाषाओं में, अर्थ, पर्याय, प्रयोग या विलोम हों, या विशिष्ट अथवा विभिन्न विषयों की प्रविष्टियों की व्याख्या, नामों (स्थान, व्यक्ति आदि) का परिचय, या कथनों आदि का संकलन क्रमबद्ध रूप में हो।' (पृ. 12)

उपर्युक्त परिभाषाओं के आलोक में कहा जा सकता है कि कोई भी शब्दकोश, भले ही वह एकभाषिक हो, द्विभाषिक हो या फिर बहुभाषिक – उन सभी में एक सामान्य विशेषता शब्दों का वर्णक्रम में होना अनिवार्य होता है। कोशों में शब्दों और उनके अर्थ तो होते ही हैं, साथ ही उनमें उच्चारण, व्युत्पत्ति, व्याकरणिक कोटि, प्रयोग, समान अर्थ, विलोम अर्थ आदि जानकारियों को भी शामिल किया हो सकता है। इस आधार पर, संक्षेप में कहा जा सकता है कि **कोश एक भाषा के शब्दों का समान भाषा या किसी अन्य भाषा में अर्थ, व्युत्पत्ति, उच्चारण तथा अन्य संबंधित जानकारियों का संग्रह होता है।**

जैसा कि कोश की परिभाषा से स्पष्ट होता है, इसमें एक भाषा के शब्दों का समान भाषा या किसी अन्य भाषा में अर्थ, व्युत्पत्ति, उच्चारण तथा अन्य संबंधित जानकारियाँ शामिल होती हैं। इस प्रकार की विभिन्न जानकारियों के समावेश के कारण हमें विभिन्न प्रकार के कोश देखने को मिलते हैं। ये भाषिक कोश भी हो सकते हैं और भाषेतर भी। इसी आधार पर कोशों को भाषिक एवं भाषेतर संदर्भ में वर्गीकृत किया जा सकता है। वैसे, इनके विविध प्रकारों के कारण हमें कुछ आधार लेकर इन्हें वर्गीकृत करना पड़ता है ताकि इन्हें भली प्रकार से समझा जा सके। कोशों के इन विभिन्न आधारों और विभिन्न प्रकारों के बारे में हम विस्तृत चर्चा अगली इकाई में करेंगे।

1.3 शब्दकोश और शब्द-संग्रह

आम बोलचाल में 'कोशों' को ही 'शब्दकोश' भी कह दिया जाता है। लेकिन दोनों में भिन्नता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इस ओर ध्यान दिलाते हुए एक व्यापक टिप्पणी की है, जो इस प्रकार है :

'विभिन्न विद्वानों ने अपने ग्रंथों और लेखों में 'कोश' के नाम पर 'शब्दकोश' की परिभाषा दी है, जो कुछ इस प्रकार है : **कोश उस ग्रंथ को कहते हैं, जिसमें वर्णानुक्रम से शब्द तथा उनके अर्थ दिए रहते हैं।** कहना न होगा कि यह कोश की सर्व-समावेशी परिभाषा नहीं है। यह ध्यान देने की बात है कि 'शब्दकोश' में शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि के अर्थ होते हैं, 'विलोम कोश' में विलोम होते हैं, 'पर्याय कोश' में शब्दों के पर्याय होते हैं, विषय-विशेष के कोशों में उसके तकनीकी शब्दों या प्रविष्टियों के माध्यम से उस विषय को समझाया जाता है, विश्वकोशों में तरह-तरह की प्रविष्टियों के द्वारा अधिक-से-अधिक

विषयों को स्पष्ट किया जाता है, नामकोशों में व्यक्ति या भौगोलिक नामों का परिचय होता है तथा उद्धरण कोश में उद्धरणों का संकलन होता है।' (पृ. 12)

स्पष्ट है कि 'कोश' का अर्थ वह संदर्भ ग्रंथ है जिसमें शब्द आदि के अर्थ, पर्याय, विलोम शब्द आदि दिए हों। कोश स्वयं में एक व्यापक शब्द है जिसके भीतर सभी प्रकार के कोश आते हैं। जैसे, शब्दकोश, पर्याय कोश, विलोम कोश, नाम कोश, विश्वकोश, मुहावरा-लोकोक्ति कोश आदि। जबकि 'शब्दकोश' से तात्पर्य उस कोश से है जिसमें एक शब्द के विभिन्न अर्थ आदि दिए गए हैं। शब्दकोश में प्रस्तुत शब्द के लिंग, वचन, धातु, आदि के विषय में भी संक्षिप्त जानकारी दी होती है। जैसे कि हम जानते हैं कि शब्दकोश एकभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी हो सकते हैं। इस प्रकार कोश और शब्दकोश के बीच अंतर को यदि संक्षेप में व्यक्त करना हो तो यह कहा जा सकता है कि शब्दकोश, कोश के विभिन्न प्रकारों में से एक प्रकार मात्र है।

इस मत के आलोक में हमें 'कोश' और 'शब्दकोश' में आपसी भिन्नता को ध्यान में रखना होगा। जहाँ तक 'शब्दकोश' के अर्थ और स्वरूप का संबंध है, इसपर विचार करते समय भाग 1.2 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि शब्दकोश मूलतः शब्दों का संग्रह ही होता है। ऐसे प्रश्न यह उभरता है कि यदि 'शब्दकोश' शब्दों का संग्रह है तो 'शब्द-संग्रह' पर अलग से चर्चा क्यों? क्या ये दोनों शब्द एक-दूसरे के पर्याय हैं या इनमें कुछ भिन्नता है?

इस प्रश्न पर विचार करते हुए सबसे पहले हम यहाँ यह संकेत करना चाहते हैं कि यहाँ प्रयुक्त शब्द 'शब्दकोश' तथा 'शब्द-संग्रह' पारिभाषिक अर्थ रखते हैं। अर्थात दोनों शब्द समान होते हुए भी किसी खास संदर्भ में विशेष अर्थ रखते हैं। आइए इन दोनों शब्दों तथा उनकी अवधारणाओं पर विस्तार से चर्चा करें और उनमें निहित अंतर को जानें।

शब्दकोश : जैसा कि भाग 1.3 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि 'कोश' शब्द का प्रयोग मूलतः 'भंडार' के लिए होता रहा है। हिंदी के मानकीकरण की प्रक्रिया के बाद 'कोश' शब्द को 'शब्दकोश' के लिए तथा 'कोष' को 'भंडार' शब्द के लिए नियत कर दिया गया है। यदि आप 'कोश' यानी शब्दकोश की परिभाषा को दोबारा पढ़ें तो आप यह याद आ जाएगा कि शब्दकोश से तात्पर्य उस ग्रंथ से है जिसमें एक भाषा के शब्दों के अर्थ, उनकी व्युत्पत्ति, उच्चारण, प्रयोग तथा अन्य सबंधित जानकारी उसी अथवा अन्य भाषा में वर्णानुक्रम में दी जाती है। स्पष्ट है कि शब्दकोश में शब्द, उनके अर्थ तथा उनसे संबंधित अन्य जानकारी भी प्रदान की जाती है। शब्दकोश में शामिल इस प्रकार की जानकारी पाठक अथवा अनुवादक को अनुभूत होने वाली कई समस्याओं का निराकरण करने में सहायक हो सकती है। उदाहरण के लिए, वे यह जान सकते हैं शब्द-विशेष का अर्थ, उसकी व्युत्पत्ति, उसके विभिन्न पर्याय, उच्चारण कैसे किया जाता है आदि। शब्दकोश मूलतः शब्दों से संबंधित सामान्य जानकारी प्रदान करते है। उदाहरण के लिए, कालिका प्रसाद एवं अन्य द्वारा संपादित 'बृहत् हिंदी कोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ देखिए :

प्रकाशक : वि.(सं.) चमकीला; प्रकाश करने वाला; अभिव्यक्त करने वाला; प्रकट करने वाला; प्रसिद्ध। पु. पुस्तक आदि को छपवाकर प्रकट करने वाला, 'पब्लिशर'; सूर्य; आविष्कर्ता; व्याख्या करने वाला।

ज्ञाता (तृ) : पु. मुर्गा

प्रकाशकीय : वि.(सं.) प्रकाशक संबंधी। पु. प्रकाशक की ओर से, पुस्तक के आरंभ में, दिया जाने वाला वक्तव्य या निवेदन।

प्रकाशन : पु.(सं.) आलोकित करना; प्रकट करना; छपवाकर प्रकट करना या जनता के सामने रखना; प्रकाशित ग्रंथादि; सबको सूचित करना, विज्ञापन; विष्णु। वि. प्रकाशित करने वाला।

'शब्दकोश' के संबंध में जानने के बाद, आइए अब हम 'शब्द-संग्रह' शब्द पर विचार करें क्योंकि शब्द-संग्रह की अवधारणा शब्दकोश से कुछ अलग है।

शब्द-संग्रह : 'शब्द-संग्रह' का अंग्रेजी पर्याय glossary है। इसे 'शब्द-सूची' के नाम से भी जाना जाता है। अंग्रेजी का glossary शब्द लातीनी शब्द glossarium से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है – ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों

का संकलन। यानी शब्द-संग्रह अथवा 'glossary' विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों का संकलन मात्र होता है। इसमें शब्दों के सामान्य अर्थ संकलित न होकर, ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों का संकलन किया हुआ होता है। यानी 'शब्द-संग्रह' में शब्दों के अर्थों के अतिरिक्त और कोई सूचना नहीं दी होती। शब्द-संग्रह को इसलिए 'शब्द सूची' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें विषय विशेष के तकनीकी शब्दों के अर्थ तथा व्याख्या दी जाती है। शब्द-संग्रह में क्षेत्र विशेष के शब्द, उनके अर्थ तथा उनकी व्याख्या दी जाती है। इनमें शब्दकोशों की तरह शब्दों की व्युत्पत्ति, उच्चारण आदि की जानकारी प्रदान नहीं की जाती।

'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह' (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) इसका एक उदाहरण है। आयोग के मानविकी से संबंधित 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह' के खंड-II की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ देखिए जिसमें स्रोत भाषा अंग्रेजी के शब्द, शब्द का ज्ञान-विशेष के जिस क्षेत्र से संबंधित है, उसका उल्लेख तथा हिंदी पर्याय देखिए :

provision	Admn., Com.	(1) शर्त, उपबंध, (2) व्यवस्था, 3) रसद, सामान
provisional	Admn., Pol. Sc.	अनंतिम, अस्थायी, अंतःकालीन
provisional agenda	Pol. Sc.	अनंतिम कार्यक्रम, अनंतिम कार्यसूची
provisional arrest	Pol. Sc.	अस्थायी बंदीकरण, अंतःकालीन बंदीकरण
provisional assessment	Com., Econ.	अनंतिम निर्धारण
provisional bond		अनंतिम बंधपत्र, अनंतिम बांड
provisional doubt	Phil.	अस्थायी संशय
provisional edition	Lib. Sc.	अनंतिम संस्करण
provisional estimates	Econ.	अनंतिम अनुमान, अनंतिम प्राक्कलन
provisional figures		अनंतिम आँकड़े
provisional government	Pol. Sc.	अंतःकालीन सरकार

1.4 कोशों की आवश्यकता और महत्त्व

किसी भी व्यक्ति की स्मृति इतनी सक्षम नहीं होती है कि वह किसी एक अथवा एकाधिक भाषाओं के सभी शब्दों को उनके अर्थ, उनकी व्युत्पत्ति आदि संदर्भों में याद रख सके। इस दृष्टि से कोश बेहद महत्त्वपूर्ण है। वास्तविकता यह है कि कोश लेखक, पाठक और अनुवादक आदि सभी के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।

आज जब संपूर्ण विश्व एक विश्व ग्राम (global village) में तब्दील होता जा रहा है और हमारी नए को जानने की इच्छा भी उतनी ही बलवती होती जा रही है तब दूसरी भाषाओं को जानने और समझने में कोश एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

वास्तव में देखा जाए तो कोशों की आवश्यकता और महत्त्व को कोशों के प्रकार से अलग करके नहीं देखा जा सकता। कोशों की उपयोगिता पर विचार करते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 'कोशविज्ञान' पुस्तक में लिखा है कि 'उपयोगिता का प्रश्न भी 'कोशों के प्रकार' से ही बहुत कुछ जुड़ा है। मोटे रूप से कहा जा सकता है कि व्युत्पत्ति, मानक वर्तनी, व्याकरणिक कोटि, मानक उच्चारण, अर्थ, मानक प्रयोग, परिचय, पर्यायता, अनेकार्थता तथा एक भाषा के शब्द का दूसरी भाषाओं में प्रतिशब्द आदि की दृष्टि से कोश का उपयोग 'अज्ञात' को 'ज्ञात' बनाने के लिए, 'अर्धज्ञात' को 'पूर्ण ज्ञात' बनाने के लिए, तथा शंकाओं के समाधान के लिए किया जाता है। अर्थात अलग-अलग प्रकार के कोशों का अलग-अलग उपयोग है। अर्थात शब्दकोश का एक उपयोग है, विश्वकोश, विषयकोश (जैसे अर्थशास्त्र कोश, भाषाविज्ञान कोश, मनोविज्ञान कोश आदि) का दूसरा, तथा प्रयोग कोश का तीसरा। ऐसे ही पारिभाषिक कोश का एक उपयोग है, तो पर्याय कोश और उद्धरण कोश का दूसरा, या व्युत्पत्ति कोश का एक उपयोग है तो उच्चारण कोश का कुछ और। (पृ. 13)

इस तरह यह कहा जा सकता है कि विभिन्न प्रकार की पाठगत समस्याओं के समाधान के लिए हमें अलग-अलग तरह के कोशों की आवश्यकता पड़ती है। कोशों के इन विभिन्न प्रकारों और उनकी आवश्यकता के संदर्भ में विस्तार से चर्चा इकाई 2 में की जाएगी, किंतु यहाँ विभिन्न संदर्भों के आधार पर अलग-अलग प्रकार के कोशों की आवश्यकता और महत्त्व पर संक्षेप में चर्चा करना अनुपयुक्त न होगा।

- पाठ पढ़ते हुए कई बार पाठक अथवा अनुवादक का परिचय कुछ ऐसे शब्दों से होता है जिनका वह अर्थ नहीं जानता। ऐसे में द्विभाषिक कोश उनकी मदद करता है।
- हमें ऐसा लगता है कि स्रोत भाषा के हम अच्छे जानकार हैं तथा स्रोत भाषा में अर्थ संबंधी समस्या हमें आ ही नहीं सकती। किंतु पाठ पढ़ते समय हमारा सामना ऐसे शब्दों से भी हो सकता है जिनका हम अर्थ जानते तो हैं किंतु विशिष्ट संदर्भ में वह अर्थ उपयुक्त प्रतीत नहीं हो रहा होता। ऐसी स्थिति में उन शब्दों के अन्य पर्याय जानने में एकभाषिक कोश हमारे लिए सहायक सिद्ध होते हैं।
- कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो हमारी भाषा के होते हुए भी हम उनसे अनभिज्ञ होते हैं। वस्तुतः बहुत से शब्द ऐसे हैं जो भाषा के विकास की प्रक्रिया के साथ पीछे छूटते जाते हैं यानी उपयोग में नहीं आते हैं। इस प्रकार के शब्द धीरे-धीरे हमारी स्मृति से लोप होते जाते है। तत्कालीन साहित्य को पढ़ते समय ऐसे शब्द हमारे सामने समस्या के रूप में आ खड़े होते हैं। इसके समाधान के लिए ऐतिहासिक कोश विशेष सहायक सिद्ध होते हैं। जैसे, पौराणिक कोश आदि।
- अपनी अवधारणा के आधार पर अनुवाद एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा में प्रस्तुति मात्र लगता हैं। किंतु अनुवाद करते समय वह केवल भाषा का व्यापार नहीं रह जाता, अपितु उसके माध्यम से संस्कृतियों का आदान-प्रदान भी होता है। ऐसे में अनुवादक के लिए स्रोत भाषा के साथ-साथ केवल लक्ष्य भाषा का ज्ञान ही आवश्यक नहीं बल्कि उस भाषा की संस्कृति की पहचान होना भी आवश्यक है। संस्कृति केवल मानक भाषा में नहीं अपितु लोकभाषाओं, उपभाषाओं आदि में बसती है। उन उपभाषाओं से आए शब्दों का अनुवाद केवल मानक शब्द रखकर नहीं किया जा सकता। पाठक-अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वे उन उपभाषाओं में जाकर उन शब्दों के अर्थ तलाशें। ऐसी स्थिति में उपभाषा कोश की आवश्यकता पड़ती है।
- हमारी भाषा में कई ऐसे शब्द होते हैं जो मानक भाषा से बिल्कुल भिन्न होते हैं। उन्हें अपभाषा या चालू भाषा के शब्द कहते हैं। साहित्यकार इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग भी करते हैं। लेकिन पाठक अथवा अनुवादक को भी इनकी जानकारी, यह जरूरी नहीं। ऐसे शब्दों के लिए सामान्य शब्दकोश सहायक सिद्ध नहीं हो पाते। इस तरह की अपभाषा या चालू भाषा के शब्दों का अर्थ जानने के लिए स्रोत भाषा में तैयार किए हुए अपभाषा कोश सहायक सिद्ध होते हैं।
- हम एक वैश्विक संस्कृति में रह रहे हैं। हमारे आसपास उपलब्ध अनेक वस्तुएँ, अवधारणाएँ विदेशी हैं। अनेक उत्पाद, अनेक नाम आदि हमारी अपनी संस्कृति से परे हैं। ऐसे में उनके सही उच्चारण की समस्या आती है। यूँ तो सामान्य शब्दकोश में शब्दों के अर्थों के साथ उनके उच्चारण आदि भी दिए जाते हैं। किंतु नामों के संदर्भ में यह समस्या सामान्य शब्दकोश सुलझा नहीं पाते। ऐसी स्थिति में उच्चारण कोश विशेष सहायक होता है। अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों के माध्यम से ये कोश हमें शब्दों का सही उच्चारण बताते हैं।
- विश्वकोश एक महत्त्वपूर्ण कोश है। विश्वकोश हमारी भाषेतर समस्याओं का समाधान करता है। अब आप सोच रहे होंगे कि भाषेतर समस्या से क्या अभिप्राय है। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि अनुवाद केवल एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा में अनुवाद मात्र नहीं है। अपितु अनुवाद के माध्यम से हम एक अन्य संस्कृति से परिचित होते हैं। इस प्रकार अनुवाद संस्कृतियों का भी होता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक अथवा पाठक के सामने आने वाली समस्या भाषेतर किस्म की भी होती है। जैसे किसी समाज की संस्कृति, धर्म, दर्शन, साहित्य या कला आदि। पाठक या अनुवादक ऐसी समस्याओं के लिए विश्वकोश की मदद लेते हैं। विश्वकोश विषयों तथा अवधारणाओं की पूरी तथा सिलसिलेवार जानकारी प्रदान करते हैं।
- एक अन्य प्रकार का कोश है – पारिभाषिक शब्दावली/पारिभाषिक शब्द-संग्रह। पारिभाषिक शब्दावली/पारिभाषिक शब्द-संग्रह में किसी भी सामान्य कोश की भाँति शब्द-विशेष के विभिन्न अर्थ, उच्चारण, व्युत्पत्ति आदि संबंधी

जानकारी नहीं दी जाती, अपितु वे विषय केंद्रित होते हैं। यानी उनमें केवल समतुल्य शब्द दिया जाता है। तकनीकी तथा व्यावसायिक विषयों में अनुवादक के लिए पारिभाषिक शब्दावली/पारिभाषिक शब्द-संग्रह महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। सामान्य कोश में जहाँ पाठक या अनुवादक सही अर्थ की तलाश करने में उलझ जाते हैं वहाँ पारिभाषिक शब्दावली/पारिभाषिक शब्द-संग्रह शब्दों का उस संदर्भ में सटीक अर्थ प्रदान करने का साधन सिद्ध होते हैं और वे उनकी आधी समस्या का निवारण कर देते हैं।

इसके अतिरिक्त नाम कोश, परिभाषा कोश, थिसॉरस, अनेक भाषी कोश आदि विभिन्न कोश भी अनुवाद करते समय विशेष सहायक होते हैं। कोशों की आवश्यकता और महत्त्व के संदर्भ में संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि कोई भी व्यक्ति सर्वज्ञाता नहीं हो सकता। उनका ज्ञान बढ़ाने और उपलब्ध ज्ञान को दुरुस्त करने में कोश महती भूमिका अदा करते हैं।

1.5 कोशविज्ञान : अर्थ और आयाम

अब तक किए गए अध्ययन के आधार पर आपको 'कोश' के अर्थ और स्वरूप आदि के बारे में स्पष्ट बोध हो गया होगा। विभिन्न कोशों तथा विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि कोश का अर्थ भंडारण से है। इकाई के इस भाग में हम यह चर्चा करेंगे कि 'कोशविज्ञान' क्या है?

1.5.1 कोशविज्ञान : अर्थ और स्वरूप

'कोशविज्ञान' वास्तव में कोश निर्माण का विज्ञान है। हम जानते हैं कि कोश में दिए गए शब्दों की विस्तृत जानकारी समाहित होती है। लेकिन इतनी तरह की जानकारी को जुटाना और उन्हें व्यवस्थित तरीके से साथ रखना एक जटिल कार्य है, जिसे करने के लिए विशिष्ट व्यवस्था की आवश्यकता है। कोशविज्ञान कोश निर्माण के इसी जटिल कार्य को करने का विज्ञान है।

'कोशविज्ञान' का अंग्रेजी पर्याय 'Lexicography' है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक 'कोशविज्ञान' में 'कोशविज्ञान' शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'Lexicology' तथा 'कोश निर्माण' शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'Lexicography' का उल्लेख किया है। जबकि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित 'बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह' (मानविकी) के खंड-II में अंग्रेजी के 'Lexicography' शब्द का हिंदी पर्याय 'कोशविज्ञान' और 'शब्दकोशविज्ञान' दिया हुआ है तथा 'Lexicology' के लिए (1) शब्दार्थ विज्ञान; और (2) 'कोशकला' पर्याय बताए गए हैं। इस आधार पर हम 'Lexicography' शब्द का हिंदी पर्याय 'कोशविज्ञान' तथा 'Lexicology' के लिए 'शब्दार्थ विज्ञान' को स्वीकार कर सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में हम इन्हीं पर्यायों को प्रयुक्त करेंगे।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, 'कोशविज्ञान' का संबंधित कोश बनाने के विज्ञान से है। कोशविज्ञान में कोश-निर्माण से संबंधित समस्त सैद्धांतिक जानकारी होती है। कोश निर्माण की कला को विज्ञान माना जाता है क्योंकि कोश तैयार करने की अवधारणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा रखती है। वस्तुतः कोश की रचना प्रक्रिया 'कला' न होकर 'विज्ञान' है। इसलिए इसे 'कोशविज्ञान' की संज्ञा प्रदान की जाती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक 'कोशविज्ञान' में इसकी प्रक्रिया पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि कोशविज्ञान में 'इस बात का सैद्धांतिक विवेचन होता है कि कोश बनाने के लिए सामग्री का संकलन कैसे करें, संकलित सामग्री से किन-किन प्रविष्टियों को चुनें; प्रविष्टियों में किन्हें मुख्य प्रविष्टि मानें तथा अलग दें, तथा किन्हें गौण प्रविष्टि मानकर मुख्य प्रविष्टि के पेटे में अर्थात उसके अंतर्गत (जैसे 'डाक' के अंतर्गत 'डाकखाना', 'डाकघर', या 'कहानी' के अंतर्गत 'कहानीकार'); किस स्तर के कोश में उच्चारण और व्युत्पत्ति दें और किसमें न दें, तथा किनमें दें, कैसे दें; व्याकरणिक सूचना कितनी और किस प्रकार दें; अर्थ देने में कहाँ पर्याय शब्द देकर काम चलाएँ, कहाँ केवल व्याख्या दें तथा कहाँ दोनों की सहायता लें; साथ ही वर्णनात्मक कोश (एककालिक) में तथा ऐतिहासिक कोश में अर्थ या व्याख्या आदि का क्रम क्या रखें, कैसी प्रविष्टियों के साथ चित्र भी दें और कैसा दें तथा कहाँ प्रयोग या उद्धरण आदि दें। इस प्रकार कोश-निर्माण विषयक सारी सैद्धांतिक जानकारी कोश-विज्ञान में होती है।' (पृ. 24)

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोशविज्ञान में शब्द की व्युत्पत्ति, उसका अर्थ, व्याकरणिक सूचना किस प्रकार दें, किस तरह के कोश में किस तरह की प्रविष्टियाँ हों, कहाँ चित्र दिए जाएँ, व्याख्या दें तो कितनी दें, किस तरह के शब्दों का चयन किया जाए आदि का सैद्धांतिक विवेचन होता है। **कोशविज्ञान कोश निर्माण का विज्ञान है जिसका संबंध किसी एक भाषा या कोश से न होकर कोश बनाने की प्रविधि और प्रक्रिया की सैद्धांतिक जानकारी से है।**

कोशविज्ञान को मूलतः अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की एक शाखा स्वीकार किया जाता है। विशेष बात यह है कि भाषाविज्ञान की यह शाखा, भाषाविज्ञान की अन्य सभी शाखाओं से विभिन्न प्रकार की सहायता लेती है।

कोशविज्ञान मूलतः कोश बनाने की कला का सैद्धांतिक विज्ञान है। कोशविज्ञान में दिए गए नियम किसी एक भाषा या प्रकार विशेष तक सीमित नहीं होते अपितु उसमें कोश बनाने की प्रविधि का सैद्धांतिक विवेचन होता है।

कोशविज्ञान के अंतर्गत जिन विषयों का अध्ययन किया जाता है, वे हैं : कोश सामग्री संकलन विज्ञान, प्रविष्टि-चयन विज्ञान, वर्तनी विज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, उच्चारण विज्ञान, शब्द-निर्माण विज्ञान, कोशार्थ विज्ञान आदि। स्पष्ट है कि कोशविज्ञान में एक शब्द से जुड़ा जितने प्रकार का ज्ञान होता है, उस सबका विस्तृत अध्ययन कोशविज्ञान में किया जाता है।

कतिपय विद्वानों ने 'कोशविज्ञान' शब्द के स्थान पर 'कोश कला' शब्द का भी प्रयोग किया है। लेकिन ये दोनों शब्द पर्याय नहीं हैं। 'कोशविज्ञान' में जहाँ कोश निर्माण की प्रविधि का सैद्धांतिक विवेचन होता है, वहीं 'कोश कला' के अंतर्गत कोश निर्माण की प्रविधियों के व्यावहारिक प्रयोग की बात की जाती है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि कोश बनाने की कला को कोश-कला कहते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "कोशविज्ञान द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतों के आधार पर किसी भाषा का कोश बनाना ही कोशकला है।" (कोशविज्ञान, पृ. 25)

1.5.2 कोशविज्ञान का अन्य विषयों से संबंध

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि कोशविज्ञान अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की एक शाखा है। भाषाविज्ञान की एक शाखा होने के कारण कोशविज्ञान भाषाविज्ञान की अनेक शाखाओं की समय-समय पर मदद लेता है। कोशविज्ञान में भाषाविज्ञान की इन विभिन्न शाखाओं के प्रयोग का विस्तृत विवेचन किया जाता है। स्पष्ट है कि कोश-निर्माण में भाषाविज्ञान की ये विभिन्न शाखाएँ – ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, शैली विज्ञान, अर्थ विज्ञान – शब्दों की संपूर्ण व्याख्या में विशेष सहायक होती हैं।

कोश एक अथवा एकाधिक भाषा के शब्दों से संबंधित ज्ञान का व्यापक भंडार है। हमारे जेहन में उठने वाले शब्द को ज्यों ही हम शब्दकोश में खोजते हैं, तो उससे जुड़ी विभिन्न समस्याओं का निवारण वहीं हो जाता है। इस अर्थ में कोश एक साथ हमारे अनेक प्रश्नों के समाधान सुझा देता है। किंतु इन समस्याओं के समाधान जुटाने हेतु कोशकार को असाध्य श्रम करना होता है। कोश एक शब्द से संबंधित विभिन्न सूचनाएँ हमें प्रदान करता है। जैसे भाषाविज्ञान से जुड़ी जानकारी के अतिरिक्त व्याकरण संबंधी जानकारी, भाषा अथवा शब्द की समाजशास्त्रीय जानकारी आदि।

कोश में शब्दों के साथ उसकी व्याकरणिक जानकारी भी दी जाती है जिसके लिए उसमें व्याकरण की मदद ली जाती है। इसी प्रकार साहित्य कोश, इतिहास कोश, साहित्यकार कोश, काल विशेष संबंधी कोश बनाने में केवल शब्द या अर्थ तक के ज्ञान की ही आवश्यकता नहीं होती अपितु उसके लिए साहित्य की व्यापक जानकारी भी जरूरी होती है। इस प्रकार कोश निर्माण में साहित्य, व्याकरण, समाजशास्त्र आदि भी विशेष उपयोगी होते हैं। कोशविज्ञान में इन सभी विषयों की भी चर्चा होती है।

1.6 कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान

अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि 'कोशविज्ञान' का अंग्रेजी पर्याय Lexicography तथा 'शब्दार्थ विज्ञान' का अंग्रेजी पर्याय Lexicology है। कोशविज्ञान मूलतः शब्दार्थ विज्ञान का एक अंग है। इसे 'अनुप्रयुक्त शब्दार्थ विज्ञान' भी कहा जा सकता है।

Lexicology तथा Lexicography दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति ग्रीक शब्द Lexico से हुई है जिसका अर्थ होता है – बोलना, बोलने का तरीका अथवा शब्द। दोनों का संबंध 'शब्द' अथवा 'शाब्दिक इकाई' से है। Lexicology अर्थात 'शब्दार्थ विज्ञान' जहाँ 'शब्दार्थ का विज्ञान' है, वहीं Lexicography अथवा 'कोशविज्ञान' शब्दों के प्रयोग की बात करता है। Lexicology अथवा शब्दार्थ विज्ञान एक विस्तृत विज्ञान है और कोशविज्ञान उसका अंग। शब्दार्थ विज्ञान तथा कोशविज्ञान में आपस में घनिष्ठ संबंध है। लेकिन इस संबंध पर विचार करने से पहले शब्दार्थ विज्ञान के अर्थ और स्वरूप के बारे में चर्चा करना उपयुक्त रहेगा।

1.6.1 शब्दार्थ विज्ञान : अर्थ और स्वरूप

शब्दार्थ विज्ञान में शब्द का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। शब्दार्थ विज्ञान शब्द और अर्थ का विज्ञान है अर्थात उसमें शब्द के रूप और अर्थ का अध्ययन किया जाता है। एक भाषा में शब्दों की संख्या अनगिनत होती है। ये सभी शब्द मिलकर किसी भाषा के शब्द भंडार का निर्माण करते हैं। ये शब्द विभिन्न प्रकार के होते हैं। ऊपरी तौर पर देखने से लग सकता है कि इन शब्दों में आपस में कोई तारतम्य नहीं होता। वे अव्यवस्थित होते हैं तथा उनमें आपस में कोई संबंधित नहीं होता। किंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। डॉ. राम अधार सिंह ने अपनी पुस्तक 'कोशविज्ञान : सिद्धांत एवं प्रयोग' में लिखा है कि 'थोड़ा-सा भी ध्यान देने पर पता चल जाएगा कि भाषा के शब्द विशृंखल नहीं होते। वे आपस में एक व्यवस्थापक रूप में संबंधित होते हैं। प्रत्येक शब्द की अपनी सत्ता होती है, अपना अस्तित्व होता है और इस दृष्टि से वह शब्द एक स्वतंत्र इकाई होता है। यह इकाई अन्य इकाइयों से अलग नहीं होती बल्कि उनके साथ संयुक्त होती है। वह भाषिक व्यवस्था का एक अंग होती है।' (पृ. 1)

शब्द एक स्वतंत्र इकाई होने के बावजूद भाषा का ही एक अंग है इसलिए शब्दार्थ विज्ञान भी शब्द का अध्ययन संबंधी विभिन्न विषयों के साथ रखकर ही करता है। प्रत्येक शब्द का अपना एक खास अर्थ, अपनी विशेष ध्वनि-व्यवस्था तथा अपना एक व्याकरणिक प्रकार्य होता है। इस प्रकार शब्द एक अर्थ-प्रधान, ध्वनि-प्रधान तथा व्याकरणिक इकाई होती है। शब्दार्थ विज्ञान इन विभिन्न संदर्भों में शब्द का अध्ययन करता है। समय और परिस्थिति के अनुसार शब्द एवं उसके अर्थ में परिवर्तन होते रहते हैं। शब्दार्थ विज्ञान किसी भाषा में प्रयुक्त शब्दों का उनकी व्युत्पत्ति, विकास, प्रयोग आदि के आधार पर अध्ययन करता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि भाषा का सीधा संबंध समाज से है। समाज में परिवर्तन के साथ-साथ भाषा में निहित शब्दों के अर्थ में भी परिवर्तन आता है। इसलिए शब्द विज्ञान शब्दार्थ के अध्ययन में भाषा की अन्य इकाइयों के साथ समाज भाषाविज्ञान का भी गहन अध्ययन करता है।

स्पष्ट है कि शब्द चूँकि भाषा का अभिन्न अंग है और भाषा के निर्माण में ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, अर्थ विज्ञान, व्याकरण आदि का अध्ययन किया जाता है इसलिए शब्दार्थ विज्ञान में भी शब्दों के पूर्ण अध्ययन के लिए भाषाविज्ञान की इन विभिन्न शाखाओं का अध्ययन किया जाता है।

1.6.2 कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान में अंतर

कोशविज्ञान मूलतः कोश बनाने का विज्ञान है। शब्दार्थ विज्ञान (Lexicology) जहाँ एक ओर शब्द का विस्तृत अध्ययन करता है वहीं कोशविज्ञान (Lexicography) शब्दों के व्यावहारिक प्रयोग का विज्ञान है।

शब्दार्थ विज्ञान में शब्दों का अध्ययन एक व्यवस्था के अंतर्गत किया जाता है, जबकि कोशविज्ञान में शब्द किसी व्यवस्था का अंग न होकर स्वतंत्र इकाई के रूप में आते हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि शब्दार्थ विज्ञान शब्द के संपूर्ण अध्ययन का सैद्धांतिक विज्ञान है इसलिए यहाँ शब्द का भाषाविज्ञान की विभिन्न इकाइयों के संदर्भ में विस्तृत अध्ययन किया जाता है। वहीं कोशविज्ञान में कोश निर्माण की प्रक्रिया ही केंद्र में होती है, इसलिए कोशकार के चिंतन के केंद्र में शब्द अपने व्यावहारिक संदर्भ में ही आते हैं। और अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह कि शब्दार्थ विज्ञान कोशविज्ञान के विषय में सैद्धांतिकी तक सीमित है। कोशकार शब्दार्थ विज्ञान का विस्तृत ज्ञान रखते हुए भी कोश बनाने के अपने उद्देश्य से बंधा होता है। शब्दार्थ विज्ञान का सारा ज्ञान समेटे होने के बावजूद वह केवल उतने ही ज्ञान का प्रयोग करता है जितना कि एक कोश बनाने के लिए आवश्यक है।

शब्दार्थ विज्ञान में शब्द का अध्ययन वस्तुनिष्ठ होता है और जो पूरी तरह से शब्द तथा अर्थ निर्माण के सिद्धांत पर केंद्रित होता है। शब्दार्थ विज्ञान का ज्ञाता यहाँ पूरी तरह से तटस्थ होता है। वहीं दूसरी ओर कोशकार न चाहते हुए बहुत कुछ ऐसी जानकारी कोश में डालता है जो उसके निजी ज्ञान के दायरे में आती है।

स्पष्ट है कि कोशकार का काम पूरी तरह सैद्धांतिक न होकर व्यवहार-केंद्रित होता है। शब्दार्थ विज्ञान सिद्धांत-केंद्रित होता है और कोशविज्ञान इन्हीं सिद्धांतों के व्यावहारिक प्रयोग की बात करता है। इसी प्रक्रिया में कोशकार की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है और उसकी अपनी जानकारी तथा राय का भी महत्त्व हो जाता है।

स्पष्ट है कि शब्दार्थ विज्ञान जहाँ शब्द का व्यापक सैद्धांतिक ज्ञान है वहीं कोशविज्ञान शब्दार्थ विज्ञान द्वारा किए गए कार्य का व्यवहार पक्ष है।

कोशविज्ञान के संबंध में और अधिक जानकारी के लिए आप कुछ प्रमुख कोशों और विशेष तौर पर उनकी भूमिकाओं आदि को देख सकते हैं। कोश देखकर ही कोशकार के कार्य और कोशविज्ञान को और अधिक बेहतर समझा जा सकता हैं।

1.7 कोशविज्ञान और अनुवाद में अंतर्संबंध

इस इकाई के पिछले भाग में हमने शब्दार्थ विज्ञान एवं कोशविज्ञान की अवधारणा को विस्तार से समझा। साथ ही हमने यह भी जाना कि शब्दार्थ विज्ञान और कोशविज्ञान में क्या अंतर है। इकाई के इस भाग में हम कोशविज्ञान और अनुवाद पर विचार करते हुए अनुवाद में कोशविज्ञान की भूमिका पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

जैसा कि हम इस इकाई में पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि कोशविज्ञान कोश निर्माण का विज्ञान है। कोशकार कोश निर्माण में एक बेहद जटिल प्रक्रिया से गुजरता है। कोश निर्माण और अनुवाद दोनों एक-दूसरे पर निर्भर क्रियाएँ हैं। एक सफल कोशकार के लिए आवश्यक है कि वह एक अच्छा अनुवादक भी हो। दूसरे शब्दों में कहें तो कोशकार के लिए उन भाषाओं का विस्तृत ज्ञान आवश्यक है जिन भाषाओं में वह कोश निर्माण कर रहा है। आप जानते हैं कि कोश एकभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी होते हैं। ऐसी स्थिति में कोशकार के लिए आवश्यक है कि उसे उन सभी भाषाओं का विस्तृत ज्ञान हो। और यह ज्ञान सिर्फ भाषाई स्तर का नहीं अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक भी होना चाहिए। हालाँकि एकभाषी कोश में कोशकार को ऐसी समस्याओं का कम सामना करना पड़ता है, किंतु द्विभाषी या बहुभाषी कोश में यह काफी जटिल समस्या होती है। इसीलिए हम देखते हैं कि कोश निर्माण के कार्य में अधिकांशतः एक से अधिक व्यक्ति सम्मिलित होते हैं।

कोश के निर्माण के पीछे सबसे बड़ा कारण अर्थ ग्रहण की कठिनाई को दूर करना है। साधारण पाठक अथवा अनुवादक सही अर्थ ढूँढने के लिए कोश की मदद लेते हैं। ऐसी स्थिति में कोशकार की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। अच्छे अनुवादक के लिए आवश्यक महत्त्वपूर्ण कारकों में से सटीक या कहें कि समतुल्य अर्थ की प्राप्ति भी एक कारक है। कोई भाषा अपने भीतर अनेक अर्थों को संजोए होती है। अच्छा अनुवादक या अच्छा पाठक ही उस सही अर्थ तक पहुँच सकता है और उस अर्थ छवि तक पहुँचने में कोश हमारी मदद करता है। इस तरह कोशविज्ञान और अनुवाद एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

कोशविज्ञान और अनुवाद में एक अन्य महत्त्वपूर्ण समानता यह है कि ये दोनों ही अनुशासन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से भाषाविज्ञान की शाखाएँ हैं। जिस प्रकार भाषाविज्ञान भाषा की प्रत्येक इकाई का विस्तृत एवं गहन अध्ययन करता है, उसी तरह कोशविज्ञान में भाषाविज्ञान की प्रत्येक इकाई पर गहन चिंतन किया जाता है। अनुवादक भी अनुवाद करते समय भाषा की अनेक समस्याओं से जूझता है। किंतु भाषाविज्ञान की ये दोनों ही शाखाएँ भाषाविज्ञान का अंग होते हुए भी पूर्णतः सैद्धांतिक नहीं हैं। इस कथन का तात्पर्य यह है कि ये दोनों ही अनुशासन क्रमशः कोशकार और अनुवादक को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। भाषाविज्ञान की तुलना में ये दोनों अनुशासन अधिक व्यावहारिक हैं, जहाँ कोशकार एवं अनुवादक के निजी ज्ञान एवं अनुभव क्षेत्र का भी महत्त्व है।

कोशविज्ञान और अनुवाद एक-दूसरे के पूरक हैं, क्योंकि कोशविज्ञान और अनुवाद, निर्माण प्रक्रिया में एक-दूसरे की मदद करते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक अनुवादक अनुवाद कार्य करते समय बार-बार कोश की मदद लेता

है। कोश की मदद से ही वह लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा का समतुल्य शब्द खोजता है। कई बार शब्दकोशों की सहायता से अर्थ तो मिल जाता है, परंतु विशेष संदर्भ में समतुल्य शब्द नहीं मिल पाता। ऐसी स्थिति में अनुवादक अपने निजी अनुभवों की सहायता से समतुल्य की तलाश करता है। कोश में दिए गए शब्दों के ये नए समतुल्य भविष्य में उस शब्द के समतुल्यों की सूची में कोश में शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार ये दोनों ही प्रक्रियाएँ एक-दूसरे को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

अनुवाद को लेकर हमेशा से यह प्रश्न उठता रहा है कि अनुवाद कला है, शिल्प है या विज्ञान। कोशविज्ञान को यदि अनुवाद के एक जरूरी अंग के रूप में देखें तो अनुवाद में विज्ञान की भी अहम भूमिका है। कोश निर्माण पूरी तरह एक विज्ञान है जिसमें सामग्री संकलन, प्रविष्टि चयन, प्रविष्टियों की व्यवस्था पूरा एक विज्ञान है।

संक्षेप में यह कहना गलत नहीं होगा कि, कोशविज्ञान और अनुवाद के बीच गहरा संबंध है। कोशविज्ञान और अनुवाद जैसे विषयों को एक साथ रखकर, उस पर और अधिक गहन कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

1.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में हमने कोश की अवधारणा और कोशविज्ञान के विषय में विस्तार से अध्ययन किया। कोश का अर्थ स्पष्ट करने की प्रक्रिया में कोशों की आवश्यकता और महत्त्व, शब्दकोश और शब्द-संग्रह के बीच अंतर पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा, कोशविज्ञान, शब्दार्थ विज्ञान तथा कोशविज्ञान और अनुवाद पर विस्तार से चर्चा की। हम आशा करते हैं कि इस इकाई के अध्ययन से आपको कोश संबंधी आधारभूत जानकारी का बोध हो गया होगा। कोशों की आवश्यकता और महत्त्व पर विचार करते समय आपको यह तो पता चल ही गया है कि कोश कई प्रकार के हो सकते हैं, जिनका पाठक, लेखक और अनुवादक के लिए विशेष महत्त्व होता है। 'कोशों के प्रकार' एक ऐसा विषय है जिस पर विस्तार से चर्चा अपेक्षित है। इसलिए इस पाठ्यक्रम की अगली इकाई में कोशों के प्रकार के विषय में गहन जानकारी दी जाएगी और साथ ही आपको हिंदी कोश निर्माण परंपरा से भी परिचित कराया जाएगा।

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. कोश से आप क्या समझते हैं? 'कोश' और 'कोष' में अंतर स्पष्ट करते हुए कोश की आवश्यकता और महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. कोशविज्ञान का अर्थ और स्वरूप स्पष्ट करते हुए कोशविज्ञान का अन्य विज्ञानों से संबंध स्पष्ट कीजिए।
3. शब्दार्थ विज्ञान से आप क्या समझते हैं और कोशविज्ञान से इसकी भिन्नता पर प्रकाश डालिए।
4. कोशविज्ञान और अनुवाद में अंतर्संबंध पर एक निबंध लिखिए।

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, भोलानाथ, 1987. *कोशविज्ञान,* दिल्ली, शब्दकार।
- सिंह, राम आधार, 1990. *कोशविज्ञान : सिद्धांत एवं प्रयोग,* मद्रास, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा।
- कत्रे, सुमित्र मंगेश (अनु. शर्मा, सरोजिनी), 1980. *कोश विज्ञान,* आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।
- कुमार, सतीश (संपा.), 1983. *कोश विज्ञान : सिद्धांत एवं मूल्यांकन,* आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।

पत्रिकाएँ

- 'गवेषणा' (भारत में कोश विज्ञान पर विशेष). अंक 93, जनवरी-मार्च 2009. आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।
- 'अनुवाद' (कोश विशेषांक), अंक 94-95, जनवरी-जून 1998. नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।

इकाई 2 कोशों के प्रकार और परंपरा

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 कोशों का वर्गीकरण : प्रमुख आधार
- 2.2.1 उद्देश्य के आधार पर
- 2.2.2 भाषा के आधार पर
- 2.2.3 प्रविष्टि के आधार पर
- 2.2.4 काल के आधार पर
- 2.2.5 अर्थ के आधार पर
- 2.2.6 प्रविष्टि-क्रम के आधार पर
- 2.2.7 विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर
- 2.2.8 उपयोग के आधार पर

2.3 उद्देश्य के आधार पर कोशों के प्रकार
- 2.3.1 व्युत्पत्ति कोश
- 2.3.2 उच्चारण कोश
- 2.3.3 पर्याय कोश
- 2.3.4 विलोम कोश
- 2.3.5 अन्य कोश

2.4 भाषा के आधार पर कोशों के प्रकार
- 2.4.1 एकभाषी कोश
- 2.4.2 द्विभाषी कोश
- 2.4.3 बहुभाषी कोश
- 2.4.4 उपभाषा कोश (बोली कोश)
- 2.4.5 अपभाषा कोश

2.5 प्रविष्टि के आधार पर कोशों के प्रकार
- 2.5.1 उद्धरण कोश अथवा सूक्ति कोश
- 2.5.2 लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश

2.6 काल के आधार पर कोशों के प्रकार
- 2.6.1 एककालिक कोश
- 2.6.2 ऐतिहासिक कोश

2.7 अर्थ के आधार पर कोशों के प्रकार

2.8 विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर कोशों के प्रकार
- 2.8.1 परिभाषा कोश अथवा पारिभाषिक कोश
- 2.8.2 समांतर कोश
- 2.8.3 व्यक्ति तथा कृति कोश
- 2.8.4 पुराण एवं मिथक कोश
- 2.8.5 विश्वकोश

2.9 उपयोग के आधार पर कोशों के प्रकार
- 2.9.1 मुद्रित कोश
- 2.9.2 कंप्यूटर कोश
- 2.9.3 ऑनलाइन कोश

2.10 कोश-निर्माण परंपरा
- 2.10.1 संस्कृत कोश-निर्माण परंपरा
- 2.10.2 पालि, प्राकृत, अपभ्रंश में कोश-निर्माण परंपरा
- 2.10.3 हिंदी कोश-निर्माण परंपरा

2.11 सारांश

2.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कोशों के वर्गीकरण के प्रमुख आधारों को समझ सकेंगे;
- कोशों के वर्गीकरणों के आधार पर कोशों के विभिन्न प्रकारों के बारे में जान सकेंगे एवं उनका परिचय प्राप्त कर सकेंगे; और
- कोश निर्माण परंपरा से परिचित हो सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

'कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद' संबंधी इस पाठ्यक्रम की पहली इकाई में आप कोश और कोशविज्ञान की अवधारणा और उनकी उपादेयता के संबंध में जानकारी हासिल कर चुके हैं। इसे पढ़ने के बाद आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि कोश किसे कहते हैं और कोशविज्ञान क्या है। इकाई में हमने यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि 'शब्द-संग्रह और शब्दकोश' तथा 'कोशविज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान' में क्या अंतर है। आप यह भी समझ चुके हैं कि कोशों की आवश्यकता क्यों पड़ती हैं और उनका महत्त्व क्या है। इस इकाई के अंत में हमने कोशविज्ञान और अनुवाद के संबंध पर प्रकाश डाला है।

इस इकाई को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित माना जा सकता है। इनमें से एक कोशों के प्रकार से संबंधित है और दूसरा कोश निर्माण परंपरा से। सर्वप्रथम हम प्रथम भाग पर विचार करते हैं। कोश और कोशविज्ञान के संबंध में आधारभूत जानकारी हासिल करने के बाद आपके मन में यह विचार उठ रहा होगा कि कोश तो कई प्रकार के होते हैं, उन सभी के बारे में अनुवाद से जुड़े लोगों को आधारभूत समझ कैसे विकसित हो सकेगी। कोशों के विभिन्न प्रकारों के बारे में व्यवस्थित तरीके से जानने के लिए उन्हें वर्गीकृत करके देखना उपयुक्त रहता है। लेकिन इसके लिए कोई आधार-दृष्टि अपनानी होगी। इसलिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि कोशों के वर्गीकरण के प्रमुख आधार कौन-कौन से हैं। हम कोशों को उद्देश्य, प्रविष्टि, काल, विशिष्ट दृष्टिकोण आदि के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं। इन्हीं प्रमुख आधारों पर कोशों के विभिन्न प्रकारों के बारे में जाना जा सकता है।

इकाई का दूसरा भाग कोश निर्माण परंपरा पर केंद्रित है। यानी इसमें हम कोशों के निर्माण के ऐतिहासिक विकासक्रम को केंद्र में रख रहे हैं। वैसे, तो कोश निर्माण की परंपरा को भाषावार आधार पर अवलोकित किया जा सकता है, किंतु प्रस्तुत इकाई में हम स्वयं को हिंदी कोश निर्माण तक ही सीमित कर रहे हैं।

2.2 कोशों का वर्गीकरण : प्रमुख आधार

कोश मुख्य रूप से संदर्भ ग्रंथ होते हैं जिनमें आवश्यकता के अनुसार भाषा-विशेष के शब्दों का अर्थ, उच्चारण, व्याकरणिक कोटि, व्युत्पत्ति, प्रयोग, पर्याय आदि की जानकारी दी जाती है। अपनी प्रविष्टियों के अनुसार कुछ कोशों में इनकी पूर्ण जानकारी दी जाती है और कुछ में कम। वस्तुतः कोश एक ऐसा संग्रहालय है जो शब्द एवं उसके विविध प्रयोगों का पारंपरिक तथा आधुनिक, दोनों रूप अभिव्यंजित करता है। इस दृष्टि से कोशों के रूप काफी विकसित एवं व्यापक हैं।

कोशों के इतने विकसित एवं व्यापक रूपों के कारण इस पूरी अवधारणा को समझने के लिए विविध वर्ग बनाने जरूरी हैं। वस्तुतः वर्गीकरण का आधार वह मूल तत्व है जो कोश की दृष्टि को स्पष्ट करता है। इस दृष्टि को जानने के पश्चात अध्येयता अथवा अनुवादक अपने लक्ष्य तक सरलतापूर्वक पहुँच सकता है कि उसे अमुक शब्द के अर्थ, व्युत्पत्ति अथवा इतिहास के लिए कौन-सा कोश देखना उपयुक्त रहेगा। इसके अलावा, कोशों के वर्गीकरण की वजह यह भी है कि कोश निर्माण की सारी प्रक्रिया कोश के प्रकार पर ही आधारित है। (कोश निर्माण की प्रक्रिया के बारे में इस एम.टी.टी-017 पाठ्यक्रम के खंड 2 की इकाई 4 में आप विस्तार से अध्ययन करेंगे।) इसलिए अध्येता एवं कोशकार, दोनों की दृष्टि से कोश वर्गीकरण के आधार का अपना विशिष्ट महत्त्व है।

कोश वर्गीकरण से संबंधित आधारों के कई पक्ष देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए हम उद्देश्य के आधार पर कोशों को वर्गीकृत कर सकते हैं, भाषा के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं, काल के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं और विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं। इस संदर्भ में डॉ.भोलानाथ तिवारी ने पहल करते हुए कोशों के प्रकार के उपर्युक्त आधारों की चर्चा की और उन्हें ध्यान में रखकर ही कोशों के विविध प्रकार निर्धारित किए। कोशों के वर्गीकरण और उनके प्रकारों पर विचार करते समय अन्य विद्वानों ने अप्रत्यक्ष रूप से डॉ. तिवारी के आधारों को ही ध्यान में रखा है।

आइएं हम कुछ प्रमुख आधारों पर विचार करें।

2.2.1 उद्देश्य के आधार पर

जैसा कि आप जानते ही हैं कि मानव-जीवन में होने वाले प्रत्येक कर्म के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अथवा प्रयोजन अवश्य निहित रहता है। कहा तो यह भी गया है कि बौद्धिक संतुलन खोने वाला या पागल व्यक्ति का कार्य भी निरुद्देश्य नहीं होता। तब भला कोश सरीखा श्रम-प्रधान, बौद्धिक एवं व्यवस्थित कार्य बिना प्रयोजन के कैसे हो सकता है?

कोश, निर्माण की एक संपूर्ण प्रक्रिया होती है जिसमें माँग अथवा आवश्यकता के अनुसार सामग्री संकलित कर प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है। कोश निर्माण-कर्म के दौरान व्यक्ति एक क्षण के लिए भी अपने उद्देश्य को विस्मृत नहीं करता। इसलिए कोश निर्माता के उद्देश्य के आधार पर कोशों में विभिन्नता देखने को मिलती है।

कोश-विशेष का प्रयोजन शब्द-विशेष का अर्थ, प्रतिशब्द, पर्याय, विलोम, वाक्य-प्रयोग, व्युत्पत्ति, विवेचन, उच्चारण आदि देना हो सकता है। कोशकार कभी तो अपनी तुलनात्मक दृष्टि को ध्यान में रखकर कोश का संपादन करता है तो कभी मात्र शब्दार्थ के लिए कोश-निर्माण किया जाता है। कोश का प्रयोजन मात्र सामाजिक सामाजिक सरोकार हो सकता है तो कई बार व्याकरणिक विशेषताओं को देने के लिए ही कोश-निर्माण किया जाता है। वहीं कुछ कोश ऐसे भी हैं जो उपर्युक्त में से किसी एक उद्देश्य को आधार बनाकर तो किसी में अर्थ, व्याकरणिक, उच्चारण, प्रयोग आदि एक-साथ देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'हिंदी शब्द सागर' ऐसा ही श्रेष्ठ कोश है जो अपार सामग्री के कारण बहुचर्चित रहा। इसलिए उद्देश्य के आधार पर कोश के शब्दकोश, पर्यायकोश, विलोम कोश, व्युत्पत्ति कोश, उच्चारण कोश, बोली कोश, पुस्तक कोश, उपसर्ग कोश, तुलनात्मक कोश, प्रत्यय कोश, प्रयोग कोश आदि कई रूप देखे जा सकते हैं।

2.2.2 भाषा के आधार पर

कोशों को भाषा के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। इस पर विचार करने के पहले हम आपको यह याद दिलाना चाहते हैं कि भाषा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की ऐसी व्यवस्था है जिससे किसी समुदाय विशेष के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। हर भाषा का अपना पृथक अस्तित्व होता है और उसकी अपनी विशिष्ट व्यवस्था होती है। यही भाषिक व्यवस्था ही भाषा को जीवित बनाए रखती है। भाषा की इस व्यवस्था को उसके व्याकरण के अनुशासन में बंधकर एक आकार मिलता है। भाषा को वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान का मूल आधार माना गया है। इसी के माध्यम से समस्त अनुशासनों को एक स्थिरता मिलती है।

कोश के संदर्भ में भी भाषा का विशेष स्थान माना गया है। भाषा को ध्यान में रखते हुए कोशों का निर्माण किया जा सकता है। कुछ कोश एक भाषा में रचित होते हैं तो कुछ कोशों में दो अथवा दो से अधिक अर्थात अनेक भाषाओं के शब्द संकलित रहते हैं। इस तरह, भाषा के आधार पर कोश एकभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी हो सकते हैं। एकभाषी कोश सामान्य से लेकर उद्देश्यपरक, दोनों प्रकार का हो सकता है, जबकि बहुभाषी कोशों का मुख्य लक्ष्य अर्थ के स्थान पर दूसरी भाषा में उसका प्रतिशब्द देना मात्र होता है।

यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि भाषा के आधार पर कोश केवल एकभाषी, द्विभाषी अथवा बहुभाषी ही नहीं होते हैं। इसका कारण यह है कि भाषा के हमें अनेक रूप देखने को मिलते हैं। भाषा सर्वप्रथम 'बोली रूप' में होती है। तत्पश्चात वह 'उपभाषा' से होती है और फिर 'भाषा' का रूप धारण करती है। बोली और उपभाषा रूप में भाषा के अंतर्गत प्रादेशिकता का रूप शामिल रहता है। इसके अलावा, कई बार भाषा का अपरिष्कृत रूप भी देखने को मिलता है, जिसे 'अपभाषा' की संज्ञा दी जाती है। भाषा के इन विविध रूपों के आधार पर कोशों

को जिन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, वे हैं : (1) एकभाषी कोश, (2) द्विभाषी कोश, (3) बहुभाषी कोश, (4) बोली अथवा उपभाषा कोश; और (5) अपभाषा कोश। कोशों के इन विभिन्न वर्गों के बारे में हम आगे भाग 2.4 में विचार करेंगे।

2.2.3 प्रविष्टि के आधार पर

आप जानते ही हैं कि कोश निर्माण और कोश प्रयोग में प्रविष्टि का सबसे अधिक महत्त्व है। प्रविष्टि का अर्थ है – भाषिक इकाई प्रविष्टि वह भाषिक इकाई है जिससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए कोश का उपयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि किसी शब्द-विशेष के संबंध में जो विशिष्ट जानकारी कोश में विद्यमान रहती है उसे 'प्रविष्टि' कहा जाता है। उदाहरण के लिए, कोश में आवश्यकता के अनुसार शब्दार्थ, व्याकरणिक कोटि, अलंकार, सूक्ति, उद्धरण, लोकोक्तियाँ-मुहावरे आदि की जानकारी दी जाती है।

अनुवाद करते समय स्रोत भाषा में अनेक शब्द, लोकोक्तियाँ-मुहावरे, सूक्तियाँ आदि ऐसे आते हैं जिनसे आप परिचित नहीं होते। इन भाषिक इकाइयों में स्रोत भाषा विशेष की मान्यताएँ, उनके रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि की गहन अंतर्दृष्टि गूँथी हुई होती है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि इनमें विशिष्ट लोकानुभव और व्यक्तिगत अनुभवजन्य प्रकाश विद्यमान रहता है। इसलिए जानकारी को उपलब्ध कराने के लिए विशिष्ट कोशों को उपयोग में लाया जाता है। इन विशिष्ट कोशों का अध्ययन प्रविष्टि के आधार पर कोश-प्रकार के अंतर्गत किया जा सकता है। कुछ कोश सामान्य जानकारी (जैसे शब्दार्थ, व्युत्पत्ति, प्रयोग आदि) उपलब्ध कराते हैं। कुछ केवल उद्धरणों या सूक्ति का संकलन हो सकते हैं तो कुछ कोश लोकोक्ति-मुहावरे उपलब्ध कराने के लिए ही संपादित किए जाते हैं। प्रविष्टि के इन्हीं रूपों के कारण संकलित सामग्री को ध्यान में रखकर प्रविष्टि के आधार पर कोशों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। ये हैं – (1) शब्दकोश (2) उद्धरण कोश अथवा सूक्ति कोश; और (3) लोकोक्ति-मुहावरा कोश। कोशों के इन विभिन्न वर्गों के बारे में इस इकाई के भाग 2.5 में विचार किया जा रहा है।

2.2.4 काल के आधार पर

'काल' का सामान्य अर्थ है – 'समय'। 'काल' युग विशेष का भी सूचक है। युग-विशेष या समय परिवर्तनशील है। अनेक विचार एवं मनोवृत्तियाँ समय-समय पर अपने वैभिन्य रूप में प्रस्तुत होते रहते हैं। विचारों के अनुरूप ही भाषा भी परिवर्तित अथवा यह कहा जा सकता है कि संवर्धित होती रहती है। हर युग की भाषा उसकी शब्द संपदा, उसमें प्रयुक्त दार्शनिक-पारिभाषिक शब्दावली परिवर्तित होती रहती है। ऐसे में जब समय, युग या काल विशेष को ध्यान में रखकर कोशों की रचना की जाती है तो उन्हें 'काल सापेक्ष कोश' कहा जाता है।

समय-समय पर कई युग-सापेक्ष कोशों का संपादन किया गया है जिनमें उस युग-विशेष के शब्द एवं उनसे जुड़ी सामग्री संकलित की हुई होती है। ऐसे कोशों में केवल शब्दार्थ ही नहीं, व्युत्पत्ति एवं उच्चारण संबंधी विशिष्टताओं को भी वर्णित किया जाता है।

काल की दृष्टि से कोशों के सामान्यतः दो रूप देखने को मिलते हैं – (1) एककालिक कोश; तथा (2) कालक्रमिक या ऐतिहासिक कोश। जो कोश किसी एक युग, विचारधारा या काल-विशेष को ध्यान में रखकर संपादित किए जाते हैं वे एककालिक कोश कहलाते हैं। जबकि अनेक युगों में प्रचलित शब्दों का संकलन कर उनके अर्थ, पर्याय, व्युत्पत्ति आदि की जानकारी देने वाले कोश कालक्रमिक या ऐतिहासिक कोश कहलाते हैं। ऐसे कोशों द्वारा शब्दों के विकासात्मक स्वरूप या बदलते स्वरूपों-संदर्भों को जाना-परखा जा सकता है।

2.2.5 अर्थ के आधार पर

शब्द का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व अर्थ है। अर्थ के बिना शब्द प्राणहीन है। अर्थ विविध संदर्भों में प्रयोग, परिस्थिति तथा परिवेश से जन्म लेता है। शब्द को ईश्वर के तुल्य स्वीकार कर विद्वानों ने यदि उसे भाषा का शरीर कहा है तो शब्द में निहित अर्थ को भाषा-शरीर की आत्मा कहा है। अर्थ के बिना शब्द निरर्थक एवं व्यर्थ है यानी उसका कोई उपयोग नहीं। कोश के संदर्भ में तो अर्थ की विशिष्ट महत्ता मानी गई है। वास्तव में कोश-निर्माण एवं कोश-संपादन का दायित्व अर्थ द्वारा ही पूर्ण होता है।

अर्थ के आधार पर कोश के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद देखा जा सकता है। विद्वानों का एक वर्ग अर्थ के आधार पर कोश के पाँच भेद मानता है – बोधोन्मुख कोश, परिभाषोन्मुख कोश, अनुवादोन्मुख कोश, प्रयोगोन्मुख कोश; और परिचयोन्मुख कोश।

'बोधोन्मुख कोश' ऐसे कोशों को कहते हैं जो कि शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उनके समानार्थक शब्द या पर्याय, व्याख्या और उसके सविस्तार वर्णन को महत्त्व देते हैं। एनसाइक्लोपीडिया मुख्यतः इसी श्रेणी में आते हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. धर्मपाल मैनी द्वारा 2009 में संपादित और छह भागों में प्रकाशित 'मानव मूल्य व्याख्या कोश' एक बोधोन्मुख कोश ही है जिसमें मानव मूल्यों के कोशगत या सामान्य अर्थ के साथ-साथ उसकी व्याख्या सविस्तार की गई है।

'प्रयोगोन्मुख कोश' के अंतर्गत विविध शब्दों की व्याख्या करके उनकी परिभाषा दी जाती है। उदाहरण के लिए राजेंद्र द्विवेदी द्वारा संपादित 'साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश' एक प्रयोगोन्मुख कोश है जिसमें काव्यशास्त्र एवं आलोचना से संबंधित शब्दों की व्याख्या-परिभाषा दी गई है।

तीसरा रूप, 'अनुवादोन्मुख' कोश के रूप में मिलता है। अनुवादोन्मुख कोश द्विभाषी या बहुभाषी कोश होते हैं, जिनमें एक शब्द के दूसरी भाषा में प्रतिशब्द दिए जाते हैं। ऐसे कोश अनुवाद को ध्यान में रखकर संपादित किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, फादर कामिल बुल्के द्वारा रचित 'अँगरेजी-हिंदी कोश' अनुवादोन्मुख कोश है जो अंग्रेजी के शब्दों का हिंदी प्रतिरूप और प्रयोग बहुलता को प्रकट करता है।

'प्रयोगोन्मुख कोश' विशिष्ट प्रकार के कोश होते हैं जिनमें कोशकार प्रत्येक प्रविष्टि के प्रयोग से संबंधित पूरी सूचना देता है। ऐसे कोशों में शब्दों के आवश्यकता के अनुसार मानक, क्षेत्रीय, शैलीय, ग्राम्य, अश्लील, अप्रयुक्त, प्राचीन, वैज्ञानिक दार्शनिक रूप या अर्थ देखने को मिलते हैं। अधिकांश एकभाषी कोश वस्तुतः प्रयोगोन्मुख कोश होते हैं। उदाहरण के लिए, रामचंद्र तिवारी द्वारा संपादित 'प्रामाणिक हिंदी कोश' प्रयोगोन्मुख कोश के अंतर्गत माना जा सकता है।

'परिचयोन्मुख कोश' से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिनमें कोशकार अपनी प्रविष्टि एवं उद्देश्य के अनुरूप ऐतिहासिक, भौगोलिक, पौराणिक तथा साहित्यिक परिचय देता चलता है। धीरेंद्र वर्मा द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य कोश' को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है क्योंकि इसमें हिंदी साहित्य की विविध रचनाओं-कवियों तथा विविध विचारधाराओं का पूरा परिचय दिया गया है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी कोशों की व्याख्या करते हुए उपर्युक्त समस्त कोश-प्रकारों को उद्देश्य तथा विशिष्ट दृष्टिकोण के अंतर्गत व्याख्यायित करते हैं। डॉ. तिवारी तथा अन्य कुछ विद्वान अर्थ के अंतर्गत समानार्थी, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी रूपों का वर्णन करते हैं। इस आधार प्र कोश के चार रूप प्राप्त होते हैं – सामानार्थी कोश, विलोमार्थी कोश, एकार्थी कोश; तथा अनेकार्थी कोश।

'समानार्थी कोश' ऐसे कोशों को कहा जाता है जिनमें एक शब्द के समान अर्थ देने वाले शब्दों को रखा जाता है। इन्हें 'पर्यायवाची कोश' भी कहा जाता है।

'विलोमार्थी कोश' में शब्द विशेष के विपरीत या विलोम अर्थ संकलित किए जाते हैं। इनकी गणना 'विलोम कोश' के अंतर्गत होती है।

'एकार्थी कोश' से अभिप्राय ऐसे कोश से है जिसमें संकलित शब्दों का उसी भाषा में एक ही अर्थ दिया जाता है। ऐसे कोशों की रचना न के बराबर हुई है।

'अनेकार्थी कोशों' से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिसमें किसी भाषा विशेष के शब्दों का उसी भाषा में विविध अर्थों सहित संकलन किया जाता है। ये कोश, शब्दों के अनेक अर्थों को उद्घाटित करने वाले एकभाषी कोश हैं। आजकल सामान्यतः ऐसे ही एकभाषी कोशों की रचना हो रही है।

2.2.6 प्रविष्टि-क्रम के आधार पर

कोशविज्ञान में प्रविष्टि का सर्वाधिक महत्त्व होता है। कोश का स्वरूप एवं उद्देश्य प्रविष्टि ही निर्धारित करती है। प्रविष्टि मूलभूत सामग्री से युक्त वह भाषिक इकाई है जिसे कोश में शामिल किया जाता है। प्रविष्टि में निहित जानकारी के संबंध में जानने के लिए ही प्रायः कोश का उपयोग किया जाता है। कोश में दी जाने वाली सामग्री ही मूल रूप से कोश की प्रविष्टि है। कोशकार अपनी प्रविष्टि के प्रति बहुत भावुक होता है। विद्वानों ने कोशविज्ञान पर जब विचार किया तो उन्होंने पाया कि कोशों में प्रविष्टि क्रम के आधार पर भी भेदता देखने को मिलती है। यदि कोश का उपयोग करने वाले को इस क्रम की पूरी एवं सटीक जानकारी न हो तो वह कोश का पूर्ण उपयोग

नहीं कर सकेगा। विविध कोशों में कोशकार प्रविष्टि का क्रम अपने उद्देश्य एवं रुचि के अनुसार निर्धारित करता है। प्रविष्टि-क्रम की दृष्टि से कोश के आदिवर्णानुक्रमानुसारी कोश, अक्षरसंख्यानुसारी कोश, अंत्य वर्णानुक्रमानुसारी कोश, धातुक्रमानुसारी कोश, विषयानुसारी कोश आदि विविध रूप देखे जा सकते हैं।

'आदिवर्णानुक्रमानुसारी कोश' से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिसमें शब्दों का वर्णमाला के अनुसार संकलन किया जाता है। आजकल जितने भी एकभाषी-द्विभाषी कोश तैयार किए जा रहे हैं उनमें इसी परंपरा का पालन किया जाता है। यह परंपरा संस्कृत काल से ही प्रारंभ हो गई थी और इसका अनुपालन आज अधिकांश कोशों में किया जाता है।

'अक्षरसंख्यानुसारी कोश' से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिसमें शब्दों का संकलन अक्षर की मात्र या संख्या के क्रम में किया जाता है। चीनी भाषा आक्षरिक व्यवस्था की भाषा है, जहाँ अक्षर का सर्वाधिक महत्त्व रहता है। यही कारण है कि चीनी भाषा में कोश निर्माण अक्षरसंख्यानुसारी किया जाता है। चीनी भाषा से प्रेरित होकर संस्कृत में भी एकाध अक्षरसंख्यानुसारी कोशों का निर्माण हुआ है जिसमें मात्रा के आधार पर शब्दों का संकलन किया गया है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक 'कोशविज्ञान' में कोश-प्रकार की चर्चा करते हुए बताया है कि उर्दू एवं संस्कृत के कुछ विशिष्ट कोशों में अंतिम वर्ण से संबंधित शब्दों का संकलन कर कोश बनाए गए हैं। ऐसे विशिष्ट कोशों को 'अंत्यकवर्णानुक्रमानुसारी कोश' कहा जाता है। किंतु इस प्रकार के कोशों की संख्या नगण्य ही है।

संस्कृत के शब्दों का विकास धातुओं से ही हुआ है तथा एक-एक धातु से अनेक शब्द बने हैं। यही कारण है कि संस्कृत भाषा में धातुओं का विशेष स्थान रहा है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर संस्कृत कोशों (विशेषकर वैदिक शब्दों से संबंधित विविध कोशों) में धातु क्रम को ध्यान में रखकर शब्दों का संकलन-व्याख्या की गई है। ऐसे कोशों को 'धातुक्रमानुसारी कोश' कहते हैं। इन कोशों में हर धातु से बनने वाले शब्द और उसके अर्थ को उस धातु के ही दायरे में रखा जाता है।

'विषयानुक्रमानुसारी कोश' विशिष्ट प्रकार के कोश है जिनमें वर्णक्रम के स्थान पर विषय का ध्यान रखा जाता है। ऐसे कोशों में शब्दों का संकलन विषय के अनुसार किया जाता है और उसकी जानकारी उस विषय के अनुरूप दी जाती है। एनसाइक्लोपीडिया अथवा विश्वकोश इसी प्रकार के कोश हैं जिनमें विषय को क्रम में रखा जाता है। ऐसे विशिष्ट कोशों में अलग-अलग विषयों के शब्द अलग-अलग करके षिषय-क्रम के अनुसार रखे जाते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रविष्टि क्रम को आधार बनाकर निर्मित कोशों के भी विविध रूप सामने आते हैं, जिनसे पाठक वर्ग को विविध जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

2.2.7 विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर

कोशकार विशिष्ट पद्धति, रीति अथवा दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर भी कोश लेखन कार्य करता है। उदाहरण के लिए, कोशकार शब्द-संकलन को केंद्र में रखकर भी कोश का निर्माण कर सकता है और पारिभाषिक शब्दावली का भी संकलन कर सकता है। इसी तरह से भाषाविज्ञान को केंद्र में रखकर भी कोश निर्माण किया जा सकता है और कवि, साहित्य और सृजनात्मक लेखन को ध्यान में रखकर भी। कहने का अभिप्राय यह है कि विशेष प्रकार की दृष्टि के आधार पर अथवा विशिष्ट दृष्टिकोण द्वारा कई प्रकार के कोशों का निर्माण होता रहा है। इन प्रमुख कोशों के अंतर्गत शब्द-संकलन अथवा प्रविष्टि का चयन कोशकार अपने लक्ष्य या दृष्टि को केंद्र में रखकर ही करता है।

सामान्य कोश में आम तौर पर प्रचलित शब्दों का संकलन किया जाता है, जबकि पारिभाषिक अथवा तकनीकी कोश में विषय या क्षेत्र से संबंधित शब्दों-प्रविष्टियों का ही संकलन-संपादन किया जाता है। इसमें कोशकार अपनी आवश्यकता के अनुरूप शब्दों का उच्चारण, उत्पत्ति, प्रयोग-वैविध्य आदि की भी जानकारी देता चलता है। विशिष्ट दृष्टिकोण को केंद्र में रखकर कोश के कई रूप देखे जा सकते हैं। जैसे, सामान्य कोश, परिभाषा या पारिभाषिक कोश, भाषावैज्ञानिक कोश, विश्वकोश, समांतर कोश, व्यक्ति-कृति कोश या साहित्य कोश, पुराण एवं मिथक कोश आदि।

2.2.8 उपयोग के आधार पर

आज के सूचना प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान के युग में इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। पिछली शताब्दी के अंतिम दो दशकों से जहाँ कंप्यूटर के क्षेत्र में विशिष्ट प्रगति हुई है, वहीं पिछले पाँच-छह वर्षों से

ऑनलाइन कार्य करने की पद्धति भी बढ़ती ही जा रही है। ऐसे में अनुवाद कर्म भी अब मानव के साथ-साथ यांत्रिक सहायता से यानी कंप्यूटर द्वारा और ऑनलाइन किया जाने लगा है। उपयोग की इसी विशेष पद्धति ने शब्दकोशों के निर्माण की प्रक्रिया और पद्धति में भी विशेष परिवर्तन ला दिया है। जहाँ एक ओर अनुवाद कर्म मानव के साथ-साथ कंप्यूटर द्वारा और ऑनलाइन रूप में भी किया जाने लगा है, उसी प्रकार शब्दों का संकलन अब कंप्यूटर के अंतर्गत तथा ऑनलाइन रूप द्वारा भी किया जाने लगा है। इसलिए, उपयोग की दृष्टि से देखा जाए तो कोश के तीन रूप देखे जा सकते हैं – (1) मुद्रित कोश, (2) कंप्यूटर कोश; और (3) ऑनलाइन कोश।

कोशों के वर्गीकरण के प्रमुख आधारों को जानने के लिए आइए, अब हम उनके आधार पर कोशों के विभिन्न प्रकारों के बारे में जानें।

2.3 उद्देश्य के आधार पर कोशों के प्रकार

इस इकाई के भाग 2.2 में यह पहले ही बताया जा चुका है कि कोशों को किसी प्रयोजन अथवा उद्देश्य-विशेष को लेकर तैयार किए जाने के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। कोश-विशेष का प्रयोजन शब्द-विशेष का अर्थ, प्रतिशब्द, पर्याय, विलोम, वाक्य-प्रयोग, व्युत्पत्ति, विवेचन, उच्चारण आदि देना हो सकता है। इसलिए उद्देश्य के आधार पर कोश के शब्दकोश, पर्यायकोश, विलोम कोश, व्युत्पत्ति कोश, उच्चारण कोश, बोली कोश, तुलनात्मक कोश, प्रयोग कोश आदि कई रूप देखे जा सकते हैं। आइए इनमें से कुछ प्रमुख प्रकारों के बारे में जानें।

2.3.1 व्युत्पत्ति कोश

व्युत्पत्ति कोश 'व्युत्पत्ति' (etmology) पर केंद्रित कोश होता है। सामान्यतः शब्दकोशों के अंतर्गत शब्द की व्युत्पत्ति भी बताई जाती है। किंतु व्युत्पत्ति कोश में व्युत्पत्ति संबंधी तथ्यों का वर्णन अत्यंत गहन तथा वर्णनात्मक रूप में दिया जाता है।

आइए, हिंदी के शब्दों के संदर्भ में व्युत्पत्ति कोश के बारे में जानें।

जैसा कि आप जानते ही हैं, संस्कृत भारतीय भाषाओं की जननी है। संस्कृत में एक-एक धातु में इतनी क्षमता है कि वह लाखों शब्दों का निर्माण कर सकती है। वहीं, संस्कृत से शब्द संपदा लेकर या उससे प्रभावित होकर फारसी, यूनानी, लातिनी, अंग्रेजी, हिंदी आदि अनेक भाषाओं के शब्द विकसित हुए हैं। मूल धातु की जानकारी के बिना शब्द के संपूर्ण स्वरूप को जाना नहीं जा सकता। किसी भी भाषा के शब्दों का उनकी मूल धातु सहित संकलन करने की प्रवृत्ति व्युत्पत्ति कोश में देखी जा सकती है। कोशकार अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप शब्द की मूल धातु और उसकी विकास-यात्रा की जानकारी पाठक वर्ग तक पहुँचाता है। अनुवाद करते समय हमें शब्द-विशेष के उत्पत्तिपरक अर्थ की जानकारी और उस शब्द से संबंधित धातु रूप की जानकारी की भी अपेक्षा हो सकती है। ऐसे में व्युत्पत्ति कोश सहायक सिद्ध होता है क्योंकि शब्द-विशेष से संबंधित धातु रूप की जानकारी से ही शब्द का आंतरिक अथवा मूल अर्थ का स्पष्ट बोध हो पाता है। इसलिए शब्द की व्युत्पत्ति की जानकारी किसी भी अनुवादक अथवा लेखक आदि के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इसी प्रयोजन को ध्यान में रखकर व्युत्पत्ति कोश बनाने वाले कोशकार का ध्यान इस बात पर केंद्रित रहता है कि अमुक शब्द किस प्रत्यय, उपसर्ग अथवा धातु से बना है तथा उस धातु का मूल स्रोत क्या है? इसके अतिरिक्त व्युत्पत्ति कोश के अंतर्गत शब्द की व्युत्पत्ति संबंधी पूरी विकास-यात्रा तथा उसके आधुनिक रूप तक का विवरण वर्णित रहता है। वहीं, व्युत्पत्तियों को देने में कोशकार को कभी-कभी मूल शब्द का प्राप्त ध्वन्यात्मक प्रमाणों के आधार पर पुनर्निर्माण भी करना पड़ता है। कभी-कभी पुनर्निर्माण द्वारा बीच की कड़ी भी जोड़ी जाती है।

व्युत्पत्ति कोश में प्रविष्ट शब्द के प्रारंभिक या मूल रूप का स्वरूप और उसके क्रमिक विकास को दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदी के 'आम' शब्द की मूल उत्पत्ति संस्कृत के 'आम्र' शब्द से हुई है। 'आम्र' से 'आम' तक की पहुँचने के लिए कोश में इस शब्द के प्राकृत में हुए परिवर्तन को भी दिखाया गया है। जैसे, प्राकृत में इसे 'अम्म' या 'अम्ब' कहा गया। ठीक इसी प्रकार, हिंदी के 'डंक' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में इस प्रकार वर्णन मिलता है – दंश > प्राकृत डंस, डंक > हिंदी – डंक।

व्युत्पत्ति कोश के अंतर्गत व्याकरणिक रूप तथा अर्थ भी संक्षेप में दिया जाता है ताकि उस शब्द से संबंधित व्युत्पत्तिपरक एवं अर्थपरक प्रयोजनों का समाधान हो सके। व्युत्पत्ति कोश में कोशकार प्राक्तन भाषा के प्राक् रूपों को भी देता चलता है जिसके कारण यह कोश तुलनात्मक स्वरूप भी ले लेते हैं।

टर्नर कृत 'नेपाली डिक्शनरी', स्टीक द्वारा संपादित 'अंग्रेजी व्युत्पत्ति कोश', डॉ. नरेश कुमार द्वारा संपादित 'हिंदी व्युत्पत्ति कोश' तथा आचार्य बच्चूलाल अवस्थी द्वारा संपादित 'हिंदी व्युत्पत्ति कोश' (चार भागों में) कुछ विशिष्ट व्युत्पत्ति कोश हैं। डॉ. नरेश कुमार द्वारा संपादित 'हिंदी व्युत्पत्ति कोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर देखिए :

फूल[1] – पुं. (पुष्प, कुसुम) – सं. फुल्ल > पा. प्रा. अप. फुल्ल > हि. फूल। तुल . स्पे. फलोर, ओ. फुल, पं. फुल्ल, सिं. फुलु, गु. फूल, म. फुल, फूल।

फूल[2] – पुं. (स्त्रियों का मासिक रज) – सं. पुष्पम् (रजःस्राव, रजोधर्म – यथा 'पुष्पवती' में) > हिं. फूल। तुल. पं. फूल्ल, गु.म. फूल।

फूलना – क्रि. (फूलों से युक्त होना, पुष्पित होना, फूल जाना), सं. फुल्ल् > पा. फुल्लति > प्रा. फुल्ल > हिं. फूलना। तुल. ओ. फुलिबा, पं. फुल्लणा, सिं., फुल्णु, गु. फुलबूँ।

फूलवाड़ी – स्त्री. (फूलवाटिका) – सं. पुष्पवाटिका > प्रा. फुल्लवाडिआ > हिं. फूलवाड़ी।

फेंकना-क्रि. (1. झोके से दूर हटाना या डालना, 2. तिरस्कार पूर्वक छोड़ना) – सं. क्षिप् > प्रा.फेल > फेलदि फेलअि > हिं. फेंकना।

फेंट – स्त्री. (1- धोती का वह भाग जो कमर से लपेटा जाता है, 2-कमर का घेरा या मंडल) – सं. पटः।

2.3.2 उच्चारण कोश

उच्चारण कोश वे कोश होते हैं जिनमें प्रायः 'अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों' (International Phonetic Symbols) द्वारा किसी भाषा विशेष में प्रचलित शब्दों का सही उच्चारण दिया जाता है।

यहाँ आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि अनुवाद तो लिखित रूप में किया जाता है जिसमें वर्तनी का विशेष महत्त्व होता है। तो ऐसे में उच्चारण के बारे में जानने का प्रश्न यहाँ उठता ही नहीं है। वहीं, यदि स्रोत भाषा के शब्दों की भी बात की जाए तो उनका भी तो अनुवाद हो जाता है। ऐसे में अनुवाद में उनके उच्चारण का प्रश्न ही नहीं उठता। सामान्य शब्दकोशों में भी तो सामान्यतः प्रविष्ट शब्द के उच्चारण दे दिए जाते हैं। फिर अलग से इस प्रकार के उच्चारण कोशों का निर्माण क्यों?

सामान्य शब्दों के संदर्भ में आपका विचार करना ठीक हो सकता है किंतु हमें यह ध्यान देना होगा कि स्थान, व्यक्ति अथवा कृति के नाम के संदर्भ में उच्चारण की समस्या आती ही है। विशेष तौर पर अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय कभी-कभी यह समस्या विकराल रूप तक भी धारण कर लेती है। पहली बात तो यह है कि अंग्रेजी की वर्तनी में कोई निर्विकल्प उच्चारण तय नहीं हो सकता। दूसरा, अंग्रेजी के अनेक शब्द लैटिन, फ्रांसीसी, यूनानी आदि भाषाओं से आए हैं, जिनके लिखित और उच्चारण रूप में अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, 'Roget' शब्द का उच्चारण 'रॉजे' होगा, न कि 'रोजेट/रोगेट'। इसी प्रकार 'Dumas', 'Bads' आदि शब्दों को भी देखा जा सकता है, जिनका उच्चारण क्रमशः 'ड्यूमा', 'बाख' होगा, न कि 'डुमास' और 'बाड्स'। इस प्रकार के शब्दों का लिप्यंतरण इनके मूल उच्चारण के अनुरूप होना चाहिए। इसी प्रकार, हमें कृतियों, संस्थाओं और स्थानों आदि के नामों के अनुवाद में भी सही उच्चारण की आवश्यकता पड़ती है। तत्काल भाषांतरण में भी इनके सही उच्चारण की आवश्यकता रहती है। चूँकि सामान्य शब्दकोश में इस प्रकार के शब्द उपलब्ध नहीं होते, इसलिए उच्चारण कोश ही अनुवादक अथवा भाषांतरकार के लिए सहायक सिद्ध होते हैं। वस्तुतः सही उच्चारण प्राप्त करने का मूल स्रोत उच्चारण कोश ही है। इसलिए उच्चारण कोशों का अपना महत्त्व है।

उच्चारण कोश, भाषावैज्ञानिक अध्ययन की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। इन कोशों में भाषा विशेष में प्रचलित स्वर-व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण, उनका आक्षरिक विभाजन, बलाघात, क्षेत्रीय तथा समाजशास्त्रीय उच्चारण

की भी जानकारी दी जाती है। इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि उच्चारण कोश में शब्द विशेष के विविध उच्चारणों के साथ-साथ जहाँ अर्थ के माध्यम से उच्चारण विविधता का बोध होता है वहीं शब्द के अर्थ भी दिए गए हैं। इसमें व्याकरण संकेत नहीं दिए जाते, किंतु कोश के आरंभ में विभिन्न ध्वनियों के संकेतों की तालिका दे दी जाती है ताकि कोश का इस्तेमाल करने वालों को इन संकेतों तथा उनसे द्योतित होने वाली ध्वनि का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके। इस आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि उच्चारण कोशों में शामिल उनकी 'भूमिका' अथवा 'प्रस्तावना' आदि का भी विशेष महत्त्व रहता है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'हिंदी उच्चारण कोश' तथा डेनियल जॉन्स (Danial Jones) का 'Everyman's English Pronouncing Dictionary' बहुचर्चित उच्चारण कोश हैं। डेनियल जॉन्स द्वारा संपादित उच्चारण कोश की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर पर देखिए :

Hilliard 'hilled [-ljəd, -lia:d, -lja:d]

Hillingdon 'hilind n

hilliman, -men 'hil|ma n, -men

Hillman, -s 'hilm n, -z

2.3.3 पर्याय कोश

पर्याय कोश ऐसे कोशों को कहा जाता है जिनमें शब्द और उनके अर्थ के स्थान पर शब्दों के पर्यायों का संकलन किया जाता है। इसमें प्रायः समानार्थक शब्दों का उल्लेख किया जाता है। इसके अलावा, कोशकार माँग एवं प्रविष्टि के अनुसार समानार्थक शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग के सूक्ष्म अंतर को भी स्पष्ट कर देता है। किंतु अधिकांश पर्याय कोशों में शब्दों के पर्याय अथवा समानार्थक शब्दों का संकलन मात्र किया जाता है।

पर्याय कोशों का स्वरूप प्रायः दो रूपों में नजर आता है – (1) कोश में क्रम को विषय के अनुरूप रखा जाता है, जिसके बारे में विशिष्ट जानकारी कोश के आरंभ में ही दे दी जाती है; और (2) पर्याय कोशों में शब्द एवं उनके पर्यायों का संकलन वर्णक्रम के अनुसार किया जाता है।

पर्याय कोश में सामान्यतः अधिक प्रचलित शब्द को मुख्य आधार बनाकर अन्य शब्दों को उसके पर्याय के रूप में लिखा जाता है। शब्दों की व्याकरणिक कोटि का भी यथास्थान इसमें उल्लेख किया जाता है।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, पर्याय कोश समानार्थक शब्दों का कोश होता है। इस संबंध में डॉ. भोलानाथ तिवारी के 'हिंदी पर्यायवाची कोश' के 'मृद' शब्द का उल्लेख किया जा सकता है, जिसके 'कोमल', 'नरम', 'नर्म', 'मुलायम', 'नाजुक', 'सुकुमार', 'मधुर', 'सरल', 'सौम्य', धीमा', 'मंद' आदि पर्याय मिलते हैं। हालांकि ये सभी 'मृदु' के पर्याय तो हैं किंतु इन सभी पर्यायों मैं अर्थ के स्तर पर सूक्ष्म अंतर अवश्य देखा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, शब्द का प्रादेशिक एवं विदेशी रूप भी पर्याय कोश के अंतर्गत दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, डॉ. तिवारी के 'हिंदी पर्यायवाची कोश' में 'मेहमान' शब्द के लिए 'अतिथि', 'अभ्यागत', 'गेस्ट', 'पाहुन', 'पाहुना' आदि पर्याय प्राप्त होते हैं। इस प्रकार पर्यायवाची अथवा समानार्थक प्रतीत होने वाले कई शब्दों में सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रादेशिक संदर्भ का अंतर होता है और उसका एक निश्चित पदक्रम होता है। यह पदक्रम बदला नहीं जा सकता। जैसे, 'पाय लागू' के लिए 'चरण लागू' -अथवा 'पद लागू' शब्द उपयुक्त नहीं होगा। इसी प्रकार 'तुम्हारे पिता' के स्थान पर 'तुम्हारे बाप' प्रयोग करना ठीक नहीं होगा। अनुवादक को इन बातों का ज्ञान होना चाहिए तथा विशेष सतर्कता के साथ उसे पर्याय कोश को प्रयोग में लाना चाहिए।

आज के सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार प्रधान आधुनिक युग में पर्याय कोशों की महत्ता कई गुना होती जा रही है। पर्याय कोश अपनी व्यापक सामग्री के परिणामस्वरूप रचनाकारों, भाषाविदों, अध्यापकों, प्रशासनकर्मियों, पत्र-लेखकों, अध्येताओं एवं भाषा-प्रशिक्षुओं का भाषिक साथी बनने में पूरी तरह से सक्षम है। पर्याय कोशों की विद्यार्थी एवं बुद्धिजीवी वर्ग, दोनों के लिए समान रूप से महत्ता है। बुद्धिजीवी वर्ग जहाँ एक ओर सही शब्द चयन में पर्याय कोश की सहायता लेते हैं, वहीं पाठक वर्ग इन कोशों द्वारा शब्द संपदा को सटीक एवं

प्रसंगानुकूल बनाते हैं। पर्याय कोश के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि इसका प्रयोग करते हुए प्रयोक्ता को अर्थ की संपूर्णता का पता लगाने के लिए प्रयोग एवं व्याख्या, दोनों का सहारा लेना चाहिए अन्यथा आधी-अधूरी जानकारी से नुकसान हो सकता है।

कुछ प्रमुख पर्याय कोश इस प्रकार हैं – बदरीनाथ कपूर का 'शब्द परिवार कोश', डॉ. भोलानाथ तिवारी कृत 'हिंदी पर्यायवाची कोश', गोविंवद चातक कृत 'बृहत् हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश', डॉ. हरदेव बाहरी कृत 'मानक हिंदी पर्याय कोश', तथा ओमुप्रकाश गाबा द्वारा संपादित 'व्यावहारिक पर्याय कोश' आदि। गोविंद चातक कृत 'बृहत् हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर पर देखिए :

कुबेर : अर्थद, अर्थपति, अलकाधिपति, ऐलविल, किन्नरेश, कुह, धनकेलि, धनाधिप, पौलस्त्य, यक्ष, यक्षनायक, बक, वसुद, वित्तप, वैश्रवण, सोम, सौरम्य, स्थपति, हर्य्यक्ष।

कुमकुम : कुंकुम, केसर, रोरी, रोली, रोहित।

कुमार : पुत्र, बालक, कुँवारा।

कुमारी : कन्या, अचिरोढ़ा, दृष्टिपुष्पा, धेनुका, नौफलार्थ श्यामा।

कुम्हार : कुंभकार, कुलाल, कोलाल।

कुमुद : श्वेतोत्पल, कैरव, इन्दुकमल, शशिकांत, कुवलय।

कुमुदिनी : इंदुकमल, उत्पल, कच्छ, कुवेल, कुब, कुवलय, कुई, कैरव, कोई, धवलोत्पल, पद्मनी, रात्रिपुष्प, हल्लेक, नलिन।

कुरंग : हिरण, सग, ऋष्य, चारू, लोचन, प्लवंग, चंचु, भीरुहृदय।

कुररी : क्रौंच, करांकुल, करेठु, शरम, कूंज।

कुरूप : असुंदर, अदर्शनीय, अपरूप, कदाकार, बदशक्ल, बदसूरत, विहंगम, बेडौल, भदेस, भद्दा, भोंड़ा, विरूप।

कुल : 1. वंश, परिवार, घराना, 2. समूह दल, झुंड 3. अध्यक्ष 4. जोड़।

2.3.4 विलोम कोश

विलोम कोश से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिनमें कोशकार शब्दार्थ, व्याकरणिक कोटि, संकेत, भाषावैज्ञानिक विश्लेषण के स्थान पर मात्र शब्दों का विपरीत प्रतिशब्द ही देता है। इन कोशों में कुछ शब्द ऐसे भी मिलते हैं जिनके एकाधिक विलोम देखे जा सकते हैं। कोशकार इन कोशों में शब्द को वर्णक्रम में ही संकलित करता है तथा उसका विपरीत रूप साथ-साथ प्रकट करता चलता है। वस्तुतः विलोम शब्द की जानकारी कम संदर्भों में ही सहायक बनती है क्योंकि अधिकांश सामान्य कोशों के अंतर्गत तथा पर्यायवाची कोश में भी शब्द-विशेष के विलोम रूपों की जानकारी दी हुई होती है। यही कारण है कि विलोम कोश की रचना बहुत ही कम हुई है। ऐसे कोश भाषिक क्षमता बढ़ाने एवं शब्द-संपदा की समृद्धि दर्शाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिंदी भाषा में उपलब्ध पर्याय कोशों में डॉ.भोलानाथ तिवारी एवं महेंद्र चतुर्वेदी और ओमुप्रकाश गाबा द्वारा संपादित 'व्यावहारिक हिंदी कोश' तथा डॉ. बदरीनाथ कपूर द्वारा संपादित 'नूतन पर्यायवाची एवं विपर्यय कोश' विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं।

विलोम कोश भी अनेक स्थितियों में अनुवाद में सहायक होते हैं क्योंकि किसी खास प्रसंग में उपयुक्त शब्द का सुझाव इनसे भी मिलता है।

2.3.5 अन्य कोश

व्युत्पत्ति कोश, उच्चारण कोश, पर्याय कोश और विलोम कोश के अतिरिक्त, उद्देश्य के आधार पर कोशों के वर्गीकरण में 'बोली कोश एवं तुलनात्मक कोश' को भी शामिल किया जाता है, जिसका वर्णन-विश्लेषण 'भाषा

के आधार पर कोशों के वर्गीकरण' से संबंधित इस इकाई के भाग 2.4 में किया जाएगा। इसके अलावा, उपसर्ग, प्रत्यय, क्रिया, प्रयोग आदि व्याकरणिक कोटियों को आधार बनाकर कोश निर्मित किए जा सकते हैं। किंतु इनकी संख्या नगण्य ही है। वस्तुतः इनका अपना विशिष्ट महत्त्व होते हुए भी इनकी अधिक रचना नहीं की गई हैं।

2.4 भाषा के आधार पर कोशों के प्रकार

भाग 2.2 में आपको यह बताया जा चुका है कि कोशों को भाषा के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ कोश एक भाषा को केंद्र में रखकर तैयार किए जाते हैं और कुछ दो अथवा दो से अधिक भाषाओं को। इसके अलावा, भाषा के विभिन्न रूपों के आधार पर भी कोशों को वर्गीकृत किया जाता है। भाषा के ये विभिन्न रूप 'बोली', 'उपभाषा' के स्तर पर भी देखे जा सकते हैं और भाषा के अपरिष्कृत रूप में प्रयोग के आधार पर 'अपभाषा' पर भी। इस आधार पर हमने भाषा के आधार पर कोशों को सामान्यतः जिन वर्गों में विभाजित किया जाता है, वे हैं – (1) एकभाषी कोश, (2) द्विभाषी कोश, (3) बहुभाषी कोश, (4) बोली अथवा उपभाषा कोश; और (5) अपभाषा कोश। आइए, अब इन पर क्रमशः विचार करें।

2.4.1 एकभाषी कोश

एकभाषी कोश से अभिप्राय ऐसे कोश से है जिसमें किसी भाषा-विशेष के शब्दों का अर्थ उसी भाषा में दिया जाता है। इन कोशों के अंतर्गत किसी भाषा-विशेष की प्रविष्टि अर्थात शब्द संपदा, उनका व्याकरणिक विवरण, लोकोक्तियाँ-मुहावरे, विविध भाषिक प्रयोग आदि एकत्रित किए जाते हैं तथा शामिल शब्दों को वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित करके शब्द-विशेष के विविध अर्थ एवं व्याकरणिक विवरण उसी भाषा में दिए जाते हैं। कोशकार इन कोशों में अपनी इच्छा अथवा मनोवृत्ति के अनुसार शब्दार्थ एवं व्याकरणिक कोटि देने के साथ-साथ मानक वर्तनी, उच्चारण, शब्द-प्रयोग, उद्धरण, लोकोक्तियाँ-मुहावरे आदि भी देता है।

किसी भी अच्छे एकभाषी कोश में उपयुक्त उद्धरणों के माध्यम से शब्द के विविध अर्थों को स्पष्ट किया जाता है। ऐसे में अध्येता अथवा पाठक का ध्यान भटक सकता है और अर्थ-बोधन अथवा सटीक पर्याय ग्रहण में कठिनाई आ सकती है। इसलिए इस प्रकार के शब्दकोश को प्रयोग में लाते समय पाठक का यह प्रधान दायित्व बनता है कि वह ऐसे कोशों की भूमिका, संकेत तालिका और शब्दार्थ से संबद्ध विविध सूचियों का गहराई से अध्ययन करे। इन संकेतों में तथा कोश की भूमिका में शब्द-विशेष की श्रेणी, प्रकृति, प्रकार्य, संदर्भ, स्रोत, प्रयोग आदि से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी दे दी जाती है। इसलिए शब्द के साथ-साथ कोश में संलग्न सूचियों का विशेष महत्त्व रहता है।

'एकभाषी कोश' स्वयं में विशिष्ट कोश होता है जिसके माध्यम से भाषा-विशेष में प्रवीणता अर्जित की जा सकती है। ऐसे कोश भाषा की समृद्धि के परिचायक होते हैं। अनुवाद के संदर्भ में भी एकभाषी कोशों की महत्ता देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, यदि 'category' शब्द का अनुवाद करना हो तो हिंदी में उसका उचित पर्याय 'वर्ग' मिलता है। किंतु यदि हिंदी-हिंदी कोश (अर्थात एकभाषी कोश) को देखें तो हम पाएँगे कि 'वर्ग' शब्द की व्याख्या वहाँ निम्नलिखित रूप में मिलेगी :

> **वर्ग** –पु. (सं.), (वि. वर्गीय) एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह, कोटि, श्रेणी (क्लास); सामान्य धर्म का स्वरूप रखने वाले पदार्थों का समूह; परिच्छेद, अध्याय; दो समान अंकों या संख्याओं का घात या गुणनफल; वह चोकौर क्षेत्र जिसकी लंबाई-चौड़ाई और चारों कोण बराबर हों।
>
> (मानक हिंदी-हिंदी कोश, डॉ. शिवप्रसाद शास्त्री, पृ. 899)

इस प्रविष्टि को ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि 'वर्ग' शब्द के पाँच विविध अर्थ और पर्याय प्राप्त होते हैं। इसके पश्चात अनुवादक संदर्भ के अनुसार सही पर्याय का चयन करके अनुवाद कर सकता है। इस तरह एकभाषी कोश से हमें लक्ष्य भाषा के एकाधिक प्रतिशब्द प्राप्त होते हैं जिनसे अनुवाद कर्म एवं भाषा ज्ञान दोनों ही अद्यतन हो पाते हैं।

एकभाषी कोश मानक वर्तनी एवं प्रयोग बहुलता में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह कोश शब्द की मानक वर्तनी की जानकारी तो देता ही है, साथ ही वह यह भी बोध कराता है कि शब्द-विशेष कितने अर्थों में प्रयुक्त हो रहा है।

कुछ प्रमुख एकभाषी कोश इस प्रकार हैं – रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित 'हिंदी शब्द सागर', कालिका प्रसाद द्वारा संपादित 'बृहत् हिंदी कोश', डॉ. शिव प्रसाद शास्त्री कृत 'मानक हिंदी-हिंदी शब्दकोश', डॉ.हरदेव बाहरी द्वारा संपादित 'हिंदी शब्दकोश', प्रो.वी.रा. जगन्नाथन द्वारा संपादित 'छात्रकोश', डॉ. पूरनचंद टंडन और डॉ. हरीश कुमार सेठी द्वारा संपादित 'सृष्टि हिंदी शब्दकोश', एच.डब्ल्यू. फाउलर (H.W. Fowler) द्वारा संपादित 'The Concise Oxford Dictionary', विलियम सिडी (William Ceddie) द्वारा संपादित 'Chamber's Twentieth Century Dictionary' आदि। इनमें से 'सृष्टि हिंदी शब्दकोश' (एकभाषी कोश) की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर पर देखिए :

आलंकारिक-1 - (वि.) अलंकार संबंधी; सजावटी; अलंकारयुक्त, साहसिक 2 (पु.) अलंकारशास्त्र का ज्ञाता।

आलंब, आलंबन - (पु.) सहारा, आश्रय; नींव, भाव का आधार।

आलथी-पालथी - (स्त्री.) एड़ियों को दूसरी ओर की जंघाओं पर रखकर बैठने का ढंग।

आलना - (पु.) चिड़ियों का घोंसला, नीड़।

आलपीन - (स्त्री.) घुंडीदार, सुई, पिन।

आलम - (पु.) संसार, जगत्, दुनिया, जनसमूह, दशा, दृश्य, संसार में रहने वाला मनुष्य।

आलमगीर - 1 (वि.) दुनिया को जीतने वाला 2 (पु.) चक्रवर्ती राजा।

आलमारी - (स्त्री.) अलमारी।

आलय - (पु.) घर, मकान, आधार-स्थान।

आलसी - (वि.) निकम्मा और सुस्त।

आलस्य - (पु.) निकम्मापन और सुस्त, उत्साहीनता, शिथिलता।

आला - 1 (वि.) गीला, तर, नम, ताजा, कच्चा और हरा, ऊँचे दरजे का और बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ 2 (पु.) दीवान में बना ताक, ताखा, कुम्हार का आँवाँ।

आलाप - (पु.) कहना, बोलना, वार्तालाप, चहचहाहट, तानयुक्त स्वरों में आरंभिक धुन प्रदर्शन।

2.4.2 द्विभाषी कोश

द्विभाषी कोश ऐसे कोशों को कहते हैं जिनमें एक भाषा के शब्दों का अर्थ, उच्चारण और विविध प्रयोग दूसरी भाषा में दिए जाते हैं। इस कोश में प्रविष्टि एकत्रित करते हुए जिस भाषा में शब्द-संपदा रखी जाती है, लक्ष्य भाषा में उन्हीं शब्दों के समानक या पर्याय रूप दिए जाते हैं। इसमें दो भाषाओं की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार के कोशों को तैयार करने के लिए कोशकार का दोनों भाषाओं का सिद्धहस्त होना आवश्यक माना गया है।

द्विभाषी कोशों के माध्यम से मूल अवधारणाओं की शाब्दिक अथवा भाषिक कठिनाई की दीवार को तोड़ा जा सकता है। अनुवाद में तो इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है। स्रोत अथवा लक्ष्य भाषा में से कोई भी भाषा इन द्विभाषिक कोशों की प्रथम भाषा हो सकती है जिसके शब्दों के विविध अर्थ तथा प्रयोग दूसरी भाषा में रहते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के संदर्भ में अंग्रेजी-हिंदी कोश एवं हिंदी-अंग्रेजी कोशों का उपयोग किया जा सकता है। इस तरह ये दोनों प्रकार के कोश 'द्विभाषी कोश' की श्रेणी में आएँगे। अनुवाद कार्य करते समय स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के शब्द पर्याय हमें खोजने हाते हैं, लेकिन इस दौरान दोनों प्रकार के कोशों की सहायता ली जाती है।

द्विभाषी कोश के अंतर्गत स्रोत भाषा के शब्द का लक्ष्य भाषा में अर्थ-वैविध्य के साथ-साथ उसकी व्याकरणिक कोटि, मानक वर्तनी एवं उच्चारण भी दिया जाता है। उदाहरण के लिए, 'बृहद अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश' में डॉ. हरदेव बाहरी ने 'account' शब्द की व्याख्या इस रूप में की है :

account – ॲकॉउण्ट, n. गणन, गणना, गिनती, गिनती करना; (वाणि., अर्थ का.) लेखा, (वाणि., अर्थ.) खाता, हिसाब, हिसाब-किताब; व्याख्या; कणुक; लाभ; अनुमान; हेतु, निमित्त, कारण; हेतुनिर्देश; हेतुकथन; वर्णन, विवृति, वृत, (का.) वृत्तांत, विवरण, उल्लेख, बयान, रिपोर्ट, अर्थ, महत्त्व आदि। (पृ.15)

इस प्रविष्टि को देखने से पता चलता है कि 'account' शब्द का केवल सामान्य अर्थ ही नहीं है, बल्कि वाणिज्य, अर्थशास्त्र और कानून के संदर्भ में भी उसकी व्याख्या की गई है। अनुवादक अथवा अध्येता को चाहिए कि वह अपने प्रसंग के अनुरूप उचित शब्द का चयन करे। यही नहीं, अति-प्रचलित शब्द उपयुक्त न लगने पर व्याख्यायित विकल्पों में से अन्य कोई शब्द चुना जा सकता है। ऐसे कोश अध्येता के ज्ञान के विकास में सहायक होने के साथ-साथ दो विविध भाषा-भाषियों को निकट लाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अंग्रेजी और हिंदी के कुछ प्रमुख द्विभाषिक कोश इस प्रकार हैं:

- अँगरेजी-हिंदी कोश, फादर कामिल बुल्के
- बृहत अंग्रेजी-हिंदी कोश, डॉ. हरदेव बाहरी
- शिक्षार्थी हिंदी-अंग्रेजी कोश, डॉ. हरदेव बाहरी
- आदर्श हिदी-संस्कृत कोश, रामस्वरूप शास्त्री
- Oxford Hindi-English Dictionary, R.S. McGreger
- Practical Hindi-English Dictionary, Mahendra Chaturvedi, B.N. Tiwari

2.4.3 बहुभाषी कोश

बहुभाषी कोशों के अंतर्गत दो से अधिक भाषाएँ एक-साथ देखी जा सकती हैं। इस कोश में एक भाषा की कोशीय इकाइयों के लिए अन्य अनेक भाषाओं में समानार्थी इकाइयाँ दी जाती हैं। ऐसे कोशों में कोशकार की मूल दृष्टि भाषावैज्ञानिक होती है तथा वह विविध अर्थ प्रयोग देने की अपेक्षा लक्ष्य भाषाओं में पर्याय देता चलता है। यही कारण है कि यह कोश तुलनात्मक हो जाते हैं। ये ज्यादातर तकनीकी शब्दावली के कोश होते हैं जिनमें अर्थों की व्याख्या न के बराबर होती है। बहुभाषी कोशों में स्रोत भाषा के शब्द की व्याकरणिक जानकारी भी दी जाती है। उदाहरण के लिए, डॉ. शिव प्रसाद भारद्वाज शास्त्री द्वारा संपादित 'संस्कृत-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश' में पृष्ठ 610 पर 'बहु' शब्द की व्याख्या इस प्रकार दी गई है : 'बहु – (भूयान, भूयिष्ठ, भूमन) अधिक, अनेक, महान; much, many, great।'

बहुभाषी कोश में कोशकार अपने प्रयोजन के अनुसार उद्धरण भी देता है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में जहाँ स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्र-स्तरीय भाषाएँ अलग-अलग हैं, वहाँ बहुभाषी कोशों की आवश्यकता एवं महत्ता है। वस्तुस्थिति यह है कि इस प्रकार के बहुभाषी कोश बड़ी मात्रा में बनाए भी जाते हैं।

बहुभाषी कोशों में डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री का दो भागों में प्रकाशित 'संस्कृत-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश', केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'भारतीय भाषा कोश', और श्री विश्वनाथ नरवणे द्वारा संपादित 'चौदह भारतीय भाषाओं का पर्याय कोश' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री द्वारा संपादित 'संस्कृत-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर देखिए :

विजयस्तम्भ *पुं.* विजय की स्मृति में खड़ा किया खम्भा; a pillar in memory of victory. –**जर** *वि. त्रि,* जवान; young. –**जल्प** *पुं.* गप्प; idle talk. – जत्र *वि. त्रि.* अजर; ageless; अन्नमेव विजरत्रम् [Maitryupa, VI] – जात *वि. त्रि.* गुणवन् असाधारण; meritorious, extraordinary **विजाति** *स्त्री.* भिन्न जाति; different caste, different speicies. विजया भट्टारिका एक कवयित्री, A poetess. – जातीय *वि. त्रि.* भिन्न प्रकार या जाति का; – of a different kind or caste — **जायते** गर्भवती होती है, अन्य उत्पन्न करती है, becomes pregnant; अश्वा विजायते. – **जावन्** 'विजायत इति' गर्भवती होने वाली; going to be pregnant – **जिगीषा** *स्त्री.* जेतुमिच्छा; desire to conquer. –**जिगीषु** *वि.*

त्रि. जेतुमिच्छु; desirous of conquesing.

विजिघांसु *वि. त्रि.* मार डालने की इच्छा रखता हुआ; desirous of killing.

विजिज्ञासा *स्त्री. त्रि.* शिष्ट या यथार्थज्ञान को पाने की इच्छा; desir to acquire real knowledge

विजिज्ञासित *वि. त्रि.* जानना चाहा गया; desired to be known correct

विजिज्ञासु *स्त्री वि. त्रि.* विजिज्ञासा रखने वाला; one having interest ot acquire knowledge

2.4.4 उपभाषा कोश (बोली कोश)

उपभाषा कोश से अभिप्राय ऐसे कोश से है जिसमें मानक भाषा से जुड़ी किसी भी बोली के शब्दों को अर्थ और प्रयोग सहित वर्णक्रम में संकलित किया हुआ होता है। ऐसे कोशों को 'बोली कोश' के नाम से भी जाना जाता है। उपभाषा कोश में बोली-विशेष के सीमित शब्द ही मिलते हैं। उपभाषा में प्राप्त किसी रचना के लिए इस प्रकार के कोश उपयोगी होते ही हैं, साथ ही मानक भाषा में लिखे किसी साहित्य में आए बोलियों के शब्दों के संदर्भ में भी ऐसे कोश महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ऐसे कोश दो रूपों में प्राप्त होते हैं – (1) वे कोश, जो बोली विशेष के होते हैं तथा जिनमें एक ही बोली के शब्दों का वर्णन किया जाता है, (2) वे कोश जिनमें भाषा-विशेष की तमाम बोलियों के शब्दों का वर्णन किया जाता है। ऐसे कोश में शब्द के सभी बोलीगत विवरणों को दिया जाता है और उसके साथ-साथ उस बोली का नाम दिया जाता है जिसमें वह पाया जाता है।

उपभाषा कोश के अंतर्गत मानक भाषा के ऐसे शब्दों का भी संकलन किया जाता है जिनका प्रयोग क्षेत्र विशेष में बोली रूप में किया जाता है। ऐसे कोशों का निर्माण बोली विज्ञान (Dialectology) की सहायता से किया जाता है। बोली कोश में आँचलिक शब्द संग्रहीत रहते हैं, जो आम तौर पर आँचलिक कथा-साहित्य में प्रयुक्त हुए नजर आते हैं। इसके अलावा, साहित्येतर विषयों में भी क्षेत्रीय रीति-रिवाज, कृषि आदि से संबंधित स्थानीय शब्दों का प्रयोग देखा जा सकता है। साहित्य और साहित्येतर विषयों में बोली के शब्दों का प्रयोग करने की यह प्रवृत्ति केवल हिंदी भाषा की ही नहीं अन्य भाषाओं में भी यह देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के साहित्य में भी कई स्थानों पर स्कॉटिश तथा वेल्श भाषा के शब्द मिल जाते हैं।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, उपभाषा कोश अथवा बोली कोश में क्षेत्रीय खान-पान, रीति-रिवाज, रहन-सहन, कृषि आदि से संबंधित सभी प्रकार के आँचलिक शब्दों का संकलन किया जाता है। यदि अनूद्य सामग्री में स्रोत भाषा के इस प्रकार के आँचलिक शब्द आएँ तो अनुवादक को बोली कोश अथवा उपभाषा कोश की सहायता लेनी चाहिए। उसका यह मूल कर्तव्य हो जाता है कि वह इस प्रकार के आँचलिक शब्दों का संदर्भ के अनुसार अर्थ का अनुमान लगाने के स्थान पर उपभाषा कोश का इस्तेमाल करके सही-सही अर्थ जानने का प्रयास करे ताकि उसका अनुवाद अर्थसंगत और प्रामाणिक बन सके।

प्रमुख उपभाषा कोशों में जोसफ राइट का 'The English Dialect Dictionary', सुधींद्र कुमार का 'ब्रजभाषा शब्दकोश', हरराज का 'डिंगलनामा', राजस्थान शोध संस्थान का 'डिंगल कोश', रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' का 'अवधी कोश', दीनबंधु झा का 'मैथिली भाषा कोश' आदि विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं। 'अवधी कोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर पर देखिए :

फीक वि. पुं. हल्का, कम महत्त्व का; नीरस (तुल. सरस होय अथवा अति फीका); – परब, कम महत्त्वपूर्ण हो जाना।

फीचब क्रि. स. पटक-पटक कर साफ करना; प्रे. फिचाइब, चवाइब, उब; दे. उपछब, सं. प्रक्षाल; भो. फे-।

फीट सं. पुं. फुट, अं.।

फीता सं. पुं. फीता।

फीलखाना सं. पु. घर जिसमें हाथी रहे, वै. पी.-; फा. फ़ील (हाथी) खानः (घर)।

फीला सं. पु. शतरंज के खेल में 'ऊँट' कहा आधे वाला मुहरा, फा. फ़ील।

फीस सं. स्त्री. शुल्क, – लागब, – देब, – लेब; वै. – सि. अं. फ़्री. का बहुवचन।

फुआ दे. – वा।

फुक्क सं. पुं. हवा या प्राण निकलने का शब्द; सें. झट से।

फुचरा सं. पुं. लकड़ी आदि का किनारे का पतला भाग; – निकरब; क्रि. – ब., ऐसे टुकड़े हो जाना; खराब हो जाना।

2.4.5 अपभाषा कोश

भाषा का एक मानक रूप होता है जिसका प्रयोग पढ़ा-लिखा शिष्ट समुदाय लोक-व्यवहार में करता है। किंतु आम तौर पर अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे व्यक्ति सामान्य-सी भाषा एवं शब्दों का प्रयोग करते हैं। वे प्रतिदिन अशिष्ट भाषा को प्रयोग में लाते हैं। भाषा में अशिष्ट प्रयोगों को 'अपभाषा' (Slang) कहा जाता है। 'अपभाषा' को 'चालू भाषा' भी कहा जाता है।

अपभाषा कोश ऐसे कोश को कहते हैं जिसमें क्षेत्रीय, आँचलिक अथवा अशिष्ट भाषा के शब्दों को वर्णक्रम में संकलित किया जाता है। मुंबइया हिंदी में इस प्रकार के प्रयोग विशेष तौर पर नंजर आते हैं। उदाहरण के लिए, 'खुंदक', 'बीडू', 'टपोरी', 'पंगा लेना', 'फट्टे मारना' आदि जैसे शब्दों और पदबंधों का प्रयोग करना।

कई बार मानक भाषा के सहज-सामान्य शब्द भी चालू भाषा में कुछ अन्य ही अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, 'छोड़ना' शब्द को देखा जा सकता है जिसका अर्थ है – बंधन से मुक्त करना, स्वतंत्र करना; अभियोग-अपराध से मुक्त करना; त्याग देना, संबंध-विच्छेद कर देना है। किंतु यही 'छोड़ना' शब्द का चालू भाषा में अर्थ है – 'गप्प मारना'। इसी प्रकार, 'सुपारी' शब्द को देखा जा सकता है जिसका चालू भाषा में अर्थ है – 'मारने के बदले में दिया जाने वाला धन'। अंग्रेजी भाषा में भी इसी प्रकार के अनेक शब्द-प्रयोग मिलते हैं जिनके मानक और चालू भाषा में भिन्न अर्थ हैं। उदाहरण के लिए, 'be a beauty' का सामान्य अर्थ है – 'सुंदर होना', जबकि उसका दूसरा अर्थ है – 'फूहड़ या अविश्वसनीय व्यक्ति'। इसी प्रकार, 'chunky wood' का सामान्य अर्थ है – 'लकड़ी का टुकड़ा' लेकिन उसका निहितार्थ है – 'किसी काम का न होना'।

सामान्यतः शिष्ट एवं शालीन भाषा में चालू/अपभाषा शब्दों का प्रयोग नहीं होता। ऐसे प्रयोग अभद्र ही होते हैं। किंतु साहित्य में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग देखने को मिल जाता है। किसी विशेष वर्ग के पात्र तथा विशेष स्थिति का वर्णन करने के लिए ऐसे शब्दों का विशेष तौर पर प्रयोग किया जाता है। इसलिए साहित्यिक कृति का अनुवाद करते समय अनुवादक जब इस प्रकार के चालू भाषा शब्द-प्रयोग को देखता है तो उसका यह दायित्व बन जाता है कि वह उनका सही और सटीक अर्थ समझे तथा उनके प्रभाव को लक्ष्य भाषा में बनाए रखे। और यह तभी संभव हो पाता है जब अनुवादक 'अपभाषा कोश' का इस्तेमाल करके इस प्रकार के शब्दों का सही अर्थ ग्रहण करे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विशिष्ट संदर्भों में अपभाषा कोशों का अन्यतम स्थान है। एरिक पैट्रिज (Erik Patridge) का 'A Dictionary of Slang and Unconventional English' तथा टॉम ढलजैल (Tom Dalzell) द्वारा संपादित 'Modern American Slang and Unconventional English' इसी प्रकार के एक विशिष्ट अपभाषा कोश है। इस अपभाषा कोश की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर पर देखिए :

butt noun

1 **the buttocks** *UK, 1720*

- 'You can't tell it none now but her butt was twice as big last Summer.'
  - Sylvia Wilkinson, *A Killing Frost*, p. 29, 1967.
- It's the petils of coaching. You work your butt off, and then get kiched in it - *Honolulu Advertiser*, 27th April 2003.

2 **by extension, the tail end of anything** *US, 1970.*

- *Current Slang* p. 15, *Winter* 1970

3 **the tail end of a prison sentence; the final morning in prison** *US, 1949.*

- Vincent J. Monteleone, *Criminal Slang*, p. 40, 1949.

- When we were getting short and someone aksed how long we had left, we said "Six days and a butt", "Four days and a butt". The butt is your last morning. Malcolm Braley, *False Starts*, p. 199, 1976.

4 **a cigarette** *US, 1902*

- 'Now ya can buy butts, kid'. Chirechillo said — Nathan Heard, *Howard Street*, p., 107, 1968.
- I took packs of butts to the coal pile the next day - *Iceberg Slim* (Robert Beck), *Pimp,* p. 260, 1969.
- 'I quit smoking, right? You remember that ? I got off the butts' - George Higgens, *The Digger's Game*, p. 50, 1973
- It drove Rocco nuts; guys, would buy ten loose cigarettes on ten rips for a dollar fifty when they could have bought a pack - twice as many butts for the same price. - Richard Price, *Clockers,* p. 264, 1992

butt, *verb*

in tiddlywinks, to knock a wink off a pile *US, 1977*

- — *Verbatim,* p. 525, December 1977

2.5 प्रविष्टि के आधार पर कोशों के प्रकार

इस इकाई के भाग 2.2 में आप यह पढ़ चुके हैं कि कोशों को हम 'प्रविष्टि के आधार पर' भी वर्गीकृत कर सकते हैं। आपको यह भी स्पष्ट हो चुका होगा कि प्रविष्टि का अर्थ है – कोश में शामिल भाषिक इकाई। कोश में जो विशिष्ट जानकारी विद्यमान रहती है उसे 'प्रविष्टि' कहा जाता है। आप जानते ही हैं कि यह विशिष्ट जानकारी सूक्ति, उद्धरण, लोकोक्तियाँ-मुहावरे आदि में से कोई भी हो सकती है। इस प्रकार, प्रविष्टि को ध्यान में रखकर कोशों को जिन तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, वे (1) शब्दकोश (2) उद्धरण कोश या सूक्ति कोश; और (3) लोकोक्ति-मुहावरा कोश । इन विभिन्न वर्गों में से पहले अर्थात 'शब्दकोश' की व्याख्या इस इकाई के भाग 2.4 में पहले ही की जा चुकी है। वस्तुतः शब्दकोश ऐसे ग्रंथ को कहा जाता है जिसमें शब्दों का संकलन करके उसका मूल अर्थ, प्रयोग, उच्चारण, व्युत्पत्ति आदि से संबंधित जानकारी उसी भाषा में अथवा किसी अन्य भाषा में दी जाती है। शब्दकोश की व्याख्या एकभाषी, द्विभाषी एवं बहुभाषी कोशों के अंतर्गत की जा चुकी है। सामान्य शब्दकोश में संपादक मूल अर्थ, उच्चारण, व्युत्पत्ति, व्याकरणिक कोटि आदि से संबंधित प्रविष्टि का चयन करके उसके कोश में प्रस्तुत करता है।

आइए अब हम 'उद्धरण कोश' और 'लोकोक्ति-मुहावरा कोश' के बारे में जानकारी हासिल करें।

2.5.1 उद्धरण कोश अथवा सूक्ति कोश

उद्धरण कोश एक विशिष्ट कोश है जिसमें शब्दार्थ के स्थान पर किसी शब्द या तत्व विशेष की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के कोश में किसी भी संकल्पना को लिया जा सकता है और उसे व्यापक फलक पर विभिन्न विद्वानों के मत के साथ संकलित कर प्रस्तुत किया जाता है। यह कोश वस्तुतः संकल्पनापरक कोश है जो विभिन्न विद्वानों के मत के अनुरूप उस संकल्पना को स्पष्टता प्रदान करने में सहायक होता है। इन्हें 'सूक्ति कोश' भी कहा जाता है। सुंदर और प्रभावशाली कथन को 'सूक्ति' कहा जाता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'उद्धरण कोश' इसी प्रकार का कोश है। उदाहरण के लिए, इस कोश के पृष्ठ 90 पर 'आश्चर्य' शब्द की व्याख्या पाश्चात्य विद्वानों के आलोक में की गई है। इसमें अरस्तू, जॉनसन, कार्लाइल, यंग और जान फ्लेरियो की दृष्टि में 'आश्चर्य' शब्द की व्याख्या और उससे संबंधित विचार इस प्रकार रखे गए हैं :

आश्चर्य

आश्चर्य ही दर्शन का प्रथम कारण है। - अरस्तू
संपूर्ण आश्चर्य नवीनता अथवा अज्ञानता का परिणाम होता है। - जानसन
आश्चर्य आराधना का आधार है। - कार्लाइल

आश्चर्य अनैच्छिक प्रशंसा है। - यंग

आश्चर्य अज्ञान का बेटा है। - जान फ्लेरियो

उद्धरण कोशों में शब्दों या संकल्पनाओं को अकारादिक्रम में ही रखा जाता है। वैसे, इस प्रकार के कोशों का निर्माण बहुत कम हुआ है।

इस प्रकार के कोश का उपयोग साहित्यानुवाद के अंतर्गत साहित्यकार की दृष्टि में उस शब्द की व्याख्या देखने के लिए किया जाता है। साहित्यानुवाद में ये कोश साहित्यकार की मूल दृष्टि स्पष्ट करने में सहायक होते हैं। साथ ही सुविचार या सूक्तियों के ऐसे संकलन से एक तत्व से संबंधित विशिष्ट एवं विभिन्न विचार एक ही स्थल पर गुलदस्ते के समान देखे जा सकते हैं। विचारों के ऐसे गुलदस्ते वस्तु विशेष को अनेक आयामों सहित अभिव्यक्त करते हैं। उद्धरण कोश वस्तु विशेष के परिचायक एवं उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम ही होते हैं। इस प्रकार के कुछ विशिष्ट कोश हैं – डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'उद्धरण कोश', डॉ. श्याम बहादुर वर्मा द्वारा संपादित 'बृहत् विश्व सूक्ति कोश' आदि।

2.5.2 लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश

लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश एक विशिष्ट प्रकार का कोश है जिसमें मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों को वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया हुआ होता है। इस प्रकार के कोशों के निर्माण में विशेष बात यह होती है कि इन्हें सप्रयोजन और प्रयोग सहित प्रस्तुत किया हुआ होता है। इस प्रकार के कोश भाषिक कोश के प्रमुख आधार माने जाते हैं। ऐसे कोशों के अंतर्गत कोशकार कहावतों आदि के मूल तक पहुँचकर उनका पूरा-पूरा विवरण देता है। वास्तव में मुहावरों और लोकोक्तियों में अभिव्यक्ति के ऐसे आयाम अंतर्निहित होते हैं, जो सामान्य उक्ति को आप्त-वाक्य का रूप देकर अमर बना देते हैं। क्षेत्र विशेष की जीवन-शैली, रीति-रिवाज, नीतियाँ, बुद्धि वैभव, आर्थिक एवं भौगोलिक स्थिति आदि की गहन अंतर्दृष्टि से संपृक्त ये कोश केवल वक्ता के गौरव मात्र न होकर लोक जीवन के निर्मल दर्पण हैं जो इतिहास और समय को यथावत प्रतिबिंबित करते हैं।

हालाँकि सामान्य शब्दकोशों में भी लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे संकलित रहते हैं, किंतु इन कोशों में कोशकार का ध्यान लोकोक्ति-मुहावरे के मूल रूप एवं विकसित प्रायोगिक रूप पर एकसमान रहता है। इसलिए ये कोश अपना पृथक स्थान रखते हैं।

मुहावरा एक कार्य-व्यापार है जो भाषा को सजीव करने के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें प्रचलित अर्थ से पृथक विलक्षण अर्थ छिपा रहता है। इस विलक्षण अर्थ में शब्द की लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति काम करती है। उदाहरण के लिए, 'रोटी खाना' और 'सिर खाना' वाक्यांश में 'खाना' शब्द के दो अलग-अलग अर्थ हैं। पहले में इसका सामान्य अर्थ है और दूसरे में विलक्षण अर्थ 'तंग करना' है।

इसी प्रकार, लोकोक्ति एक प्रकार का नैतिक अथवा व्यावहारिक उपवाक्य अथवा वाक्य है जिसमें पूरी तरह से कोई एक भाव निहित रहता है। लोकोक्ति का प्रयोग किसी विषय को समझाने के लिए किया जाता है। यह किसी सत्य घटना, प्रसंग अथवा किसी कहानी में छिपी जीवन की सत्यानुभूति को प्रकट करती है और उसी प्रकार की परिस्थितियों को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त होती है। जब ऐसे अनुभव किसी सूक्ति या वचन का रूप धर लेते हैं तो वह 'कहावत' का रूप बन जाते हैं। इन लोकोक्ति/मुहावरों/कहावतों में अद्‌भुत अभिव्यंजना शक्ति होती है जिससे पूरा संदर्भ चमत्कृत-सा हो जाता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लोकोक्तियों और मुहावरों का वर्णक्रम में संग्रह करने वाले कोश स्वयं में 'विशिष्ट' होते हैं। इन कोशों के अध्ययन से कहावतों के निर्माण में छिपे अमूल्य पारंपरिक और ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। साथ ही ऐसे कोश विशिष्ट अर्थ को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ मुहावरों का निर्माण व्यंग्य में उल्टी बात के आधार पर किया गया है। जैसे – 'अक्ल का अजीर्ण होना'। इस मुहावरे में प्रयुक्त शब्द 'अजीर्ण' विचारणीय है। 'अजीर्ण' ज्यादा खाने से होते है इसलिए यह अधिक पका का सूचक है। यहाँ 'अक्ल का अजीर्ण' होना वास्तव में 'अक्ल का आधिक्य' न होकर व्यंग्यात्मक रूप में है यानी उल्टा है। इस तरह इस मुहावरे का वास्तविक अर्थ है – 'अक्ल का अभाव' होना। स्पष्ट है कि लोकोक्ति-मुहावरे के अर्थ विशिष्टता लिए हुए होते हैं।

लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश निरंतर विकसित जातीय उत्कर्ष का परिचय तथा इतिहास, धर्म और संस्कृति का बोध कराते हैं। लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश दो प्रकार के होते हैं – (1) एकभाषी लोकोक्ति-मुहावरा कोश; और (2) द्विभाषी लोकोक्ति-मुहावरा कोश। इन दोनों ही प्रकार के कोशों से भाषा चुस्त एवं व्यंजक बनती है।

मुहावरा-लोकोक्ति कोश विशेष तौर पर विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध होते हैं क्योंकि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए ये बहुत-सी गहन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। अनुवाद के संदर्भ में एकभाषी लोकोक्ति-मुहावरा कोश की तुलना में द्विभाषी लोकोक्ति-मुहावरा कोश का अधिक महत्त्व है। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के ऐसे प्रयोगों की चुस्ती एवं व्यंजकता लाने के लिए मुहावरे और लोकोक्तियों का समुचित अनुवाद होना चाहिए। यह समुचित अनुवाद कठिन होता है। किंतु लोकोक्ति-मुहावरा कोश की सहायता से अनुवाद अधिक सटीक एवं प्रामाणिक बन जाता है।

कुछ प्रमुख लोकोक्ति-मुहावरा कोश इस प्रकार हैं – रामदहिन मिश्र का 'हिंदी मुहावरे'; रसूल अहमद का 'हिंदुस्तानी मुहावरा कोश'; गोविंददास विनीत का 'लोकोक्तियाँ और मुहावरे'; मदनमोहन गुप्त कृत 'मुहावरे और प्रयोग'; डॉ. हरदेव बाहरी का 'मुहावरा और लोकोक्ति कोश'; डॉ. भोलानाथ तिवारी का 'अंग्रेजी-हिंदी मुहावरा-लोकोक्ति कोश'; लता काण्डपाल विरचित 'कुमाउँनी-हिंदी लोकोक्ति एवं मुहावरा कोश'; और डॉ. शोभाराम शर्मा कृत 'वर्गीकृत हिंदी मुहावरा कोश' आदि। डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'हिंदी मुहावरा कोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर देखिए :

तबीयत ख़राब होना – 1. बीमार होना। उ. बहुत दिनों से मेरी तबीयत खराब है। 2. जी मिचलाना। उ. जाने क्यों आज तबियत खराब है। 3. दिल चल जाना। उ. उसे देख कर तबीयत खराब हो गई।

तबीयत पर ज़ोर डालना – 1. खूब ख्याल करना। उ. तबीयत पर ज़ोर डालो तो शायद समझ सको। 2. जिधर तबीयत न जाती हो, उधर उसे जाने को मजबूर करना।

तबीयत पर बोझ डाला – **दे.** 'तबीयत पर ज़ोर डालना'।

तबीयत फड़क उठना – 1. जोश आना। उ. हल्दीघाटी पुस्तक को पढ़ने से तबीयत फड़क उठती है। 2. प्रसन्न होना।

तबीयत फड़क जाना – दे. 'तबीयत फड़क उठना'।

तबीयत फिरना -1. जी फिरना, जी हटना। उ. जिससे तबीयत फिर जाती है, फिर बोलने को जी नहीं चाहता। 2. घृणा होना।

तबीयत बहाल होना –1. खुशदिल होना। उ. जब में वह यहाँ आया, उसकी तबीयत बहाल है। 2.स्वस्थ होना।

2.6 काल के आधार पर कोशों के प्रकार

इकाई के भाग 2.4 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि काल अथवा समय को ध्यान में रखकर भी कोशों का निर्माण किया जा सकता है। समय-समय पर विभिन्न कोशों का काल के आधार पर निर्माण किया गया है। कभी कोशों का संपादन एक काल को ध्यान में रखकर तो कभी कालों के समूह के आधार पर कोशों का निर्माण किया जाता है। इसलिए काल के आधार हमें दो प्रकार के कोश प्राप्त हैं। ये हैं – (1) एककालिक; एवं (2) ऐतिहासिक कोश। आइए अब इन दोनों प्रकार के कोशों के बारे में संक्षिप्त जानकारी हासिल करें।

2.6.1 एककालिक कोश

एककालिक कोश से अभिप्राय ऐसे कोश से है जिसमें किसी एक काल-खंड, युग या विचारधारा को ध्यान में रखकर उसमें प्रचलित शब्दों-अवधारणाओं के अर्थ, व्युत्पत्तिपरक वर्णन, उच्चारणादि की जानकारी अकारादिक्रम में दी जाती है। ऐसे कोशों का महत्त्व सार्वभौमिक नहीं हो पाता क्योंकि शब्द का स्वरूप समय के अनुसार बदलता रहता है। किंतु यदि किसी काल-विशेष की जानकारी प्राप्त करनी हो या युग के अनुरूप शब्दों को समझना हो तो ऐसे कोश अपनी सर्वाधिक महत्ता रखते हैं। साथ ही युग विशेष के कवियों के भावों को समझने में भी ऐसे कोश महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे कोश युगीन अध्ययन को पूरी तरह से स्पष्ट करने में भी सहायक होते

हैं। यही नहीं, एककालिक कोश (वर्णनात्मक कोश) द्वारा उस काल-विशेष की शब्द संपदा, भाषिक प्रयोग आदि की जानकारी भी सहजता से प्राप्त की जा सकती है। उदाहरण के लिए, डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'आदिकालीन हिंदी कोश' आदिकालीन साहित्यों को केंद्र में रखकर उस समय प्रयुक्त शब्दों के उच्चारण एवं अर्थ की जानकारी देता है। उदाहरण के लिए, इस कोश के 32वें पृष्ठ में 'अंबर' का अर्थ वस्त्र, कपड़ा ही बताया गया है जोकि उस युग के साहित्य में इसी रूप में प्रयुक्त होता था। इसी प्रकार श्री पुरुषोत्तम देव द्वारा संपादित 'प्राचीन संस्कृत कोश' तथा डॉ. ज्ञान प्रकाश शास्त्री द्वारा संकलित 'वैदिक निर्वचन कोश' वैदिक संस्कृत के शब्दों, उच्चारणों एवं भाषिक रूपों को अभिव्यक्ति देता है। यही नहीं संस्कृत साहित्य में संपादित 'निघंटु' को भी वर्णनात्मक कोश के अंतर्गत ही रखा गया है जो कि वैदिक मंत्रों की व्याख्या कर तद्‌युगीन शब्द संपदा पर प्रकाश डालता है। ठीक इसी प्रकार अधिकांश विद्वान मध्यकालीन शब्दों का आधार ग्रहण करने वाले श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित 'हिंदी शब्दसागर' को भी वर्णनात्मक कोश की ही श्रेणी में रखते हैं। युगीन अध्ययन को बढ़ावा देकर युग-बोध प्रस्तुत करने वाले ऐसे कोश वर्तमान समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। डॉ. किशोरी लाल द्वारा संपादित 'रीतिकाव्य शब्दकोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर देखिए:

झाँवा - संज्ञा, पु. [सं. झामक] पत्थर का टुकड़ा या जली हुई ईंट, जिससे स्त्रियाँ अपने पैर की मैल छुड़ाती हैं।

उदा. छाले परिबे कैं डरनु सकै न हाथ छुवाइ,
झझकत हियैं गुलाब कै झँवा झँवैयत पाई – बिहारी

झाँई - संज्ञा, स्त्री. [?] प्रतिध्वनि, गूँज।

उदा. कुंज-कुंज सुखपुंज मधुप-गुंज कोकिला सुर की झाईं – घनानन्द

झाप - संज्ञा, पु. [हि. झड़प] पर्दा, चिक, चलमन।

उदा. झुकि झुकि झूमि झूमि झिलि झिलि झेलि
झेलि, झरहरी झापन पैं झमकि झमकि उठै। – पद्‌माकर

झाबर - संज्ञा, पु. [देश.] दलदल।

उदा. नाही तौ न हील होन देरी झील झाबरनि। – देव

2.6.2 ऐतिहासिक कोश

ऐतिहासिक कोश से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिसमें किसी भाषा विशेष के शब्दों एवं उसके विविध भाषिक प्रयोगों को कालक्रम के अनुसार संकलित करके प्रस्तुत किया जाता है। इसमें एक काल नहीं अपितु अनेक कालों के शब्दों को उनके विविध युगीन अर्थ बोध, सांदर्भिक अर्थों सहित तथा उच्चारण-व्युत्पत्ति की जानकारी के साथ-साथ इस प्रकार संकलित किया जाता है कि पूरी ऐतिहासिक अथवा विकासात्मक जानकारी उपलब्ध होती जाती है। इस प्रकार के कोशों को 'कालक्रमिक कोश' भी कहा जाता है। इनमें संपादक आवश्यकता के अनुसार शब्दों के विविध युगीन अर्थ भी प्रस्तुत करता चलता है। वस्तुतः इस प्रकार के कोश का संबंध किसी काल विशेष से नहीं होता। इसमें ऐसे शब्दों को संकलित किया जाता है जो उस भाषा में विविध कालों में प्रयुक्त होते आ रहे हैं। इस प्रकार के कोशों द्वारा भाषा-विशेष में शब्दों के उत्तरोत्तर विकास, समाहित नवीन अर्थ, युगानुरूप शब्द का स्वरूप आदि से संबंधित जानकारियाँ भी प्राप्त की जा सकती हैं। अंग्रेजी में निर्मित एनसाइक्लोपिडिया, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी आदि आदर्श ऐतिहासिक कोश कहे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त 'संस्कृत कोश' भी ऐतिहासिक कोश के अंतर्गत आता है जिसमें वैदिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के संस्कृत शब्दों का संकलन-विश्लेषण किया गया है।

2.7 अर्थ के आधार पर कोशों के प्रकार

भाग 2.2.5 में अर्थ से संबंधित कोशों का सामान्य परिचय दिया जा चुका है। जैसा कि वहाँ यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अर्थ के आधार पर हमें कोश चार रूपों में प्राप्त होते हैं। ये हैं – (1) समानार्थी कोश, (2) विलोमार्थी कोश, (3) एकार्थी कोश; और (4) अनेकार्थी कोश। इनमें से इस इकाई के भाग 2.3 में 'समानार्थी कोश' का परिचय 'पर्याय कोश' के अंतर्गत तथा 'विलोमार्थी कोश' का परिचय 'विलोम कोश' के अंतर्गत पहले ही दिया जा चुका है।

जहाँ तक अर्थ के आधार पर कोशों के तीसरे प्रकार अर्थात 'एकार्थी कोश' का संबंध है, इसमें किसी भाषा विशेष के शब्द का एक ही अर्थ या तो उसी भाषा में या अन्य भाषा में वर्णक्रम में संकलित रहते हैं। एकार्थी कोशों का निर्माण नगण्य ही रहा है। इसलिए इकाई के इस भाग में हम केवल 'अनेकार्थी कोश' के संदर्भ में ही विचार कर रहे हैं।

अनेकार्थी कोश

अनेकार्थी कोश से अभिप्रायः ऐसे कोशों से है जिनमें विविध शब्दों का वर्णक्रम के अनुसार संकलन कर उनकी उत्पत्तिपरक जानकारी के साथ-साथ विविध सांदर्भिक अर्थ भी दिए जाते हैं। इस प्रकार के कोशों में उन्हीं शब्दों को संकलित किया जाता है जिनके एक से अधिक सांदर्भिक अर्थ होते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि शब्द व्याकरण से जन्म लेता है और विविध अनुशासनों, परिस्थितियों से गुजरता हुआ अपना वैविध्यमूलक अर्थ ग्रहण करता है। किसी भी शब्द में उत्पत्तिमूलक, व्याकरणिक, सामाजिक-दार्शनिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, आर्थिक-व्यावहारिक आदि अनेक अर्थ समाहित रहते हैं। उदाहरण के लिए 'मूल्य' शब्द को लिया जा सकता है, जो व्याकरणिक, उत्पत्तिमूलक, अर्थशास्त्रीय, व्यावहारिक, साहित्यिक आदि अनेक अर्थों को समाए हुए है। अनेकार्थी कोश में इसी प्रकार के शब्दों को वर्णक्रम के अनुसार संकलन कर उनकी उत्पत्ति या धातु संबंधी जानकारी से आरंभ करके विविध सांदर्भिक अर्थों को बताया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में ऐसे कोशों की भरमार देखी जा सकती है तथा इस दृष्टि से उल्लेखनीय कोश व्याडि कृत 'उत्पीलनी कोश' माना जाता है। इस कोश में वैदिक एवं लौकिक संस्कृत के एकाधिक अर्थ रखने वाले शब्दों का संग्रह किया गया है तथा उनकी प्रयोग सहित जानकारी दी गई है।

संस्कृत कोश-परंपरा का अनुसरण कर हिंदी में भी अनेक अनेकार्थी कोश लिखे गए। विशेषकर 18वीं-19वीं शताब्दी में इस प्रकार के कोशों की समृद्ध परंपरा देखने को मिलती है। इस संदर्भ में कुछ उल्लेखनीय विशिष्ट अनेकार्थी कोश इस प्रकार हैं – माधोराम कृत 'अनेकार्थ'; जालंधरनाथ कृत 'अनेकार्थ नामावली'; उदयराम बारहट कृत 'अनेकार्थी एकाक्षरी नाममाला'; बुध राव कृत 'अनेकार्थ कोश'; नंददास कृत 'अनेकार्थ'; महासिंह पांडेय कृत 'अनेकार्थ नाममाला'; दयानाथ त्रिपाठी कृत 'अनेकार्थ'; प्रेमी यवन कृत 'अनेकार्थ नाममाला'; चंदनराम कृत 'अनेकार्थ'; उदयराम मारवाड़ कृत 'अनेकार्थी' आदि। इन सभी कोशों में संस्कृत परंपरा का अनुसरण कर एकाधिक अर्थों को वर्णक्रम के अनुसार संकलित कर उनके अर्थ स्पष्ट किए गए हैं। किंतु 20वीं शताब्दी में जब कोश को एक विज्ञान की उपाधि दी गई तथा इस अनुशासन के विविध भेदों को सविस्तार प्रस्तुत किया गया तब आधुनिक कोशकारों ने वर्णनात्मक, ऐतिहासिक एवं सामान्य शब्दकोशों में ही शब्द के विविध सांदर्भिक अर्थ को देना शुरू कर दिया। ऐसे में अनेकार्थी कोशों की आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। यही कारण है कि 1900 के बाद हमें अनेकार्थी कोश प्राप्त नहीं होते।

2.8 विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर कोशों के प्रकार

भाग 2.2.5 में आप यह पढ़ ही चुके हैं कि विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर कोशों को सामान्य कोश, परिभाषा कोश, भाषावैज्ञानिक कोश, विश्वकोश, समांतर कोश, व्यक्ति और कृति कोश, पुराण एवं मिथक कोश, विश्वकोश आदि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। वहाँ आप यह भी अध्ययन चुके हैं कि इनमें सामान्य और प्रचलित शब्दों का संकलन होता है और साथ ही उनकी उच्चारण, उत्पत्ति, प्रयोग बहुलता आदि की जानकारी शामिल होती है। इसलिए हम विशिष्ट दृष्टिकोण के आधार पर वर्गीकृत अन्य कोशों का यहाँ परिचय दे रहे हैं। आइए सबसे पहले पारिभाषिक कोश पर विचार करें।

2.8.1 परिभाषा कोश अथवा पारिभाषिक कोश

पारिभाषिक कोश वह विशिष्ट कोश होता है जो ज्ञान-विज्ञान के किसी विशिष्ट अनुशासन से संबंधित होता है। ऐसे कोश में ऐसे विशिष्ट शब्दों का संग्रह-संकलन किया जाता है जिन्हें स्पष्ट करने के लिए किसी भी प्रकार की व्याख्या अथवा परिभाषा की आवश्यकता होती है। पारिभाषिक कोश, एकभाषी तथा बहुभाषी, दोनों प्रकार के हो सकते हैं। कोशकार अपनी आवश्यकता के अनुसार एकभाषी पारिभाषिक कोश में शब्द-विशेष का अर्थ अथवा व्याख्या करता चलता है जबकि बहुभाषी कोश में शब्द का वर्णक्रम में संकलन करके अन्य भाषा में उसके लिए प्रयुक्त समानार्थी पारिभाषिक शब्द देता चलता है।

परिभाषा शब्दकोश में शब्द-विशेष का मात्र अर्थ ही नहीं दिया जाता है, बल्कि उससे संबंधित अवधारणा को पूरी तरह से समझाया भी जाता है। उदाहरण के लिए, डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'भाषाविज्ञान कोश' में 'क्रिया' शब्द का अर्थ एवं व्याख्या इस प्रकार की गई है :

क्रिया - क्रिया शब्द का संबंध 'कृ' धातु से है और इसका अर्थ है – 'कुछ किया जाना' या 'कर्म'। व्याकरण या भाषाशास्त्र में 'क्रिया वह है जिसमें किसी का कुछ करना या होना ज्ञात हो। जैसे 'राम गया' में 'गया'। 'मोहन ने काम किया' में 'किया' क्रिया का मूल या आधार धातु (root) है।' (दे.) धातु।

ध्यान देने की बात यह है कि परिभाषा कोश, पारिभाषिक शब्द-संग्रह (कोश) से पूरी तरह से भिन्न होते हैं। परिभाषा कोश एकभाषी होती है, जबकि पारिभाषिक शब्द-संग्रह द्विभाषी होते हैं। परिभाषा कोश में पारिभाषिक शब्दावली को परिभाषित किया जाता है और उस परिभाषा के माध्यम से अवधारणा की जानकारी दी जाती है, जबकि पारिभाषिक शब्द-संग्रह में स्रोत भाषा के पारिभाषिक शब्द और लक्ष्य भाषा में उनके समतुल्यों का संग्रह मात्र होता है।

अनुवाद करते समय अनुवादक को कई बार ऐसे शब्दों का भी सामना करना पड़ जाता है जो दिखने में तो सामान्य प्रतीत होते हैं, लेकिन उनमें एक विशिष्ट पारिभाषिक अर्थ होता है। अनुवादक को इस प्रकार के शब्दों की पूरी जानकारी लेने और फिर उसके आधार पर लक्ष्य भाषा में सटीक अनुवाद करने के लिए पारिभाषिक कोशों का सहारा लेना जरूरी हो जाता है। उदाहरण के लिए, 'आकाशवाणी' शब्द सामान्य और पारिभाषिक स्वरूप का शब्द है। संस्कृत साहित्य और प्राचीन संस्कृति के संदर्भ में प्रयुक्त होने पर 'आकाशवाणी' का अर्थ 'देववाणी' माना जाता है, जबकि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में और विशेष तौर पर मीडिया के संदर्भ में प्रयुक्त होने पर इसका प्रयोग 'radio' के अर्थ में किया जाता है। अनुवादक संदर्भ के अनुसार अर्थ को ध्यान में रखते हुए शब्द का अनुवाद करता है। एकभाषिक परिभाषा कोश में शब्द का अर्थ सहित संकलन करके उसी भाषा में विषय से संबंधित उच्चारण, इतिहास, अर्थ, प्रयोग, संदर्भ तथा आवश्यकतानुसार विविध विद्वानों के मतों का विवेचन आदि जैसी संपूर्ण जानकारी भी रहती है। उदाहरण के लिए, 'भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश' से उद्धृत निम्नलिखित प्रविष्टि देखिए :

'बुंदेली - बुंदेलखंड में बोली जाने वाली हिंदी की एक क्षेत्रीय बोली। डॉ. धीरेंद्र वर्मा के अनुसार शुद्ध रूप में यह झाँसी, जालोन, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, ओड़छा, सागर, सेओनी तथा होशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह-बालाघाट और छिंदवाड़ा के भी कुछ भागों में पाए जाते हैं। बुंदेलखंड के कवियों की भी साहित्यिक भाषा ब्रजभाषा ही रही है, यद्यपि उनकी रचनाओं पर बुंदेली की कुछ छाप जरूर पाई जाती है।'

(भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, राजेंद्र द्विवेदी, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, पृ.157)

उक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्दकोश में ज्ञान के विशिष्ट वर्ग से संबंधित शब्द की संपूर्ण जानकारी को शामिल किया हुआ है। ऐसे शब्दकोश द्वारा विविध अर्थों और संदर्भों को जाना जा सकता है।

कुछ प्रमुख पारिभाषिक शब्दकोश हैं – राजेंद्र द्विवेदी कृत 'साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश', तथा 'भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश'; प्रो. महेंद्र चतुर्वेदी एवं तारकनाथ बाली कृत 'साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश'; डॉ. ब्रह्ममित्र अवस्थी कृत 'अलंकार कोश'; डॉ. नरेश कुमार कृत 'राजभाषा कोश' (दो भागों में)। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा संपादित 'भाषाविज्ञान कोश', 'राजनीतिशास्त्र कोश', 'शिक्षाविज्ञान कोश' आदि प्रमुख पारिभाषिक शब्दकोश हैं।

2.8.2 समांतर कोश

समांतर कोश, विशिष्ट कोश है जो अंग्रेजी के 'Thesaurus' (थिसॉरस) के पर्याय रूप में व्याख्यायित होता है। 'थिसॉरस' मूल रूप से ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका प्रयोग रोमन में थोड़े परिवर्तन के साथ उसी अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। थिसॉरस से अभिप्राय 'तिजोरी' अथवा 'कोश' से है। उस कोश को समांतर कोश कहते हैं जिसमें किसी भाषा विशेष में निहित शब्दों को आशयों और संकल्पनाओं को विषय के अनुरूप वर्गीकृत एवं व्यवस्थित कर क्रम में प्रस्तुत किया हुआ होता है। 'Oxford English Dictionary' के अनुसार, 'Thesaurus is a treasury

or storehouse of a particular language, collecting together concepts, words and phrases of every kind and register, arranged according to sense.' अर्थात 'किसी भाषा-विशेष में निहित शब्दों के आशय और संकल्पनाओं को विषय के अनुरूप वर्गीकृत एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना थिसॉरस अथवा समांतर कोश' कहलाता है।

वस्तुतः 'थिसॉरस' शब्दों के परिवार का समूह है। कई बार भाषा प्रयोक्ता अथवा अनुवादक को मन में निहित भावों अथवा इच्छित अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में शब्दकोश के स्थान पर समांतर कोश हमारा सहायक बनता है जिसमें एक प्रकार के भावों से संबंधित शब्दों का बड़े सुंदर ढंग से संकलन किया जाता है। उदाहरण के लिए, अरविंद कुमार एवं कुसुम कुमार द्वारा संपादित 'सहज समांतर कोश' में 'जाति' शब्द के लिए कोटि, गोत्र, चमेली, जीव, योनि, प्रजाति, मालती, राष्ट्र, वंश, वर्ण, समाज वर्ग आदि अनेक पर्याय मिलते हैं।

थिसॉरस, कोश का ऐसा विशिष्ट रूप है जिसकी महत्ता आज बढ़ रही है। वस्तुतः भाषा के मूल प्रयोक्ताओं के लिए थिसॉरस उपयोगी है। थिसॉरस के माध्यम से भाषा को सहज बनाने की समस्या का समाधान किया जा सकता है। अन्य भाषाई प्रयोक्ताओं के लिए थिसॉरस अपार सामग्री एवं शब्द रूप प्रदान करता है। विशाल शब्द संपदा में संप्रेषण को उपयुक्त, औचित्यपूर्ण और सटीक बनाने में भी थिसॉरस का अत्यंत महत्त्व है। लेखक अथवा अनुवादक कई बार आशय पूरी तरह से स्पष्ट होने पर भी उपयुक्त शब्द का चयन नहीं कर पाता है। ऐसे में वह 'थिसॉरस' का प्रयोग करके संबद्ध अवधारणा से जुड़े शब्दों पर विचार करके सही शब्द का चयन कर सकता है। एक शब्द के कई विकल्प होने के कारण वह आवश्यकता के अनुसार भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए दोहराव से भी बच सकता है। थिसॉरस द्वारा रचना में निहित विशिष्ट अर्थ से संबंधित शब्द को भी जाना जा सकता है। 'थिसॉरस' में मात्र प्रचलित और मानक शब्दों का ही नहीं, चालू भाषा की शब्दावली, आद्याक्षर से बने शब्दों और चर्चाधीन शब्दों से बने मुहावरों का भी विवरण रहता है। इसलिए थिसॉरस की उपयोगिता असंदिग्ध है। यह, विशेष तौर पर मौलिक लेखन और अनुवाद, दोनों प्रकार के लेखन कर्म में बहुत उपयोगी रहता है। ऑक्सफोर्ड द्वारा संपादित Roget's International Theasure; और अरविंद कुमार तथा कुसुम कुमार द्वारा संपादित 'अरविंद सहज समांतर कोश' उल्लेखनीय समांतर कोश हैं। इस समांतर कोश की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ उदाहरण के तौर पर देखिए :

दल = कर्मचारी दल, गुट, पँखड़ी, पल्लव, फाँक, राजनीतिक दल, वृंद, व्यवस्थित समूह, श्रमिक दल, सार्थ, सेना, सेना विभाग.

दल अभ्यास = ड्रिल.

दलक = झिरी.

दलकना = काँपना.

दलदल = कीचड़, गारा, संकटावस्था.

दलदल सं कर्दम, कीच, गड़प्पा, चोर ज़मीन, चोर दलबदल, झाबर, धँसन, धँसान, पंक, पलल, • कीचरू, • गाद, • फिसलन, • मरुथल.

दलदल ज्योति = बड़वा दीप्ति.

दलदली = कीचड़दार, फिसलनयुक्त, वर्षापूर्ण.

दलदली वि आबिल, कीचड़दार, गीला/गीली, धँसवाँ, धँसानदार, पंकिल, पिच्छल, भीगा/भीगी, लीबड़ • गंदा/गंदी, • फिसलनयुक्त; • सूखा/सूखी।

2.8.3 व्यक्ति तथा कृति कोश

व्यक्ति और कृति कोश से अभिप्राय ऐसे कोश से है जिसमें किसी विशिष्ट साहित्यकार, कृति, साहित्यिक वर्ग अथवा युग को ध्यान में रखकर उनसे जुड़ी सामग्री प्रदान की जाती है। कोशकार अपने दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर किसी साहित्यकार अथवा रचना का चयन करता है तथा उससे संबंधित अवधारणाओं, शब्दों और मतों को अकारादिक्रम में संकलित करता है। इस प्रकार के कोश में कोशकार की दृष्टि और उससे संबंधित प्रविष्टि का विशेष महत्त्व रहता है। कोशकार ऐसे कोशों में व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग करके किसी विशिष्ट अवधारणा

के मान और प्रयोग बहुलता को प्रस्तुत करता है। इसके अलावा, कभी-कभी किसी रचना अथवा कवि पर ध्यान केंद्रित करके उसमें निहित शब्दों का रचना के अनुरूप अर्थ प्रस्तुत भी किया जाता है।

व्यक्ति अथवा कृति कोश साहित्य से संबंधित रहते हैं। यही कारण है कि इन्हें 'साहित्य कोश' की भी संज्ञा दी जाती है। ऐसे कोश किसी साहित्यकार की भाषिक समृद्धि पर ही आधारित होते हैं। इन कोशों में संकलित शब्द का केवल अर्थ ही नहीं दिया जाता, बल्कि कोशकार अपनी आवश्यकता के अनुसार यह भी जानकारी दे देता है कि वह शब्द कहाँ से आया है और उस शब्द की व्याख्या कितने रूप में की जा सकती है आदि। जैसे, आचार्य बच्चू लाल अवस्थी कृत 'तुलसी शब्दकोश' में 'ममता' शब्द की व्याख्या निम्नलिखित में रूप में की गई है :

> **ममता –** सं.स्त्री. (सं.) (1) आत्मीयता, मेरेपन की भावना जो स्नेह, कृपा आदि से होती है – सात्विक निजत्व। 'जेहि जन पर ममता अति छौहू।' मानस – 1.13.6 (2) राग, विषयों के प्रति राजस-तामस स्वत्व भावना। 'ममता केहि कर जस न नसावा।' मानस – 7.71.21 (पृ. 843)

इसी प्रकार, आशा किशोर अपने 'जायसी कोश' के अंतर्गत 'करमुँही' शब्द की व्याख्या करते हुए कहते हैं :

> **करमुँही –** (वि.) (दे.) – काले मुँह वाला, कलंकित, जिसके मुख में कालिख लगी हो। 'जनु घुँघची ओहि तिल करमुँही। बिरह बान साधे सामुही।।' (जायसी ग्रंथावली, नख-शिख खंड, पृ. 59)

इस तरह हम कह सकते हैं कि इन कोशों में व्याकरणिक अर्थ और प्रयोग आदि से संबंधित जानकारियाँ दी जाती हैं। इस प्रकार के कोश कवि अथवा साहित्यकार की मूल संवेदना को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

कुछ अन्य ऐसे कोश हैं – डॉ. भोलानाथ तिवारी कृत 'तुलसी शब्द सागर', प्रेम नारायण टंडन कृत 'सूर ब्रजभाषा कोश', डॉ. हरदेव बाहरी कृत 'प्रसाद साहित्य कोश', रमेश पारीक कृत 'मधुमालती संदर्भ कोश', ललित शुक्ल कृत 'पद्‌मावत संदर्भ कोश', आचार्य परशुराम चतुर्वेदी कृत 'कबीर कोश' और डॉ. देशराज सिंह भाटी कृत 'अज्ञेय काव्य कोश' आदि।

व्यक्ति एवं कृति कोश के अंतर्गत 'साहित्य कोश' भी शामिल हैं। इनमें एकाधिक भाषा के साहित्य, साहित्यकारों, विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों आदि से संबंधित जानकारी दी जाती है। साहित्यानुवाद में ऐसे कोश सबसे अधिक उपयोगी होते हैं। किसी विशिष्ट साहित्यधारा में अथवा साहित्यिक रचना में विशिष्ट शब्दावली अथवा अवधारणा को प्रयोग में लाया जाता है। उसकी जानकारी प्राप्त किए बिना उस शब्द का सटीक अनुवाद नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, यदि जयशंकर प्रसाद के काव्य के संदर्भ में Romanticism का अनुवाद करना है तो उसका अनुवाद 'रोमानवाद' नहीं, बल्कि प्रसाद के चिंतन के अनुरूप 'स्वच्छंदतावाद' होगा। इस शब्द की पूरी पृष्ठभूमि एवं उससे संबंधित पूरा मत प्रसाद साहित्य के कोश द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

साहित्य कोश के अंतर्गत व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है तथा कवि, साहित्यकार अथवा अवधारणा को उदाहरण एवं मत सहित व्याख्यायित किया जाता है। हिंदी में ऐसे अनेक कोश बनाए गए हैं, जिनमें व्याख्यात्मक रीति के द्वारा अवधारणा, कवि अथवा साहित्यकार को स्पष्ट किया गया है। डॉ. धीरेंद्र वर्मा द्वारा दो भागों में संपादित 'हिंदी साहित्य कोश'; डॉ. प्रेमनारायण टंडन द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्यकार कोश'; डॉ. गोपाल राय द्वारा दो खंडों में प्रकाशित 'हिंदी उपन्यास कोश' ऐसे ही विशिष्ट कोश हैं। डॉ. सुरेश गौतम एवं वीणा गौतम द्वारा वर्ष 2008 में तीन खंडों में 'भारतीय साहित्य कोश' का संपादन किया गया है जिसमें हिंदी भाषा के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों, विदेशी भाषा, संस्कृत भाषा तथा विविध अनुशासनों के साहित्य से संबंधित अवधारणाओं को स्पष्ट किया गया है। यह एक व्याख्यापरक कोश है जिसमें विविध अवधारणाओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

2.8.4 पुराण एवं मिथक कोश

पुराण और मिथक कोश से अभिप्राय ऐसे कोशों से है जिसमें धर्म, अध्यात्म और पौराणिक-सांस्कृतिक जानकारियाँ दी जाती हैं। इन कोशों में धर्म, संस्कृति अथवा पुराण से संबंधित व्यक्तित्वों, संकल्पनाओं और मतों को वर्णक्रम के अनुसार संकलित करके उनकी व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के कोशों में पुराण और मिथक की जानकारी ही नहीं प्राप्त हो जाती बल्कि उनसे संबंधित विविध मतों और पुरा कथाओं को भी जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'पुराण कथा कोश' में डॉ. रामशरण गौड़ ने 'चंद्र' की व्याख्या करते हुए उनसे संबंधित विभिन्न आख्यानों और मतों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। डॉ. गौड़ लिखते हैं कि चंद्र ग्रह होने के साथ-साथ हिंदुओं का एक देव

भी है जिनसे जुड़ी विविध पौराणिक कथाएँ उनके पूर्ण स्वरूप को प्रकट करती है। पाठक अथवा अनुवादक का अब यह दायित्व बनता है कि अपने संदर्भ के अनुरूप वह 'चंद्र' को समझकर उसकी व्याख्या का अनुवाद करे।

साहित्यिक और सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों के अनुवाद में तो पौराणिक-मिथक कोश सर्वाधिक उपयोगी एवं आवश्यक माने गए हैं। नारद, विभीषण, राम, हरकुलियन, भगीरथ आदि धर्म-संस्कृति के व्यक्तित्व तथा 'माया', 'मोक्ष', 'आत्मा', 'परमात्मा', 'जीवन' आदि सांस्कृतिक संदर्भों के मान है। इनकी व्याख्या अथवा इनसे संबंधित अनुवाद में धर्म-संस्कृतिपरक कोश लाभदायक रहते हैं। यही नहीं, भारतीय पुराकथाओं, धार्मिक नायकों आदि को स्पष्ट रूप से समझने के संदर्भ में पुराण और मिथक कोश का अध्ययन बहुत जरूरी है।

कुछ प्रमुख पुराण एवं मिथक कोश हैं – अरुण द्वारा संपादित 'धर्म और संस्कृति कोश', राणाप्रसाद शर्मा द्वारा संपादित 'पौराणिक कोश', डॉ. रामशरण गौड़ द्वारा संपादित 'पुराण कथा कोश', राजबली पांडेय कृत 'हिंदू धर्म कोश', डॉ. उषा पुरी कृत 'भारतीय मिथक कोश', वेट्टम मणि (Vettam Mani) कृत 'Puranic Encyclopaedia'; कमल नसीम कृत 'ग्रीस पुराण कथा कोश' आदि।

2.8.5 विश्वकोश

विश्वकोश एक विशिष्ट कोश है जिसके कलेवर में किसी विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र से संबंधित संपूर्ण ज्ञान समाहित रहता है। यह एक ऐसा कोश है जिसमें शब्द का केवल अर्थ न देकर किसी विषय-विशेष से संबंधित व्यापक और विविधतापूर्ण जानकारी शामिल की जाती है। इसमें शब्द आदि को अकारादिक्रम में या फिर आवश्यकता के अनुसार विषय के क्रम में शामिल किए जाते हैं। कोश में दी जाने वाली जानकारी व्याख्यात्मक रूप में दी जाती है जिसे विषय के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखवाया जाता है। विश्वकोश निर्माण और उसकी सामग्री संकलन में संपादक की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि यह सामान्य शब्दों का संकलन मात्र नहीं है। संपादक अपने उद्देश्य, पाठकों की अभिरुचि और आवश्यकता के अनुसार ही विश्वकोश की योजना बनाता है और उसी के अनुसार विषयों का चयन करता है। चयनित विषयों पर विषय-विशेषज्ञ लेख लिखते हैं जो संपादक द्वारा संपादित करके लेखक के नाम से ही कोश में संकलित किए जाते हैं। वस्तुतः विश्वकोश का मूल उद्देश्य संसार के प्रायः प्रत्येक वर्ग की वर्तमान और भावी पीढ़ी को विषय से संबंधित हर प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराना है। विश्वकोश, साहित्य कोश के समान ही विषय एवं अवधारणा से संबंधित संपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। इसलिए अनुवाद कर्म के लिए विश्वकोश पूरी तरह उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक हैं।

अंग्रेजी में विश्वकोश का निर्माण सर्वाधिक मात्रा में किया गया है। Encyclopaedia Britanica, American Encyclopaedia, Collin's Encyclopaedia, Sociology Encyclopaedia आदि आज इतने प्रसिद्ध हो चुके हैं कि देश के लगभग सभी पुस्तकालयों में भी इन्हें रखा जाता है। डॉ. नगेंद्र बसु तथा डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र द्वारा पाँच खंडों में 'हिंदी विश्वकोश' उपलब्ध है। यही नहीं, आजकल विषय-विशेष अथवा अवधारणाओं से संबंधित विश्वकोश भी प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, डॉ. कमल किशोर गोयनका द्वारा संपादित 'प्रेमचंद विश्वकोश', प्रो. रमेश जैन द्वारा संपादित 'जनसंचार विश्वकोश' आदि। इसी प्रकार, डॉ. धर्मपाल मैनी द्वारा संपादित हिंदी का पहला 'मानव मूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोश' का भी उल्लेख किया जा सकता है। डॉ. मैनी के पाँच खंडों के इस बृहत विश्वकोश में लगभग डेढ़ सौ विद्वानों ने लेखन किया तथा 800 जीवन-मूल्यों को इस कोश में व्याख्यायित किया है। इसी प्रकार, वेट्टम मणि का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिन्होंने 'Puranic Encyclopaedia' का संपादन कर वैदिक कथाओं का बड़ा ही आकर्षक और गहन विश्वकोश तैयार किया है।

2.9 उपयोग के आधार पर कोशों के प्रकार

भाग 2.2.8 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि उपयोग के आधार पर भी कोशों को (1) मुद्रित कोश, (2) कंप्यूटर कोश; और (3) ऑनलाइन कोशों में वर्गीकृत किया जा सकता है। आइए अब हम इन तीनों प्रकार के कोशों के बारे में संक्षेप में जानकारी हासिल करें।

2.9.1 मुद्रित कोश

मुद्रित रूप में तैयार और उपलब्ध सभी कोश 'मुद्रित कोश' की श्रेणी में शामिल किए जाते हैं। ये वे कोश होते हैं जिनमें प्रकाशित रूप में शब्दों का संकलन होता है। इस इकाई में अब तक जितने भी कोशों की चर्चा की जा

चुकी है, वे सभी मुद्रित कोश ही हैं। चूँकि इन पर पहले ही विस्तार से चर्चा की जा चुकी है, इसलिए यहाँ उन पर विचार नहीं किया जा रहा है।

2.9.2 कंप्यूटर कोश

आज के यांत्रिक युग में कंप्यूटर का महत्त्व लगातार बढ़ रहा है। कंप्यूटर के माध्यम से विविध प्रकार की सामग्री सरलतापूर्वक प्राप्त हो जाती है। कंप्यूटर में उपलब्ध शब्दों का क्रम में संकलन 'कंप्यूटर शब्दकोश' कहलाता है। इसका प्रयोग मशीनी अनुवाद और सामान्य, दोनों रूपों में ही किया जाता है। वैसे तो मशीनी अनुवाद की संकल्पना काफी पुरानी है, जिस पर कार्य 1933 में ही पूर्व सोवियत संघ के इंजीनियर सिमनौव त्रयोनस्की ने कर दिया था लेकिन इसका वास्तविक आरंभ 1954 से माना गया है। मशीनी अनुवाद का कार्य व्यवस्थित रूप से सबसे पहले अमेरिका के न्यूयॉर्क राज्य के जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय तथा आई.बी.एम. कंपनी के गणितज्ञों और इंजीनियरों द्वारा शुरू किया गया था। 1970 के बाद से इस दिशा में काफी गंभीर प्रयास होने लग गए थे। आज के युग में तो इससे संबंधित अनेक कार्य हो रहे हैं। मशीनी अनुवाद का सबसे कुशल उपकरण 'कंप्यूटर शब्दकोश' ही है। मुद्रित रूप में शब्दकोश का निर्माण करने वाले सभी प्रकाशक आज 'कंप्यूटर शब्दकोश' का निर्माण कर रहे हैं। इन शब्दकोशों में शब्द का मानक वर्तनी रूप, उसका सामान्य अर्थ, प्रयोग बहुलता आदि की जानकारी दी जाती है। इस संदर्भ में आजकल बड़ी मात्रा में मेडिकल डिक्शनरी, लॉ डिक्शनरी, लीगल डिक्शनरी आदि मिल रही हैं। इसके अलावा, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी, कैम्ब्रिज डिक्शनरी भी कंप्यूटर पर उपलब्ध हैं, जिन्हें 'कंप्यूटर कोश' के अंतर्गत देखा जा सकता है।

2.9.3 ऑनलाइन कोश

आज के सूचना प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर के युग ने अनुवाद को जो एक विशिष्ट उपकरण दिया है, वह है – ऑनलाइन शब्दकोश । आज स्थिति यह है कि शब्दकोश इंटरनेट के जरिए भी उपलब्ध हो रहे हैं। 'ऑनलाइन' शब्द का अर्थ है – इंटरनेट के जरिए सुविधा की उपलब्धता। अगर हम ऑनलाइन कोश की बात करें तो इसका अभिप्राय उस शब्दकोश से है जो इंटरनेट के जरिए उपलब्ध हो। वैसे तो कोश, मुद्रित रूप में और कंप्यूटर पर प्रकाशक की साइट पर या सॉफ्टवेयर के रूप में उपलब्ध होते हैं। लेकिन इंटरनेट के क्षेत्र में विकास के परिणामस्वरूप इंटरनेट के जरिए भी शब्द एवं उसके अर्थ की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

ऑनलाइन पर एकभाषी ही नहीं, द्विभाषी कोश भी प्राप्त होते हैं। ऑनलाइन में शब्दकोश की सुविधा 'गूगल', 'हिंद खोज' आदि द्वारा भी प्राप्त की जा सकती है। हिंदी कोश पर अभी काफी कार्य बाकी हैं, किंतु अंग्रेजी में इस प्रकार के अनेक शब्दकोश प्राप्त हो रहे हैं। इस संबंध में वेबसाइट पर ही जाना काफी है। ऑनलाइन शब्दकोश में शब्दार्थ तो मिल जाता है किंतु पारिभाषिक शब्दों की जानकारी का अभाव रहता है। इसलिए यदि इस संबंध में कार्य किया जाए तो अनुवादकों को और भी लाभ प्राप्त हो सकेगा। www.shadkosh.com एक विशिष्ट ऑनलाइन शब्दकोश है।

2.10 कोश-निर्माण परंपरा

कोश का स्वरूप अत्यंत प्राचीन एवं विविधता वाला है। यह ज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है जिसका आरंभिक रूप संस्कृत साहित्य से ही प्रकाश में आ गया था। कोश की अपनी एक सुदीर्घ परंपरा है, जिसे अलग-अलग भागों में विभाजित करके देखा जा सकता है।

2.10.1 संस्कृत कोश-निर्माण परंपरा

कोशों की परंपरा का महत्त्वपूर्ण आदि रूप संस्कृत वाङ्मय में ही देखा जा सकता है। यह लेखन परंपरा **वैदिक साहित्य** और **लौकिक साहित्य** से जुड़ी हुई है।

संस्कृत साहित्य का आरंभिक ग्रंथ वेद है तथा वैदिक संहिताओं के अनेक स्थल शब्दकोश की दृष्टि से अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद के दशम मंडल के 'यक्ष्मा सूक्त' में मानव शरीर के विविध अंगों का उल्लेख है जो कि कोशकार की पद्धति पर दिए गए शब्दों के समान व्यवस्थित हैं। यजुर्वेद में अनेक प्रकार के वर्ष, बारहमासों के वैदिक नाम क्रम से प्रस्तुत किए गए हैं। यही नहीं, यजुर्वेद के 24वें अध्याय में 609 जातियों के पशुओं अथवा जीवों का उल्लेख है तथा तीसवें अध्याय में पुरुषमेघ के संदर्भ में सौ से ऊपर व्यवसायियों के नाम हैं। किंतु विद्वानों के मतानुसार वैदिक वाङ्मय का सबसे प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण कोश यास्क कृत 'निघंटु' है।

'निघंटु' एक शब्द संग्रह है जिसमें वैदिक संहिताओं के कठिन 1767 शब्दों को संकलित किया गया है। यास्क के अनुसार 'निघंटु' वह है जिसमें पर्याय धातुओं, पर्याय शब्दों, अनेकार्थी शब्दों तथा देवताओं के नामों का संग्रह है। यह कोश वैदिक संहिताओं के कठिन शब्दों की व्याख्या करता है। यास्क ने वैदिक संहिताओं में प्रयुक्त कुछ पदों की पर्यायवाची क्रम से सूची 'निघंटु' में दी है, जबकि कुछ पदों की निरुक्तियाँ 'निरुक्त' में दी हैं। 'निरुक्त' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस ग्रंथ में उल्लिखित निरुक्तियाँ वैदिक अर्थों को जानने की एक नई पद्धति आरंभ करती हैं। यास्क कृत 'निरुक्त' ग्रंथ बारह अध्यायों में विभाजित है तथा प्रत्येक अध्याय के लगभग तीन से सात पद हैं। 'निरुक्त' के ये बारह अध्याय तीन कांडों में विभाजित किए गए हैं – नैघंटुक (1-3), नैगम (4-6), दैवत (7-12)। 'निरुक्त' की मुख्य टीकाएँ स्कंदस्वामी, देवराज यज्वा तथा दुर्ग द्वारा रचित हैं।

वैदिक शब्दों के संकलन की प्रवृत्ति वैदिक साहित्य के पश्चात **लौकिक साहित्य** में भी विस्तार पाने लगी। लौकिक संस्कृत का सबसे महत्त्वपूर्ण कोश 'अमरकोश' है। यह इस काल का इतना महत्त्वपूर्ण कोश है कि इस पूरे काल को तीन भाग में बाँटा गया – (क) अमरकोश पूर्व काल, (ख) अमरकोश काल; तथा (ग) अमरकोश पश्चात काल।

(क) अमरकोश पूर्वकाल में अमरकोश से संबंधित कुछ टीकाएँ प्राप्त होती हैं। इन टीकाओं में पहला प्रमुख नाम व्याडि का आता है, जिन्होंने समानार्थक शब्दों का संकलन कर कहीं-कहीं उनका निवर्चन संबंधी विश्लेषण भी किया। इस कोश में बौद्ध धर्म संबंधी कुछ तथ्यों का भी विश्लेषण किया गया है। कुछ विद्वान इस ग्रंथ का नाम उत्पीलनी मानते हैं।

तत्पश्चात भामुरि कृत 'त्रिकाण्ड' ग्रंथ प्राप्त होता है जिसमें मात्र समानार्थक शब्दों का संकलन है। इसके अतिरिक्त, अमरदत्त कृत 'अमरमाला', वाचस्पति कृत 'शब्दार्णव', विक्रमादित्य कृत 'संसारवर्त', महाक्षपणक कृत 'अनेकार्थ मंजरी' आदि कोश प्राप्त होते हैं। इन कोश ग्रंथों में शब्दों के पर्याय; कुछ में व्युत्पत्ति द्वारा अर्थ संकेत; अर्थ का व्यापक चित्रण; धातु-जानकारी; शुद्ध वर्तनी तथा शब्द-वर्गीकरण देखा जा सकता है। किंतु ये सभी ग्रंथ आज अनुपलब्ध है।

(ख) अमरकोश काल का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं व्यवस्थित कोश अमरसिंह कृत 'अमरकोश' है। इस बृहद कोश में लगभग दस हजार शब्द संकलित है जिसे विभिन्न तीन कांडों में सज्जित किया गया है। अमरसिंह ने इस कोश का नाम 'लिंगानुपात' रखा था, लेकिन यह 'अमरकोश' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अमरकोश के शब्द संकलन में पर्यायवाचकों, वनौषधि वर्ग, लिंगादि संग्रह वर्ग, नाट्य वर्ग, सिंहादि वर्ग, मनुष्य वर्ग आदि का उल्लेख किया गया है। यह पूर्ण रूप से अनुष्टुप छंद में रचित है। इसकी प्रस्तावना में कुछ नियम बना दिए गए हैं जिससे कोश की रचना पद्धति का ज्ञान होता है और कोश संबंधी विशेष संकेतों का पता चलता है। इस कोश पर सत्तर से अधिक व्याख्याएँ भी लिखी गई हैं।

(ग) अमरकोश परवर्ती काल में 'अमरकोश' का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। इस काल में नानार्थ एवं एकार्थ कोश अधिक लिखे गए। शाश्वत ने 'अनेकार्थ समुच्चय' नामक कोश की रचना की, जिसके कई लोक और लोकार्थ 'अमरकोश' के समान ही थे।

2.10.2 पालि, प्राकृत और अपभ्रंश में कोश-निर्माण परंपरा

संस्कृत लौकिक साहित्य की परंपरा के साथ-साथ पालि और उसके पश्चात प्राकृत की एक सुदृढ़ परंपरा चल रही थी।

'पालि भाषा' को मुख्यतः बुद्ध वचनों की रक्षा की भाषा कहा जाता है। 'महाव्युत्पत्ति कोश' पालि भाषा का प्रमुख कोश है जिसमें 284 प्रकरणों में विभक्त लगभग नौ हजार शब्दों में बौद्ध धर्म की अवधारणाओं के साथ-साथ पशुओं, वनस्पतियों तथा रोगों आदि का भी उल्लेख मिलता है। इन कोशों में मुहावरों का संकलन देखा जा सकता है। पालि के प्रमुख कोश हैं – सद्धम्मकित्ति कृत 'एक्कखर कोश', मोग्गलान कृत 'धातु पाठ'; सद्धनीति कृत 'धातुमाला'; हिंगुलबल जिनरतन कृत 'धात्वत्थदीपनी' आदि।

पालि के पश्चात **प्राकृत कोशों** में जैन मत देखने को मिलता है। प्राकृत कोशों में सबसे प्राचीन कोश धनपाल द्वारा रचित 'पाइयलच्छिनाममाला' (972 ई.) का उल्लेख किया जाता है जिसमें तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के संकलन के अलावा 279 गाथाएँ भी शामिल की गई हैं। इसके अलावा, हेमचंद्र द्वारा रचित 'देशीनाममाला' कोश प्राप्त होता है जिसमें संकलित शब्दों का संस्कृत में अर्थ दिया गया है। इसमें शब्दों का संकलन जनभाषा प्राकृत

के आधार पर किया गया है। आचार्य हेमचंद्र ने अपने कोश में धनपाल, देवराज, गोपाल, द्रोण आदि विद्वानों का उल्लेख किया है, किंतु ये कोश ग्रंथ प्रायः अनुपलब्ध हैं।

प्राकृत भाषा में कोशों के अतिरिक्त 'चूर्णी साहित्य' भी मिलता है। चूर्णी साहित्य मूल रूप से गद्य कथाएँ हैं जिनमें कथा संकलन के साथ शब्दों की व्युत्पत्ति भी दी गई है। चिनदासमणि कृत 'आचारंग चूर्णी' तथा 'निशिथ' प्रमुख चूर्णी साहित्य है।

पालि के पश्चात **अपभ्रंश साहित्य** में कोशों की रचना नगण्य रही है।

2.10.3 हिंदी कोश-लेखन परंपरा

हिंदी साहित्य के इतिहास को अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल के रूप में विभाजित करके देखा जाता है। हम हिंदी कोश लेखन की परंपरा को भी इसी आधार पर वर्गीकृत करके देख सकते हैं। उस दृष्टि से हिंदी कोश-लेखन परंपरा इस प्रकार है:

(क) आदिकालीन हिंदी कोश-निर्माण परंपरा : हिंदी साहित्य के आरंभिक या आदिकालीन भाग तक कोशों की परंपरा पूर्ववत रूप में ही मिलती है। आदिकाल में संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा के कोश प्राप्त होते हैं। इस काल में विशेष तौर पर संस्कृतपरक कोश दिखलाई दे रहे थे। उदाहरण के लिए, 850 ई. में रचित जयशंकर जोशी कृत 'अभिधान रत्नमाला' (जो बाद में 'हलायुध कोश ' के नाम से जाना गया); 1100 ई. में रचित 'वैजयंती कोश'; माधवकर कृत 'पर्यायमाला' (700 ई.); महाक्षपणक कृत 'अनेकार्थ ध्वनिमंजरी' (900 ई.); चक्रपाणि कृत 'शब्द चंद्रिकाण्ड' (1060); धनंजय कृत 'नाममाला' (1123); धरणीधर कृत 'धरणी कोश' (1159); मेदिनीकर द्वारा रचित 'मेदिनी कोश' (1275) आदि। इस प्रकार के विशिष्ट कोशों का विकास मध्यकालीन एवं आधुनिक काल में व्यापक रूप में देखने को मिलता है।

(ख) मध्यकालीन कोश-लेखन परंपरा : मध्यकाल अर्थात 13वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के दौरान की अवधि में अनेक छोटे-बड़े कोशों का निर्माण हुआ। इस काल में कुछ प्रमुख कोश देखे जा सकते हैं जो कोश-परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कोश हैं – नंददास कृत 'नाममाला', 'अनेकार्थ मंजरी'; नारायण सिंह भाटी कृत 'डिंगल कोश'; गरीबदास कृत 'अनभै प्रबोध'; गिर्जा खाँ कृत 'तुहफतुल हिंदी'; रत्नजीत कृत 'भाषा धातुमाला'; खुसरो कृत 'खालिक बारी'; किशन सिंह कृत 'क्रिया कोश'; नवलसिंह प्रधान कृत 'नाम चिंतामणि' आदि। ये सभी कोश अमरकोश से प्रभावित होकर संपादित किए गए हैं। यही नहीं इन कोशों में अमरकोश के समान पद्य में ही शब्द संकलित किए गए हैं। साथ ही इन कोशों में वर्णानुक्रम का प्रयोग भी पाया जाता है। उदाहरण के तौर पर 'भाषा धातुमाला' में रत्नजीत ने वर्णानुक्रम का विशेष ध्यान रखा है। इसके अतिरिक्त गरीबदास द्वारा संपादित 'अनभै प्रबोध' पारिभाषिक शब्दकोश है जिसमें संत साहित्य में प्रयुक्त उलटबाँसियों और प्रतीकों आदि का संग्रह किया गया है। इसी श्रृंखला में मिर्जा खाँ द्वारा संपादित 'तुहफतुल हिंदी' कोश का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिसमें भिन्न पद्धति का सहारा लेते हुए इसे अध्याय एवं प्रकरण में विभाजित किया गया है।

मध्यकालीन कोश-परंपरा के अंतर्गत संस्कृत की पद्धति पर आधारित नाममाला एवं एकाक्षरी कोश अधिक संख्या में देखे जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, नंददास कृत 'अनेकार्थ नाममाला'; भगवती दास कृत 'अनेकार्थ नाममाला'; विनयसागर कृत 'अनेकार्थ नाममाला'; हरिदास कृत 'नाम निरूपण'; कुंवर कृत 'पारसपति नाममाला'; बद्रीदास कृत 'मानमंजरी नाममाला'; बीरभाण कृत 'एकाक्षरी नाममाला'; चरणदास कृत 'नाममाला'; प्रेमी यवन कृत 'अनेकार्थ नाममाला' आदि। हिंदी के उपर्युक्त कोशों में शीर्षक एवं वर्ग की जानकारी भी दी गई है। मध्यकालीन हिंदी कोशकार अपने कोशों में शब्द संकलन का मुख्य आधार संस्कृत के 'अमरकोश' एवं 'मेदिनी कोश' को मानते हैं। इस काल में लिंगपारायण कोशों की रचना नहीं हुई, किंतु कई कोशों में अंतिम वर्णानुक्रम का प्रयोग हुआ है। इस युग के अधिकांश कोश उच्चारण एवं वर्तनी के साथ-साथ शब्दों को परिभाषित करते हैं। इन कोशों में शब्दों का पर्याय रूप भी नजर आता है।

इस युग में अरबी-फ़ारसी के कोश भी संपादित हुए हैं। अकरबुल मुवारिद का 'लुगात एक गुजरी' महत्त्वपूर्ण कोश है। भारतीय मानसिकता को समझने के लिए अंग्रेजों द्वारा इसी युग में ही द्विभाषी कोश का सूत्रपात किया गया।

इस परिप्रेक्ष्य में सर्वप्रथम 1772 में हैडले ने 'उर्दू व्याकरण' लिखकर इसके परिशिष्ट में अंग्रेजी हिंदुस्तानी कोश लिखा है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इसे 'हिंदी-अंग्रेजी' का पहला द्विभाषी कोश माना है। इसके पश्चात जे. फर्ग्युसन कृत 'ए डिक्शनरी ऑफ द हिंदोस्तान लैंग्वेज इंग्लिश' (1773), हेनरी हैरिस कृत 'हिंदोस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी'; गिलक्रिस्ट द्वारा रचित 'ऑरियेंटल लिंग्विस्टिक' आदि रूपों में द्विभाषी कोशों की एक श्रृंखला सी बन गई, जो आधुनिक काल में विविध रूप में अनवरत रूप से बहने लगी।

(ग) आधुनिककालीन कोश-निर्माण परंपरा : 1800 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना ने समस्त भारतीय चिंतन को प्रभावित एवं परिवर्तित किया। इसके परिणामस्वरूप भाषा शिक्षण एवं नवीन विचारधारा से प्रभावित कोशों की रचना की जाने लगी। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अंग्रेजों द्वारा अनेक अंग्रेजी शब्द एवं अवधारणाएँ भारत में लाने के लिए कई कोशों का निर्माण किया गया। वहीं भारतीय विद्वान अंग्रेजी चिंतन से प्रभावित होकर संस्कृत चिंतन से बाहर निकलकर पाश्चात्य संकल्पनाओं को आत्मसात करने लगे। ऐसे में 1851 से लेकर 1947 तक यानी स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तक अनेक एकभाषी, बहुभाषी, पर्याय, विलोम, उत्पत्ति कोश आदि का निर्माण किया गया। हिंदी कोश परंपरा में इस काल को आधुनिक काल का **'आरंभिक या विकास काल'** कहा गया।

हिंदी कोश-लेखन परंपरा की इस विकास कालावधि में कोश की व्यापकता एवं महत्त्व लगातार बढ़ रहा था। इस काल में पहली बार शब्दार्थ के साथ-साथ विविध पर्यायों एवं परिभाषाओं को महत्त्व दिया जाने लगा था। इस काल के आरंभ के कुछ प्रमुख कोशों के नाम हैं – Dictionary, English Hindustani- शेबक; Dictionary, English and Hindi - मैथ्यू थॉमसन; A Pocket Dictionary of English and Hindustani - आर. एस. डोबी; An Anglo-Hindoostanee Dictionary- हैनेल ग्रेव; 'विश्वनाममाला'- सागर कवि; 'नामरत्नाकार बोध'- केसर कीर्ति; 'अनेकार्थ'- दयाराम त्रिपाठी आदि। उपर्युक्त सभी कोश 1850-1900 के मध्य के कोश हैं जिनमें भारतीय चिंतक अध्ययन की प्रवृत्ति से गुजर रहे थे। इस दौरान कोशकार पाश्चात्य दृष्टिकोण को आत्मसात कर रहे थे। इसलिए अब कोश की परिसीमा शब्दार्थ से उठकर बृहत स्वरूप ग्रहण कर रही थी। अब कोशकार जहाँ एक ओर सांस्कृतिक शब्दों को सर्वाधिक महत्त्व दे रहे थे तथा विविध भाषाओं के शब्दों का समन्वय कर वैविध्यपूर्ण शब्द संपदा बना रहे थे, वहीं दूसरी ओर सामान्य ज्ञान का विस्तार भी कर रहे थे। इस संदर्भ में प्रमुख कोश हैं – मथुरा प्रसाद मिश्र कृत 'अंग्रेजी-हिंदी उर्दू कोश', सदासुख लाल वर्मा कृत 'ऐंग्लो-हिंदोस्तानी कोश', रामप्रताप शर्मा कृत 'अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश'; रामनारायण लाल कृत 'स्टूडेंट्स प्रैक्टिकल डिक्शनरी इन देवनागरी केरेक्टर्स'; मुंशी मंगली लाल साहब कृत 'मंगल कोश'; द्वारकादास चतुर्वेदी कृत 'युगल कोश'; नवलजी कृत 'नालंदा विशाल शब्दसागर'; केदारनाथ भट्ट कृत 'रामायण कोश'; हरिशंकर शर्मा कृत 'हिंदुस्तानी कोश' आदि। इन कोशों की एक अन्य विशिष्टता यह भी है कि ये कोश टीम वर्क रूप में नहीं अपितु एक या दो व्यक्ति द्वारा कठिन परिश्रम से तैयार किए जाते रहे थे।

हिंदी कोश निर्माण परंपरा में एक टीम रूप में कोश निर्माण कार्य 1900 के बाद नजर आता है। स्वातंत्र्योत्तर काल आधुनिकता की चरम अवस्था की ओर अग्रसर काल था। स्वतंत्र भारत ने नई विषयभूमि निर्मित की, और यहाँ विभिन्न अनुशासनों एवं ज्ञान के नए वैविध्यपूर्ण स्रोत खुले। प्रशासन से लेकर आर्थिक जगत तक, राजनीति से लेकर समाज व्यवस्था तक तथा धर्म-अध्यात्म-दर्शन से लेकर भौतिकवादी चिंतन तक नए-नए शब्द, संकल्पनाएँ या पारिभाषिक शब्द सामने आने लगे। शब्द की आर्थी व्यवस्था विकसित हुई तथा तकनीकी-पारिभाषिक शब्दावली की भरमार होने लगी। इसी अवधि के दौरान ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। हिंदी सांस्कृतिक समन्वय की भाषा बनी और हमने नवीन समाज की ओर कदम रखा। ऐसे में अनेक द्विभाषी, बहुभाषी, पारिभाषिक, साहित्यिक एवं विश्वकोशों का निर्माण किया जाने लगा। कोश-परंपरा का यह काल **उत्कर्ष काल** माना जाता है जिसमें टीम वर्क के रूप में एक निश्चित प्रक्रिया द्वारा कोशों का निर्माण किया गया। अब व्याकरण, उच्चारण, वर्तनी, चित्र, आरेख, व्युत्पत्ति, अर्थ, प्रयोग, लोकोक्ति-मुहावरे आदि का संकलन कर कोशों का निर्माण किया जाने लगा। कोश ज्ञानकोश, पदकोश, पारिभाषिक कोश, समांतर कोश, विश्वकोश, पर्याय कोश, व्यक्ति/कृति कोश आदि अनेक रूपों में संपादित होने लगा। कोश की यह अनेकरूपता अब विशिष्ट स्थान रखती है।

1950 के बाद के कोशों में विभिन्नता के दर्शन किए जा सकते हैं। इस काल के प्रमुख कोश इस प्रकार हैं – डॉ.

हरदेव बाहरी कृत 'बृहत् हिंदी-अंग्रेजी कोश', डॉ. रत्नप्रकाश कृत 'बृहत् अंग्रेजी-हिंदी कोश'; फादर कामिल बुल्के कृत 'अंग्रेजी-हिंदी कोश'; कालिका प्रसाद कृत 'बृहत हिंदी कोश'; रामचंद्र वर्मा कृत 'प्रामाणिक हिंदी कोश'; ब्रजकिशोर कृत 'राष्ट्रभाषा कोश'; कृष्ण मोहन गुप्त कृत 'संक्षिप्त हिंदी प्रामाणिक कोश'; भोलानाथ तिवारी कृत 'बृहत पर्यायवाची कोश'; बद्रीनाथ कपूर कृत 'शब्द परिवार कोश'; नरोत्तम स्वामी कृत 'राजस्थानी कहावतें'; राम स्वरूप शास्त्री कृत 'आदर्श हिंदी-संस्कृत कोश'; अरविंद कुमार कृत 'समांतर कोश'; डॉ. पूरनचंद टंडन और डॉ. हरीश कुमार सेठी कृत 'सृष्टि हिंदी शब्दकोश' आदि। वर्तमान समय में विविध एवं व्यापक रूप में कोश कार्य हो रहा है तथा कोश के विविध रूप अनुवाद के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विविध अनुशासनों से संबंधित कोश तैयार किए गए हैं और तैयार किए जा रहे हैं जिससे अनुवाद कर्म सुगम-सा प्रतीत होता है।

2.11 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करके आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि कोश एक विशिष्ट कला एवं विज्ञान का नाम है। उद्देश्य, भाषा, प्रविष्टि, काल, अर्थ, प्रविष्टि-क्रम, विशिष्ट दृष्टिकोण तथा उपयोग आदि अनेक आधारों को ग्रहण करके कोश-कर्म विविध रूपों अथवा प्रकारों में हमारे सामने आता है। उद्देश्य के आधार पर कोश के प्रकार पर विचार किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर कोशकार अपनी दृष्टि-विशेष को केंद्र में रखता है वहीं भाषा के आधार पर भाषा की प्रकृति और संख्या को ध्यान में रखा जाता है। प्रविष्टि से सामग्रीपरक चिंतन हमारे सामने आती है, वहीं अर्थ के आधार पर कोश-रूपों में विविध आर्थी व्यंजना को महत्त्व दिया जाता है। काल की सीमाएँ भी कोश का निर्माण कराती हैं जबकि विशिष्ट दृष्टि को ध्यान में रखकर भी कोशों का संपादन किया जाता है। कोश मुद्रित रूप में तो उपलब्ध होते ही हैं, वहीं सूचना प्रौद्योगिकी और विशेष तौर कंप्यूटर के विकास के कारण कंप्यूटर कोश एवं ऑनलाइन कोशों के रूप में भी सहयोगी बनते हैं।

इकाई के दूसरे पक्ष, यानी कोश-निर्माण परंपरा का अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि यह पूरी परंपरा किन विशिष्टताओं से युक्त रही है। आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि इस परंपरा ने कब-कब और किस प्रकार अपने विविध रूपों को धारण किया है।

2.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. कोशों के वर्गीकरण के विभिन्न आधारों पर प्रकाश डालिए।
2. उद्देश्य और भाषा के आधार पर कोशों के प्रकार की व्याख्या कीजिए।
3. विशिष्ट दृष्टिकोण और उपयोग के आधार पर कोशों को कितने भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है? संक्षिप्त परिचय देते हुए स्पष्ट कीजिए।
4. संस्कृत कोश लेखन की परंपरा पर संक्षेप में विचार व्यक्त कीजिए।
5. मध्यकालीन हिंदी कोश-निर्माण परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
6. आधुनिककालीन हिंदी कोश-निर्माण परंपरा पर किनका प्रभाव सर्वाधिक रहा?

2.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- कत्रे, सुमित्र मंगेश (अनु. सरोजिनी शर्मा), 1980. *कोशविज्ञान,* आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।
- कुमार, सुरेश (संपा.) 1983. *कोश निर्माण : सिद्धांत और परंपरा,* आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान।
- तिवारी, भोलानाथ, 1987. *कोशविज्ञान,* दिल्ली, शब्दकार।
- जखमोला, अचलानंद, *हिंदी कोश साहित्य,* इलाहाबाद, हिंदी परिषद।
- 'अनुवाद', (कोश विशेषांक), अंक 94-95, जनवरी-जून 1998, नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- तनेजा, विनोद कुमार, (सं.), कश्फ पत्रिका, कोश विशेषांक, अमृतसर, विभोर प्रकाशन।

इकाई 3 कोश उपयोग की प्रविधि

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 कोश उपयोग : प्रविधि और प्रक्रिया का संदर्भ

3.2.1 प्रक्रिया से अभिप्राय

3.2.2 प्रविधि से अभिप्राय

3.2.3 कोश उपयोग के संदर्भ में प्रक्रिया और प्रविधि में अंतर

3.3 कोश उपयोग में संकेत प्रणाली की भूमिका एवं महत्त्व

3.4 कोशों में प्रयुक्त संकेत चिह्नों के वर्ग

3.4.1 मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न

3.4.2 संक्षिप्ताक्षरों पर आधारित संकेत चिह्न

3.4.3 विशिष्ट संकेत चिह्न

3.5 कोश उपयोग की प्रविधि

3.5.1 वर्णक्रम

3.5.2 व्याकरणिक कोटि

3.5.3 संदर्भ-सापेक्षता एवं अन्य जानकारियाँ

3.6 कोश में शब्द ढूँढने का तरीका

3.7 सारांश

3.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कोश उपयोग में संकेत प्रणाली की भूमिका एवं महत्त्व को जान सकेंगे;
- कोशों में प्रयुक्त संकेत-चिह्नों तथा संक्षिप्ताक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे;
- वर्णक्रम व्यवस्था, व्याकरणिक कोटि, प्रयोग संदर्भ, उनसे जुड़ी अभिव्यक्तियों, शुद्ध उच्चारण, सही वर्तनी आदि के विषय में जान सकेंगे; और
- कोश में शब्द ढूँढने के तरीके से परिचित हो सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

इकाई 2 में आपने विविध प्रकार के कोशों के विषय में जानकारी प्राप्त की। इसे पढ़ने के बाद आपको यह स्पष्ट हो चुका होगा कि शब्दकोश के अतिरिक्त विश्वकोश, विषय कोश, पर्याय कोश, उद्धरण कोश आदि अनेक प्रकार के कोश हैं, जिनका प्रयोग शिक्षण, शोध, पत्रकारिता, अनुवाद आदि क्षेत्रों में सहायक सिद्ध होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोश के द्वारा सामान्य व्यक्ति भाषा-ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अब आपको यह स्पष्ट हो चुका है कि किस कोश को किस समय देखना उपयोगी रहता है।

कोश का निर्माण करते समय कोशकार एक विशेष पद्धति अपनाता है। उस पद्धति को वह प्रयोक्ता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए कोश की भूमिका में स्पष्ट कर देता है। कोश का उपयोग करने से पहले व्यक्ति को उसकी भूमिका

को अवश्य पढ़ लेना चाहिए, ताकि कोश की संरचना, उसमें प्रयुक्त विशिष्ट संकेतों एवं उसकी पद्धतियों को भली प्रकार से समझा जा सके। ऐसा करने पर व्यक्ति द्वारा कोश में अपेक्षित जानकारी कम समय में और सुगमता से जान पाना संभव हो जाता है और वह कोश का भरपूर लाभ उठा पाता है। इन सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए कोश उपयोग की प्रविधि की इस इकाई में जानकारी दी जा रही है।

इस इकाई में आपको 'कोश उपयोग की प्रविधि' से परिचित कराते हुए अंग्रेजी और हिंदी के शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का अभ्यास भी कराया जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि इकाई में कोश के उपयोग की प्रविधि को ध्यान में रखते हुए हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का भरपूर अभ्यास करें। **कृपया यह ध्यान रखें कि सत्रांत परीक्षा में अंग्रेजी और हिंदी के चयनित शब्दों को वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे।** उस स्थिति में आपके द्वारा किए गए अभ्यास उन प्रश्नों को हल करने में मददगार सिद्ध होंगे।

3.2 कोश उपयोग : प्रविधि और प्रक्रिया का संदर्भ

कोश का उपयोग करने की एक निश्चित प्रविधि है। कोश के सार्थक उपयोग के लिए इस प्रविधि को जानना आवश्यक है। अनुवाद कार्य करने वालों के लिए इसकी जानकारी विशेष तौर पर महत्त्वपूर्ण है। जब हम 'कोश उपयोग की प्रविधि' कहते हैं तो सबसे पहले यही विचार उभरता है कि 'प्रविधि' शब्द से क्या तात्पर्य है और क्या यह 'प्रक्रिया' शब्द का समानार्थक है अथवा इन दोनों में कोई अंतर है?

3.2.1 प्रक्रिया से अभिप्राय

'प्रक्रिया' संस्कृत का शब्द है। 'प्र' उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से इयङ् प्रत्यय और स्त्रीलिंग का टाप् प्रत्यय लगकर 'प्रक्रिया' शब्द बना है, जिसका अर्थ है – 'प्रकृष्ट क्रिया'। 'प्रक्रिया' एक क्रिया, प्रणाली अथवा पद्धति है, जिसे कोशकार कोश का निर्माण करते समय अपनाता है। यह एक बार में भी संपन्न हो सकती है और कई चरणों से गुजरकर भी। यदि कोश निर्माण के संदर्भ में ही 'प्रकिया' को देखें तो यह कहा जा सकता है कि विभिन्न क्षेत्रों से सामग्री का संकलन, प्राप्त सामग्री में से प्रविष्टि का चयन, उसका संपादन-संशोधन, अर्थ-निर्धारण, क्रमानुसार संयोजन आदि चरण शामिल हैं। कोश निर्माण की इस प्रक्रिया के बारे में आप इसी पाठ्यक्रम (एम.टी.टी-017) की इकाई 4 में विस्तार से अध्ययन करेंगे। यहाँ संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि प्रत्येक शब्दकोश को एक निश्चित प्रक्रिया में तैयार करके प्रस्तुत किया जाता है। जैसे प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति, धातु, प्रत्यय, अन्य भाषाओं के समशब्द, अर्थ, मुहावरे, उदाहरण एवं यथास्थान पर्याय दे देना। इसे हम एक उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित 'मानक हिंदी कोश' की निम्नलिखित प्रविष्टियाँ देखिएः

> **अंक** -पुं. [सं.] अंक √ (चिह्न करना) + अच्; लै. अंकस; गु. अंक, आंक, आँकड़ी; सिं. अंगु, का. आँख; सिंह. अंक; मरा. अंक, [वि.] अंकनीय, अंकित, अंक्य; भाव. अंकन। बैठे हुए मनुष्य का, सामने का कमर से घुटनों तक का उतना अंश, जितने में बच्चों आदि को बैठाया जाता है। क्रोड़। गोद। **मुहा.** – अंक देना, भरना या लगाना = (क) बच्चे आदि को गोद में प्रेमपूर्वक बैठाना। (ख) गले लगाना, आलिंगन करना। अंक में नमाना या नमावना = अतिप्रसन्न होना। फूले अंगों न समाना। उदा. – फूले फिरत अंक नहिं मावत। – सूर। (2) कटि प्रदेश। कमर। 3. चिह्न, छाप या निशान। 4. लेख, लिखावट 5. संख्या के सूचक चिह्न। (फिगर) जैसे – 1, 2, 3, 4 आदि। 6. खेल, परीक्षा आदि में योग्यता, सफलता आदि की सूचक इकाइयाँ। (नंबर) जैसे कबड्डी में सात अथवा गणित में दस अंक हमें मिले हैं। 7. अंश। भाग। उदा. – एकहु अंक न हरि भजे रे सठ सूर गंवारा। – तुलसी। 8. भाग्य। प्रारब्ध। 9. धब्बा। दाग। 10. बच्चों को नजर लगने से बचाने के लिए उनके माथे पर लगाई जाने वाली काजल की बिंदी। 11. शरीर। देह। 12. नाटक का एक खंड या भाग जिसमें कई दृश्य होते हैं। 13. रूपक के दस भेदों में से एक। 14. नौ की संख्या। 15. पत्र-पत्रिकाओं आदि का कोई निश्चित समय पर या समय-विशेष पर

होने वाला प्रकाशन (नंबर)। 16. पर्वत। 17. दुःख। 18. पाप।

अंकक – वि. [सं. √ अंक् + ण्वुल्-अक, [स्त्री. अंकिका] 1. अंकों की गिनती करने वाला। 2. चिह्न, छाप या निशान लगाने वाला। पुं. वह करण जिससे चिह्न या छाप लगाई जाती हो। मोहर। (स्टाम्प)

अंक-करण – पुं. [ष. त.] = अंकन।

अंक-कार – पुं. [सं. अंक √ कृ (करना) + अण्, 1. वह व्यक्ति जो खेलों (आजकल विशेषतः गेंद-बल्ले आदि के खेलों) में खिलाड़ियों से नियम पालन कराने और विवादास्पद बातों का निर्णय करने के लिए नियुक्त होता है। (अंपायर) 2. वह जो अंक दे।

अंकखरी – स्त्री.=कंकड़ी।

अंक-गणित – पुं. [ष. त.] गणित की वह शाखा जिसमें 1, 2, 3 आदि संख्याओं तथा जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि की सहायता से प्रश्नों के उत्तर निकाले जाते हैं। हिसाब। (एरिथमेटिक)

अंक-गत – भू.कृ. [द्वि. त.] 1. जिसे गोद में लिया गया हो। गोद में लिया हुआ। 2. पकड़ में आया हुआ।

आपने ध्यान दिया होगा कि इन प्रविष्टियों में शब्दों की व्युत्पत्ति, धातु, प्रत्यय, अन्य भाषाओं के समशब्द, अर्थ, मुहावरे, उदाहरण एवं यथास्थान पर्याय भी दिए गए हैं। धातुओं को (√) के द्वारा अंकित किया गया है। वहीं अन्य भाषाओं के शब्दों को भी दिया गया है। जैसे 'अंक' शब्द का लैटिन – अंकस; गुजराती – अंक, आंक, आंकड़ी; सिंधी – अंगु; कश्मीरी – आँख; सिंहली – अंक, मराठी – अंक शब्द दिए गए हैं। कोष्ठकों में अंक से बनने वाले विशेषण – अंकनीय, अंकित और अंक्य तथा भाववाचक संज्ञा – अंकन भी दिए गए हैं। फिर अर्थ दिया गया है। उसके बाद मुहावरों को लिया गया है। उदाहरणार्थ सूर का 'फूले फिरत अंक नहिं भावत' कथन। तत्पश्चात् 2 से 18 तक अंक शब्द के विभिन्न अर्थ दिए गए हैं। ये अर्थ गणित, शास्त्र, खेल, नाटक, पत्रकारिता आदि विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले इस शब्द की विभिन्न अर्थछवियों को भी व्यक्त करते हैं। अंक शब्द के पश्चात् अंक से बनने वाले विभिन्न शब्द अंकक, अंक-करण, अंक-कार, अंकखरी, अंक-गणित, अंक-गत आदि को क्रमशः लिया गया है।

कोशकार ने इसी प्रक्रिया को पूरे कोश में अपनाया है। संकेताक्षरों की सूची कोश के शुरू में दी हुई है। कोष्ठक में रखे गए शब्द से क्या अभिप्राय होगा, *,+,=, ( ) ये चिह्न किसके सूचक हैं – इस तरह की सभी जानकारी कोश के शुरू में स्पष्ट रूप से दे दी गई है। इन चिह्नों का प्रयोग पूरे कोश में किया है। इस प्रकार कोशकार एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया (पद्धति विशेष) को कोश का निर्माण करते समय अपनाता है और आदि से अंत तक उसका निर्वाह करता है। इससे कोश में एकरूपता बनी रहती है। यह कोश निर्माण की प्रक्रिया है।

3.2.2 प्रविधि से अभिप्राय

'प्रविधि' शब्द की व्युत्पत्ति 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'विधि' शब्द से हुई है। यह शब्द संस्कृत का है, जिसका अर्थ है – प्रकृष्ट विधि। आचार्य रामचंद्र वर्मा ने 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में इसका अर्थ दिया है – 'किसी विशेष विषय से संबंध रखने वाली या किसी विशेष प्रकार की विधि, जैसे साक्ष्य प्रविधि', दूसरा अर्थ दिया है 'तकनीक'। कोश-उपयोग के संदर्भ में प्रविधि का अर्थ विशिष्ट विधि अथवा तकनीक लिया जा सकता है जिसे प्रयोक्ता कोश का उपयोग करने के लिए अपनाता है। इसे सामान्य शब्दों में 'प्रयोग विधि' भी कहा जा सकता है। प्रयोक्ता वर्णक्रम विधि, विषय आधारित, व्याकरणिक कोटि आदि विधियों के आधार पर कोश का प्रयोग करता है।

3.2.3 कोश उपयोग के संदर्भ में प्रक्रिया और प्रविधि में अंतर

'प्रक्रिया' और 'प्रविधि' का अर्थ समझ लेने से आपको दोनों का अंतर स्पष्ट हो गया होगा। भाग 3.2.1 में की गई चर्चा से यह स्पष्ट है कि 'प्रक्रिया' का संबंध निर्माण क्रिया से है, जिसे कोशकार अपनाता है। इसी तरह, भाग 3.2.2 के अध्ययन से आपको यह भी स्पष्ट हो गया होगा कि 'प्रविधि' का संबंध उस विशिष्ट विधि अथवा

तकनीक से है, जिसे प्रयोक्ता अपनाता है। इस तरह दोनों में अंतर का आयाम यह है कि **प्रक्रिया का संबंध 'निर्माता' से है और प्रविधि का संबंध 'प्रयोक्ता' से है।**

कोश के संदर्भ में प्रक्रिया एवं प्रविधि, दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। कोशकार प्रयोक्ता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए और कोश को अधिक प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए जिस प्रक्रिया को अपनाता है उसका संकेत वह भूमिका में देता है। प्रयोक्ता भूमिका से संकेत प्राप्त कर कोश देखने की प्रविधि को समझ कर उसका प्रयोग करता है। कोश का उपयोग वह व्यक्ति करता है, जिसे किसी भाषा-विशेष के प्राथमिक शब्दों का ज्ञान होता है क्योंकि कोश-ग्रंथों में शब्दों के अर्थ (पर्याय रूप में) दिए जाते हैं। कोश का उपयोग करने के लिए हमें कम-से-कम किसी एक भाषा के प्राथमिक शब्दों का ज्ञान होना चाहिए। इस ज्ञान के आधार पर हम किसी दूसरी भाषा के शब्द-समूह को कोश की सहायता से सीख सकते हैं। कोश का उपयोग एक ओर हम अपनी भाषा के शब्दों का अर्थ जानने के लिए करते हैं, वहीं दूसरी ओर अन्य भाषाओं के शब्दों को जानने के लिए भी कर सकते हैं।

3.3 कोश उपयोग में संकेत प्रणाली की भूमिका एवं महत्त्व

कोश केवल शब्द एवं अर्थ तक ही सीमित नहीं होते हैं। कोश में शब्द एवं अर्थ के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रासंगिक जानकारियाँ भी रहती हैं। कोशकार इन सभी जानकारियों को पाठकों को उपलब्ध कराना चाहता है। लेकिन, साथ ही उसे कोश-ग्रंथ के आकार का भी ध्यान रखना पड़ता है। पाठक शब्द विशेष से संबंधित अधिकतम जानकारी कम से कम जगह में और एक ही स्थान पर प्राप्त कर सके, इसके लिए कोशकार संकेत प्रणाली और संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग करता है। इससे कोश के आकार को कुछ हद तक सीमित कर पाना संभव हो जाता है। कोश के समुचित उपयोग के लिए जरूरी है कि उसका प्रयोक्ता कोश की संकेत प्रणाली को भली प्रकार से समझ ले। शब्दकोश के आरंभ में ही कुछ कोड तथा संकेत तालिकाएँ दे दी जाती हैं जिनमें विभिन्न सूचनाओं के लिए संक्षिप्त संकेत निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं। अंग्रेजी और हिंदी के विभिन्न कोशों से उद्धृत निम्नलिखित उदाहरणों से आप इन संकेत चिह्नों के विषय में अच्छी प्रकार समझ सकेंगे। सबसे पहले हम आचार्य रामचंद्र वर्मा के 'प्रामाणिक कोश' का निम्नलिखित उदाहरण लेते हैं :

> **पताका** स्त्री. [सं., 1. झंडा, ध्वजा, फरहरा। (मुहावरों के लिए दे. 'झंडा' के मुहा.) 2. वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया रहता है, ध्वज 3. कागज आदि का वह छोटा टुकड़ा जो किसी बड़े कागज पर उसकी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए लगाया जाता है। (फ्लैग) 4. दस खर्च की संख्या। 5. नाटक का वह स्थल, जहाँ एक पात्र कुछ सोचता रहता है और दूसरा पात्र आकर किसी और संबंध की कोई बात कहने लगता है।

यहाँ 'पताका' शब्द को प्रारंभ में स्त्रीलिंग के रूप में दिया गया है। स्त्रीलिंग का संकेत चिह्न 'स्त्री.' लगाया गया है। कोष्ठक में [सं.] दिया गया है। इसका अर्थ है कि यह शब्द संस्कृत का है। फिर उसके पर्याय 'झंडा', 'ध्वजा', 'फरहरा' दिए गए हैं। 'पताका' का एक अर्थ 'झंडा' है। कोश में जहाँ 'झंडा' का अर्थ दिया गया है वहाँ तत्संबंधी मुहावरे भी दिए गए हैं। इसलिए 'झंडा' से संबंधित मुहावरों की पुनरावृत्ति से बचने के लिए 'पताका' की प्रविष्टि में 'झंडा' संबंधी मुहावरे नहीं दिए गए और इस तथ्य को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए केवल इतना लिख दिया गया है कि 'दे. 'झंडा' के मुहा.'। अर्थात इस शब्द से संबंधित मुहावरे 'झंडा' शब्द के अंतर्गत देखिए। अंग्रेजी भाषा में इसके लिए प्रतिशब्द 'फ्लैग' है, इसलिए 'फ्लैग' शब्द को कोष्ठक में दिया गया है। नाटक के क्षेत्र में 'पताका' शब्द से क्या अभिप्राय है, वह भी स्पष्ट कर दिया गया है। इस प्रकार 'पताका' शब्द से संबद्ध पूरी जानकारी यहाँ दे दी गई है। आप संदर्भ के अनुसार उसका अर्थ समझ सकते हैं और जरूरत पड़ने पर अन्य प्रविष्टि को भी देख सकते हैं। मुहावरे आदि जान सकते हैं। अब एक उदाहरण द्विभाषी कोश (अँगरेजी-हिंदी कोश, फादर कामिल बुल्के) का भी देखिए :

> **money,** 1. रुपया-पैसा, मुद्रा * ; 2. (*wealth*) धन, द्रव्य; 3. (*sum of ~*) रकम*; – ***bag***, बटुआ, थैली*; – **box,** गोलक, गुल्लक*; – **changer,** सराफ; – *ed,* धनी; धन-संबंधी; – **lender,** साहूकार; – **lending,** साहूकारी*', महाजनी*; – **making,** *n,* धनोपार्जन; – *adj.,* प्रलाभी, अर्थकर, – **market,** मुद्रा-बाजार, ~**order,** मनी-आर्डर, धनादेश। > मनि

देखिए, यहाँ money शब्द के साथ कितनी जानकारी दी गई है। उसका हिंदी में अर्थ दिया गया है। अंग्रेजी में ही उसका पर्याय wealth दिया गया है। व्याकरणिक कोटियों की जानकारी दी गई है। संकेत चिह्नों का प्रयोग किया गया है। जैसे रकम, थैली, गुल्लक, साहूकारी, महाजनी, मुद्रा के पश्चात् * चिह्न स्त्रीलिंग का सूचक है। '–' चिह्न अनुच्छेद का पहला शब्द सूचित करता है। – box अर्थात money box, – changer अर्थात money changer आदि। अंत में '>' चिह्न उच्चारण का सूचक है। प्रत्येक शब्द की पूरी जानकारी के साथ-साथ उसका उच्चारण कैसे किया जाएगा, यह भी स्पष्ट किया गया है। Adjective के लिए 'Adj.' और Noun के लिए 'n' संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग किया गया है।

स्पष्ट है कि कोशों में प्रयुक्त संकेतों की जानकारी हो जाने से शब्द-विशेष का अर्थ जानना बहुत आसान हो जाता है। कोश से हम शब्द विशेष से जुड़ी अनेक जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं। अब आपको यह समझ आ गया होगा कि कोश में इन संकेत चिह्नों का कितना महत्त्व है और शब्दों के अर्थ को समझने के लिए इनकी जानकारी होना कितना जरूरी है। सभी शब्दकोशों के आरंभ में कोशों में प्रयुक्त संकेतों की तालिका दी जाती है। आगे हिंदी और अंग्रेजी, दोनों प्रकार के शब्दकोशों से एक-एक संकेत तालिका उदाहरण के तौर पर दी जा रही है ताकि आप संकेत चिह्नों की जानकारी अच्छी प्रकार से प्राप्त कर सकें। सबसे पहले आचार्य रामचंद्र वर्मा द्वारा 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षर (abbreviations) एवं उनके पूरे रूपों को देखते हैं :

संकेताक्षरों का विवरण

अं.	=	अंग्रेजी भाषा	प्रत्य.	=	प्रत्यय।
अ.	=	1. अकर्मक क्रिया	प्रा.	=	प्राकृत भाषा।
		2. कोष्ठक में व्युत्पत्ति के प्रसंग में	प्रे., प्रेर.	=	प्रेरणार्थक क्रिया।
	=	अरबी भाषा।	फा.	=	फारसी भाषा।
अनु.	=	अनुकरण।	बँग.	=	बँगला भाषा
अप.	=	अपभ्रंश।	बहु.	=	बहुवचन।
अल्पा.	=	अल्पार्थक रूप।	भाव.	=	भाववाचक संज्ञा।
अव.	=	अवधी बोली।	भूत. कृ.	=	भूतकालिक कृदंत।
अव्य.	=	अव्यय।	मि.	=	मिलाओ।
इब.	=	इबरानी।	मुसल.	=	मुसलमानों में प्रयुक्त।
उड़ि.	=	उड़िया।	मुहा.	=	मुहावरा।
उप.	=	उपसर्ग।	यू.	=	यूनानी भाषा।
कहा.	=	कहावत।	यौ.	=	यौगिक
कोंक.	=	कोंकणी (कोंकण देश की भाषा)	यो., योज.	=	योजक।
क्रि. प्र.	=	क्रिया प्रयोग।	राज.	=	राजस्थानी।
क्व.	=	क्वचित् (कहीं-कहीं प्रयुक्त)	व. वि.	=	वर्ण-विपर्यय।
गुज.	=	गुजराती भाषा।	वि.	=	विशेषण।
जर.	=	जरमन।	विप.	=	विपर्याय।
जा.	=	जापानी।	विभ.	=	विभक्ति।
ता.	=	तातारी भाषा।	विरु.	=	विरुद्धार्थक।
तु.	=	तुरकी भाषा।	विस्मयादि.	=	विस्मयादिक।
दे.	=	देखें। (अभिदेश)	व्या.	=	व्याकरण।
देश.	=	देशज।	ब्रज.	=	ब्रज भाषा।
ना. धा.	=	नाम धातु।	सं.	=	संस्कृत।
निपा.	=	निपात।	संक्षि.	=	संक्षिप्त।
पं.	=	पंजाबी।	स.	=	सकर्मक क्रिया।
परि.	=	परिशिष्ट।	सम.	=	समस्त पद।

पा.	=	पाली भाषा।	सर्व.	=	सर्वनाम।
पुं.	=	पुंल्लिंग।	सा.	=	साहित्य।
पु. हि.	=	पुरानी हिंदी।	स्त्रि.	=	स्त्रियों की बोलचाल।
पुर्त.	=	पुर्तगाली भाषा।	स्त्री.	=	स्त्रीलिंग।
पू.	=	पूर्वी या पूरब की हिंदी।	स्पे.	=	स्पेनी भाषा।
पूर्व.	=	पूर्वकालिक क्रिया।	हि.	=	हिंदी।

* कविताओं, गीतों आदि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का सूचक चिह्न।

† स्थानिक बोल-चाल में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का चिह्न।

इसी प्रकार, निम्नलिखित संकेत चिह्न आदि भी देखिए जिन्हें फादर कामिल बुल्के द्वारा संपादित 'अँग्रेजी-हिंदी कोश' से लिया गया है :

संकेत-चिह्न

~ अनुच्छेद का पहला शब्द सूचित करता है अथवा इसका पूर्वार्द्ध यदि वह शब्द एक रेखा से विभाजित है। दे. पृ. 409 जहाँ ~ hill = molehill; ~ -eyed = mole-eyed; ~cule = molecule.

_ मोटे अक्षरों में छपा निकटतम पूर्ववर्ती शब्द सूचित करता है। दे. पृ. 409 जहाँ - = molehill.

* सभी स्त्रीलिंग शब्दों पर अंकित है।

** उन इने-गिने शब्दों पर अंकित हैं जो उभयलिंगी हैं।

व्याकरणिक कोटियाँ

adj. = adjective, *adv.* = adverb; *comp.* = compound (s); *conj.* = conjunction; *indecl.* = indeclinable; *interj.* = interjection; *n.* = noun; *pref.* = prefix; *v.* = verb; *v.i.* = intransitive verb; *v.i.*= transitive verb.

विषय

agric = agriculture; *alg.* = algebra; *anat.* = anatomy; *arch., archi.* = architecture; *arithm.* = arithmetic; *astr., astron.* = astronomy; *biol.* = biology; *bot.* = botany; *chem.* = chemistry; *chronol.* = chronology; *cinem.* = cinematography; *comm.* = commerce; *eccles.* = ecclesiastical; *econ., econom.* = economics; *electr., electri.*= electricity; *engin.* = engineering; *entom.* = entomology; *geogr.* = geography; *geol.* = geology; *geom.* = geometry; *gram., gramm.* = grammar; *insts., instrum.* = instrument; *ling.* = linguistics; *lit.* = literature; *math.* = mathematics; *mech., mechan.* = mechanics; *med.* = medicine; *meteor.* = meteorology; *mil.* = military; *Moh.* = Mohammedan; *mus.* = music; *naut.* = nautical; *N.T.* = New Testament; *ornith.* = ornithology; *path.* = pathology; *pej.* = pejorative; *pharm.* = pharmacology; *phil., philos.* = philosophy; *phon.* = phonetics; *photo, photogr.* = photography; *phys.* = physics; *physiol* = physiology; *psych.* = psychology; *psycho-ana.* = psycho-analysis; *rel.* = religion; *rhet.* = rhetoric; *spir. exerc.* = spiritual exercises; *techn.* = technology; *theol.* = theology; *zool.* = zoology.

अन्य संकेताक्षर

क. = करना। *abbrev.* = abbreviated; *add., addit.* = additional; *abstr.* = abstract; *concr.* = concrete; *e.g.* = for example; *etc.* = etcetera; *fig.* = figuratively; *gen.* = general; *miscell.* = miscellanea; *opp.* = opposed, opposite; *pej.* = pejorative; *pl.* = plural; *rel.* = relating; *supplem.* = supplementary.

उपर्युक्त दोनों तालिकाओं को देखकर आप समझ गए होंगे कि संकेत सूची का शब्दकोश में कितना महत्त्व है।

अंग्रेजी शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण संकेत भी मिलते हैं, ताकि शब्द को ध्वनि और लिपि दोनों ही स्तरों पर जाना जा सके। हिंदी भाषा की वर्णमाला में प्रत्येक वर्ण का उच्चारण स्थान निश्चित है और प्रत्येक ध्वनि के लिए वर्ण निश्चित है, जबकि अंग्रेजी भाषा में ऐसा नहीं है। वहाँ एक ही ध्वनि के लिए अनेक वर्ण हैं और इसके साथ

ही एक वर्ण एकाधिक ध्वनि के लिए प्रयुक्त होता है। आप इस प्रकार समझ सकते हैं, अंग्रेजी में हिंदी की 'फ़' ध्वनि के लिए f (father), ph (phone), gh (rough) का प्रयोग मिलता है। इसी प्रकार 'ch' का 'च' (church) और 'क' (chemistry) दो ध्वनियों के लिए प्रयोग होता है।

अंग्रेजी उच्चारण में बलाघात का भी विशेष महत्त्व है। एक ही वर्तनी वाले शब्द भी बलाघात के अंतर से अलग-अलग आशय या अर्थ देने लगते हैं। उदाहरण के लिए, हम present शब्द को देख सकते हैं। यदि पहले अक्षर (pres-ent) पर बलाघात होता है तो यह संज्ञा शब्द होगा और इसका अर्थ होगा 'उपहार', यदि दूसरे अक्षर (pre-sent) पर बलाघात होगा तो यह शब्द 'क्रिया' बन जाएगा तब इसका अर्थ होगा 'प्रस्तुत करना'।

अंग्रेजी में अनेक ऐसे शब्द हैं, जिनकी वर्तनी भिन्न है परंतु उच्चारण एक ही रहता है जैसे, birth 'बर्थ' (जन्म) berth 'बर्थ' (सीट); peace 'पीस' (शांति) piece 'पीस' (टुकड़ा); see 'सी' (देखना) sea 'सी' (समुद्र)। इसलिए उच्चारण संकेतों का विशेष महत्त्व है।

3.4 कोशों में प्रयुक्त संकेत-चिह्नों के वर्ग

इस इकाई के भाग 3.3 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि संकेत प्रणाली शब्दकोश के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है और शब्दकोश देखने के लिए संकेत प्रणाली को जानना कितना आवश्यक है। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सामान्य संकेत प्रणाली तो लगभग सभी कोशों में समान होती है, परंतु कुछ विशेष संकेत चिह्न ऐसे होते हैं, जिन्हें कोशकार अपनी सुविधा के अनुसार प्रयोग में लाता है। इसलिए यह जरूरी नहीं कि सभी कोशों की संकेत प्रणाली एकसमान हो ही। वास्तव में कोशकार इन चिह्नों का प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र होता है, परंतु वह जो भी संकेत प्रणाली अपनाता है, उसकी सूचना कोश के प्रारंभ में अवश्य दे देता है। इसलिए प्रत्येक कोश की संकेत सूची भिन्न होती है। किसी भी कोश का प्रयोग करने से पहले कोश-प्रयोक्ता को उसकी संकेत सूची के बारे में अवश्य जान लेना चाहिए।

विभिन्न कोशों के संकेत चिह्नों को समझने के लिए यह जानना चाहिए कि संकेत चिह्न कितने प्रकार के होते हैं। ये संकेत चिह्न किन-किन संदर्भों से जुड़े हुए होते हैं। कोशों में प्रयुक्त संकेत चिह्नों को मोटे तौर पर तीन वर्गों में रखा जा सकता है – (1) मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न, (2) संक्षिप्ताक्षरों पर आधारित संकेत चिह्न; और (3) विशिष्ट संकेत चिह्न। आइए अब इनमें से प्रत्येक के बारे में जानें।

3.4.1 मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न

शब्दकोशों में मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न शामिल होते हैं। अधिकांशतः शब्दकोशों में तीन प्रकार की मुद्रण-शैली दिखाई देती है। अंग्रेजी शब्दकोशों में Bold letters (काले, मोटे अक्षर), italics letters (तिरछे वर्ण), और capital letters (कैपिटल वर्ण)। कोशकार इनका प्रयोग एक निश्चित अभिप्राय के लिए करता है। प्रायः मूल प्रविष्टि काले, मोटे वर्णों में दी जाती है। उच्चारण तिरछे वर्णों (italics) में दिया जाता है। उदाहरण के लिए, 'The Compact Oxford Reference Dictionary' में मूल प्रविष्टि और उपप्रविष्टि, दोनों ही Bold letters में हैं जबकि DERIVATIVES और ORIGIN Capital letters में हैं। व्याकरणिक सूचना कोष्ठक में दी है। इसे समझने के लिए इस कोश की निम्नलिखित प्रविष्टि देखिए:

> **him** . **pron.**(third person sing.) used as the object of a verb or preposition to refer to a male person or animal previously mentioned.
> – ORIGIN OLD ENGLISH.

प्रविष्टि को ध्यान से देखने पर आपको यह पता चल गया होगा कि यहाँ मूल प्रविष्टि 'him' bold letter में है। part of speech 'pron' भी Bold letter में है। व्याकरणिक सूचना (अर्थात third person sing.) कोष्ठक में दी गई है। शब्द के मूल स्रोत ORIGIN Capital letter में है। आइए अब हम फादर कामिल बुल्के के 'अँगरेजी-हिंदी शब्दकोश' की एक प्रविष्टि को उदाहरण के तौर पर देखें। इसमें मूल प्रविष्टि काले मोटे अक्षरों में दी है। व्याकरणिक कोटि और अंग्रेजी पर्याय italics में दिए हैं।

leisure, *n*., अवकाश, फ़ुरसत* ; *adj*., खाली; सावकाश; at one's ~, अपने अवकाश में, अपनी सुविधा*' के अनुसार; **~ly**, *adj*. अत्वरित; - *adj*., धीरे-धीरे; इतमीनान से, फुरसत* से।

> ले'श्ज़्-अॅ, ~लि

यहाँ मूल प्रविष्टि 'leisure' Bold letter में है। 'n', 'adj.' italics में है। उच्चारण के लिए सर्वत्र '>' संकेत चिह्न का प्रयोग किया गया है। स्त्रीलिंग के लिए * संकेत चिह्न का प्रयोग किया गया है। फुरसत, सुविधा दोनों शब्दों के पश्चात् * यह चिह्न आप देख सकते हैं।

मुद्रण के आधार पर हिंदी शब्दकोशों में काले मोटे अक्षर और सामान्य अक्षर दो ही रूप मिलते हैं। अंग्रेजी शब्दकोशों जैसी विभिन्नता हिंदी शब्दकोशों में नहीं है। हिंदी शब्दकोशों में ( ), =, { } , / [], * इन मुद्रण चिह्नों का भी प्रयोग मिलता है।

3.4.2 संक्षिप्ताक्षरों पर आधारित संकेत चिह्न

'संक्षिप्ताक्षर' किसी एक शब्द अथवा किसी शब्द समूह के संक्षिप्तीकरण का एक प्रकार विशेष है। 'संक्षिप्ताक्षर' अंग्रेजी के Abbreviation शब्द के समतुल्य प्रयुक्त किया जाता है।

कोशकार के लिए प्रविष्टि संबंधी पूरी जानकारी विस्तार से देना संभव नहीं होता। कोशकार प्रविष्टि संबंधी अधिक-से अधिक जानकारी पाठक तक पहुँचाना चाहता है और विस्तार से बचना भी चाहता है। कोशकार इसके लिए संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग करता है और भूमिका में संक्षिप्ताक्षरों की तालिका भी दे देता है। आप देखेंगे कि हिंदी शब्दकोशों में अधिकांशतः एक जैसे ही संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग होता है। जैसे 'उदा.' (उदाहरण), 'दे.' (देखिए), 'अक' (अकर्मक क्रिया), प्रे. (प्रेरणार्थक), वि. (विशेषण), देश. (देशज), सं. (संस्कृत) आदि। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दकोशों में भी एक से ही संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग होता है, जैसे 'n' (noun), adj. (adjective), pl. (plural), sing. (singular), pron. (pronoun), zool. (zoology), hist. (history) आदि। पीछे भाग 3.3 में आचार्य रामचंद्र वर्मा के 'प्रामाणिक हिंदी कोश' और फादर कामिल बुल्के के 'अँगरेजी-हिंदी कोश' में शामिल संक्षिप्ताक्षरों की पूरी सूची दी गई है। उन्हें एक बार फिर से देखिए। उन्हें देखने पर आपको पता चल जाएगा कि कोशों के लिए निर्धारित संक्षिप्ताक्षर और उनके पूरे रूप क्या हैं।

3.4.3 विशिष्ट संकेत चिह्न

शब्दकोशों में कई बार संक्षिप्ताक्षरों के स्थान पर संकेत चिह्नों का भी प्रयोग किया जाता है जिससे कोशकार अत्यंत संक्षेप में अधिक सूचना दे सके। सामान्य कोष्ठक ( ) अथवा कोणीय कोष्ठक (< >), डैश (   ), तारक (*), कोष्ठक [ ],{ }, ✝ आदि इसी प्रकार के चिह्न हैं, जिनका कोशकार अपनी सुविधा के अनुसार प्रयोग करता है। अँगरेजी-हिंदी कोश में फादर कामिल बुल्के ने स्त्रीलिंग शब्दों के साथ '*' दिया है। वर्णों के उच्चारण से पूर्व '>' चिह्न अंकित किया है। '~' संकेत चिह्न अनुच्छेद का पहला शब्द सूचित करता है। इसे आप कामिल बुल्के के कोश के निम्नलिखित उदाहरण की सहायता से समझ सकते हैं :

absence, 1. अनुपस्थिति*, गैर हाजिरी*; 2. *(lack)* अभाव, अवर्तमान; 3. *(~ of mind)* अन्यमनस्कता*, दुचित्ताई*, दुचित्ती *।

> ऐबूसॅन्स

'अनुपस्थिति', 'गैर हाजिरी', 'अन्यमनस्कता', 'दुचित्ताई', 'दुचित्ती' स्त्रीलिंग शब्द हैं। इसलिए इन सब पर '*' चिह्न अंकित है। absence of mind कहने के लिए absence के स्थान पर '~' चिह्न अंकित है। लिप्यंतरित शब्द 'ऐबसॅन्स' से पूर्व '>' चिह्न अंकित है जो यह संकेत करता है कि शब्द का उच्चारण कैसे किया जाएगा। मूल प्रविष्टि के अर्थ बताने के लिए 1, 2, 3 संख्यावाची चिह्नों को अंकित किया है।

एक और उदाहरण लेते हैं। 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में कविताओं, गीतों आदि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के लिए '*' संकेत चिह्न का प्रयोग किया गया है। स्थानिक बोलचाल में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के साथ '✝' चिह्न अंकित किया है। व्युत्पत्ति के लिए [सं.] चिह्न अंकित किया है। अंग्रेजी प्रतिशब्दों के लिए '( )' कोष्ठक का प्रयोग किया

है। आचार्य रामचंद्र वर्मा कृत 'प्रामाणिक हिंदी कोश' से लिया गया निम्नलिखित उदाहरण देखिए :

> **अंतर्²** उप. [अं. इंटर] इकाइयों, पक्षों, व्यक्तियों आदि के बीच या पारस्परिक रूप से होनेवाला, जैसे अंतर्राष्ट्रीय (इंटरनेशनल), अंतर्विभागीय (इंटरडिपार्टमेंटल)।
>
> XXX XXX XXX
>
> **अँथऊ †** पुं. [सं.] सूर्यास्त से पहले का भोजन। (जैन)

'अँथऊ' स्थानीय बोलचाल का शब्द है, यह बताने के लिए कोशकार ने इस प्रविष्टि में '†' चिह्न अंकित किया है। एक अन्य उदाहरण देखिए, जो अंग्रेजी कोश से संबंधित है :

> Callaghan [E]
>
> /kal-luh-han/, (Leonard) James, Baron Callaghan of Cardiff (b.1912), British Labour statesman, Prime Minister 1976-9.

आपने ध्यान दिया होगा कि यह कोष्ठक में है। वस्तुतः Encyclopedic entries को Oxford Reference Dictionary में बॉक्स में रखकर इस संकेत चिह्न से द्योतित किया गया है। वैकल्पिक प्रयोगों के लिए अधिकांश कोशों में '/ /' चिह्न अंकित रहता है।

इस प्रकार हमने देखा कि शब्दकोशों में संकेत चिह्न कितने उपयोगी हैं। इनका प्रयोग कोशकार कम-से-कम स्थान का प्रयोग कर अधिक-से-अधिक जानकारी प्रदान करने के लिए करता है। अधिकांशतः कोश ग्रंथों में एक जैसे ही संकेत चिह्नों का प्रयोग किया जाता है परंतु कुछ विशिष्ट चिह्न भी होते हैं, जिन्हें कोशकार प्रयोग करते हैं। प्रत्येक कोश के प्रारंभ में इनकी सूची रहती है, जिन्हें समझकर कोश देखने में पाठक को सुविधा रहती है।

3.5 कोश उपयोग की प्रविधि

इस इकाई में अब तक किए गए अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि शब्दकोशों में मूल शब्द, वर्तनी, व्युत्पत्ति, शब्द-स्रोत, प्रतिशब्द, व्याकरणिक रूप, विभिन्न अर्थ, पर्याय, विलोम, उनसे जुड़े मुहावरे-लोकोक्तियाँ आदि अनेक प्रकार की जानकारियाँ उपलब्ध रहती हैं। ये सभी जानकारियाँ आप तभी प्राप्त कर सकते हैं, जब आपको कोश के उपयोग की प्रविधि ज्ञात हो।

किसी भी शब्द को शब्दकोश में खोजने के लिए सबसे पहले उसके सही स्थान का ज्ञान होना चाहिए, ताकि उसे ढूँढने में व्यर्थ में अतिरिक्त समय नष्ट न करना पड़े। प्रत्येक भाषा के शब्दकोश वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित करके तैयार किए जाते हैं। इसके अलावा, संदर्भ-सापेक्षता एवं अन्य जानकारियाँ विषयक पक्ष भी कोश उपयोग करने से जुड़े हुए हैं। इकाई के इस भाग में हम इन तीनों (अर्थात वर्णक्रम व्याकरणिक कोटियों, संदर्भ-सापेक्षता और अन्य जानकारियाँ) पक्षों के संदर्भ में हिंदी तथा अंग्रेजी शब्दकोश देखने की प्रविधि की चर्चा करेंगे। आइए, सबसे पहले हम हिंदी वर्णक्रम के संदर्भ में विचार करते है।

3.5.1 वर्णक्रम

यहाँ हम हिंदी और अंग्रेजी भाषा के वर्णक्रम के संदर्भ में कोश उपयोग की प्रविधि पर विचार कर करे हैं। हम जानते हैं कि किसी भी भाषा के शब्दकोश को देखने के लिए उस भाषा विशेष की वर्णमाला का ज्ञान होना जरूरी है। इसलिए आइए, सबसे पहले हिंदी वर्णक्रम पर चर्चा करें।

हिंदी वर्णक्रम :

हिंदी कोश उपयोग की प्रविधि पर विचार करते समय सबसे पहले हिंदी भाषा के शब्दकोशों की वर्णक्रम-व्यवस्था पर विचार करना जरूरी है। यह तो आपके सामने स्पष्ट है कि शब्दकोश में शब्द वर्णक्रम से आते हैं। हिंदी

शब्दकोश में ये प्रथम वर्ण अर्थात 'अ' वर्ण से प्रारंभ होकर अंतिम वर्ण 'ह' तक आते हैं। हिंदी में वर्णक्रम को अकारादि क्रम भी कहा जाता है। हिंदी शब्दकोश देखने से पहले हिंदी वर्णमाला का ज्ञान होना चाहिए। हिंदी वर्णमाला में मूलतः 11 स्वर और 35 व्यंजन हैं। हिंदी का वर्णक्रम इस प्रकार है :

हिंदी वर्णमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ

मूल व्यंजन

क	ख	ग	ई	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
ड़	ढ़			

हिंदी वर्णमाला के चार व्यंजन *संयुक्त व्यंजन* के रूप में प्रयुक्त होते हैं। ये हैं – क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ); और श्र (श्+र)।

हिंदी कोश में क्रम-व्यवस्था :

हिंदी कोश का उपयोग करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि हिंदी वर्णमाला में जिस क्रम से वर्ण दिए गए हैं, हिंदी शब्दकोश में उसी क्रम से शब्दों का नियोजन नहीं किया जाता है। यह बात उदाहरण की सहायता से स्पष्ट की जा सकती है। वर्णमाला में स्वरों का क्रम इस प्रकार है :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अनुस्वार (अं), अनुनासिक (अँ), विसर्ग (अः), हलंत (क्), अर्धचंद्र (ऑ)

शब्दकोश में अनुस्वार युक्त अ (अं) सर्वप्रथम आता है (जैसे, 'अंक', 'अंकगणित', 'अंकगत' आदि)। इसके पश्चात अनुनासिक अ (अँ) से प्रारंभ होने वाले शब्द (जैसे 'अँकना', 'अँकवार' आदि) आते हैं। तत्पश्चात 'अ' स्वर से प्रारंभ होने वाले शब्द आएँगे (जैसे 'अगर', 'अजय', 'अमर', 'असर' आदि)।

इसी तरह से, 'आ' से प्रारंभ होने वाले वर्णों में भी आं, आँ, आ यह क्रम रहेगा (जैसे 'आंतरिक', 'आंदोलन', 'आँवला', 'आँसू', 'आज़ाद' आदि)। यही क्रम सभी•स्वरों में रहता है।

अंग्रेजी से आगत ऑ (जैसे, कॉलेज, कॉफ़ी आदि) ध्वनियुक्त वर्णों का स्थान 'आ' युक्त वर्णों के पश्चात रहेगा। यह क्रम आप इस प्रकार समझ सकते हैं- अं, अँ, अ, आं, आँ, आ, ऑ।

इस प्रकार, हिंदी शब्दकोश में स्वरों का क्रम इस प्रकार होता है – अ (अं/अँ, अः, अ) आ (आं/आँ, आ, ऑ), इ (इं/इँ, इ), ई (ईं, ई), उ (उं, उँ, उ), ऊ (ऊँ, ऊ), ऋ (ऋं, ऋ), ए (एं, ए), ऐ (ऐं, ऐ), ओ (ओं, ओ), औ (औं, ओ)।

हिंदी शब्दकोशों में जो क्रम स्वतंत्र स्वरों का रहता है वही क्रम मात्राओं में भी रहता है। उदाहरण के लिए हम 'क' वर्ण को लेते हैं। 'क' वर्ण में मात्राओं का क्रम इस प्रकार होगा – कं, कँ, क, कां, काँ, का, किं, कि, कीं, की, कुं, कुँ, कु, कूँ, कू, कृ, कें, के, कैं, कै, कों, को, कौं, कौ आदि।

मात्राओं के क्रम को ध्यान से देखने पर आपने गौर किया होगा कि इनमें भी उन शब्दों को पहले लिया गया है, जिनके प्रथम अक्षर अनुनासिक (ं), अनुस्वार (ँ) और विसर्ग (ः) से शुरू होते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि वर्णमाला में स्वर जिस क्रम में आते हैं (आगे अथवा पीछे), उनकी मात्रा से युक्त व्यंजन भी उसी क्रम में आएँगे। जैसे, उपर्युक्त 'क' वर्ण में मात्राओं के क्रम में 'काँ/कां, काः, का'।

वर्ण में मात्राओं के इस क्रम को देखने के पश्चात आप यह सोच सकते हैं कि **शब्दकोश में स्वर-रहित व्यंजनों (जैसे, क् , क्र, क्ष आदि) का स्थान क्या है?** हिंदी शब्दकोश के संदर्भ में आपको यह ध्यान रखना होगा कि स्वरयुक्त व्यंजनों के पश्चात् स्वर-रहित व्यंजन आते हैं। जैसे, 'कौ' से प्रारंभ होने वाले शब्दों के पश्चात क्य (क्या,

क्यारी, क्यों आदि), क्र (क्रंदन, क्रतु, क्रम आदि), क्ल (क्लब, क्लांत, क्लिष्ट आदि), क्व (क्वण, क्वाँरा, क्वाथ आदि), क्ष (क्षंतव्य, क्षण, क्षणदा आदि)। इस प्रकार आपने देखा कि शब्दकोश में स्वरयुक्त व्यंजनों के पश्चात स्वर रहित व्यंजनों का स्थान आता है।

'ड़' और 'ढ़' का स्थान :

हिंदी की वर्णमाला में आपने 'ड' और 'ढ' वर्णों के स्थान का भी आपने गौर किया होगा। ये उत्क्षिप्त रूप की ध्वनियाँ हैं। शब्दकोश में इनके स्थान का भी कोश-प्रयोक्ता को बोध होना जरूरी है।

आप जानते ही हैं कि हिंदी में 'ड़' और 'ढ़' से कोई भी शब्द शुरू नहीं होता है। ये ध्वनियाँ किसी भी शब्द के मध्य में या फिर अंत में प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे, 'लड़का', 'लड़की', 'लकड़ी', 'लड़ाई', 'लड़ी', 'पढ़ना', 'पढ़ाई', 'पढ़ें' आदि शब्द। इन दोनों ध्वनियों अर्थात **ड़ और ढ़** को **शब्दकोश में क्रमशः 'ड' और 'ढ' वर्ण से पहले** देखना होगा। यानी 'ठ' वर्ण के पश्चात 'ड़' और फिर 'ड' आएगा। चूँकि वर्णमाला में 'ढ', 'ड' के बाद आता है इसलिए 'ढ' ध्वनि 'ड' और 'ढ' के बीच होती। यानी 'ढ़' को भी उसके पहले वर्ण 'ड' के बाद देखना होगा। स्पष्ट है कि 'ड' और 'ड' के क्रम की भाँति पहले 'ढ़' आएगा और उसके बाद 'ढ' आएगा। इस प्रकार शब्दकोश में इनका क्रम होगा – 'ट', 'ठ', 'ड़', 'ड', 'ढ़', 'ढ'।

शब्दकोश में संयुक्त व्यंजनों का स्थान :

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि हिंदी वर्णमाला में 'क्ष', 'ज्ञ', 'त्र', और 'श्र' संयुक्त व्यंजन हैं। इन संयुक्त व्यंजनों से प्रारंभ होने वाले शब्दों को शब्दकोश में ढूँढने में भी प्रयोक्ता को भ्रम होता है। वर्णमाला में इन संयुक्त व्यंजनों को श, ष, स, ह व्यंजन के पश्चात रखा जाता है, जबकि शब्दकोश में इनका स्थान अंत में न होकर इस प्रकार रहता है :

- **'क्ष' वर्ण** : 'क्ष' वर्ण 'क्' और 'ष' का संयोग है। इसे शब्दकोश में ढूँढना हो तो 'क' वर्ण में 'कौ' से आरंभ होने वाले शब्द समाप्त होने के पश्चात क्य, क्र, क्ल, क्व और क्ष इसी क्रम में देखना होगा। जैसे क्वण, क्वाँरा, क्वाथ, क्वान, क्वारा, क्विंटल, क्वैला, क्षंतव्य, क्षण, क्षणदा.... आदि।
- **'ज्ञ' वर्ण** : 'ज्ञ' वर्ण का उच्चारण उत्तर भारत में 'ग्य' के रूप में मिलता है, जबकि वास्तव में 'ज्' और 'ञ' का संयोग है। शब्दकोश में 'ज' वर्ण के स्वरयुक्त शब्द जहाँ समाप्त होते हैं वहाँ से 'ज्ञ' वर्ण से प्रारंभ होने वाले शब्द आएँगे। जौहर, जौहरी, ज्ञप्त, ज्ञात, ज्ञातयौवना, ... आदि।
- **'त्र' वर्ण** : 'त्र' वर्ण भी (त् + र) 'त' वर्ण के स्वर युक्त सभी शब्दों के पश्चात त्य, त्र इस क्रम से आएगा। जैसे तौलना, तौलिया, तौहीन, त्यक्त, त्यजन, त्यागं, ... त्यौर, त्रय, त्र्यताप, त्रयी आदि।
- **'श्र' वर्ण** : जैसा कि आपको बताया ही जा चुका है कि 'श्र' वर्ण 'श्' और 'र' वर्ण का संयोग है। 'श्र' (श्+र) वर्ण से आरंभ होने वाले शब्दों को कोश में देखने के लिए आपको 'शौ' से आरंभ होने वाले शब्दों के पश्चात देखना होगा। यानी 'श्च', 'श्म', 'श्य', और उसके बाद 'श्र'। 'श्र' वर्ण के स्थान को भली प्रकार से समझने के लिए आइए हम कुछ शब्दों के उदाहरण लें। उदाहरण के लिए, 'शौध', 'शौरसेन', 'शौरसेनी', 'शौय', 'शौल्किक', 'शौहर', 'श्मशान', 'श्मथ', 'श्याम', 'श्यामकर्ण', ... 'श्याल', 'श्येन', 'श्रद्धांजलि', 'श्रद्धा' आदि।

  लेकिन अगर 'श्र' वर्ण वाले शब्द स्वर से युक्त हो जाते हैं तो वे समस्या खड़ी कर देते हैं। यह विशेष तौर पर उस समय होता है जब 'श्र', 'ऋ' वर्ण के साथ आता है। अन्य स्वरों के साथ आने पर इसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है (जैसे, श्राद्ध, श्रेय, श्रोत्रिए आदि) किंतु 'ऋ' स्वर के साथ आते ही इसके रूप में परिवर्तन हो जाता है और वह 'शृ' रूप में लिखा जाता है। 'शृ' वर्ण, व्यंजन 'श्' और स्वर 'ऋ' के संयोग से बनता है। स्पष्ट है कि स्वरों में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ.... यह क्रम चलता है। अतः शब्दकोश में भी 'शृ' से आरंभ होने वाले शब्द 'शू' से आरंभ होने वाले शब्दों के समाप्त होने के पश्चात आएँगे। जैसे 'शूर्पणखा', 'शूल', 'शूलना', 'शूलपाणि', 'शूलस्तूप', 'शूली', 'शृंखल', 'शृंखलता', 'शृंखला', 'शेखचिल्ली', 'शेखर', 'शेर', 'शैव', 'शोकाकुल', 'शौक' आदि।

पंचम वर्णों का स्थान :

हिंदी वर्णमाला के क-वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ), च-वर्ग (च, छ, ज, झ,ञ), ट-वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), त-वर्ग (त, थ, द, ध, न) और प-वर्ग (प, फ, ब, भ, म) के पाँचवें वर्ण का कोश में स्थान भी परेशानी पैदा करता है। आपको ध्यान रखना होगा कि शब्दकोश में इन पाँचों वर्णों – ङ, ञ, ण, न, म – के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होता है। ये पाँचों नासिक्य ध्वनियाँ हैं, जिन्हें वर्ण और बिंदु, दोनों रूपों में लिखा जाता है। जैसे गंगा – गङ्गा, चंचल – चंचल, पांडव – पाण्डव, हिंदी – हिन्दी, अंबा – अम्बा आदि। शब्दकोश में एकरूपता बनाए रखने के लिए एवं मुद्रण की सुविधा के लिए ऐसे शब्दों को केवल बिंदु से ही लिखा जाता है। अतः ऐसे शब्द सदैव वर्ण-विशेष से बनने वाले शब्दों के आरंभ में आते हैं। उदाहरण के लिए, यदि शब्दकोश में 'किंचित', 'प्रांत', 'सौंदर्य' शब्दों को शब्दकोश में देखना हो तो उन्हें क्रमशः 'कि', 'प्रा' और 'सौ' से आरंभ होने वाले शब्दों के शुरू में देखा जाएगा।

विदेशी भाषाओं से आगत ध्वनियों के प्रतीक वर्ण :

हिंदी वर्णमाला में विदेशी भाषाओं से आगत ध्वनियों के प्रतीकों को भी वर्णों के साथ स्थान प्राप्त है। ये विशेष रूप से उर्दू शब्दों में प्रयुक्त किए जाते हैं। इन प्रतीकों को नुक्ता कहते हैं। हिंदी वर्णों के साथ नुक्ता लगाकर हिंदी में उर्दू शब्द लिखने की प्रवृत्ति है। हिंदी के जिन वर्णों के साथ नुक्ता लगाया जाता है, वे हैं – 'क़', 'ख़', 'ग़', 'ज', 'फ़'। देखने में यह आता है कि कोशकार अपनी रुचि के अनुसार इन ध्वनियों के प्रतीक वर्णों को बिना नुक्ते के भी शामिल कर लेते हैं और नुक्ते के साथ भी। इस संबंध में केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने हिंदी वर्तनी का मानकीकरण करने की प्रक्रिया में यह आधार लिया है कि उर्दू भाषा से अरबी-फ़ारसीमूलक वे शब्द हिंदी रूप में स्वीकार किए जा सकते हैं जो हिंदी का अंग बन चुके और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है। जैसे 'कलम' (क़लम), 'किला' (क़िला), 'दाग' (दाग़) आदि। निदेशालय ने यह भी सुनिश्चित किया है कि जहाँ उर्दू से आए अरबी-फ़ारसीमूलक शब्दों का शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो या फिर उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो, वहाँ उनके हिंदी में प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ। जैसे – खाना – ख़ाना, राज – राज, फन – हाइफ़न आदि। कोशकार यदि नुक्ते के साथ इन वर्णों ('क़', 'ख़', 'ग़', 'ज') को लिखता है तो इन ध्वनियों से आरंभ होने वाले शब्दों को भी क, ख, ग, ज, फ (नुक्ता रहित) के साथ ही रखता है।

शब्दकोश में शब्द के केवल प्रथम वर्ण को ही वर्णक्रम के अनुसार ही नहीं शामिल किया जाता अपितु **शब्द के दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण को भी वर्णक्रम के अनुसार रखा जाता है।** दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आने वाले वर्णों में स्वरों की मात्राओं को भी वर्णमाला के क्रम में ही रखा जाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित शब्दों को देखिए :

कतरा, कलिंग, कपट, कंचन, कदम, कलिंग, कनखी, कपाल, कनखी, कलम।

इन शब्दों को कोशक्रम के अनुसार व्यवस्थित करना हो तो हम सबसे पहले यह देखेंगे कि अनुस्वार वाले शब्द कौन से हैं, क्योंकि वर्णक्रम में सबसे पहले अनुस्वार आता है। इस आधार पर उक्त शब्दों में से 'कंचन' शब्द सबसे पहले आएगा। इसके पश्चात समस्या खड़ी होती है, क्योंकि शेष सभी शब्दों में प्रथम वर्ण 'क' है। इस स्थिति में शब्दों के दूसरे स्थान के वर्ण की आधार लेकर चलना होगा। वर्णमाला में त-वर्ग प-वर्ग से पहले आता है। त-वर्ग में हमारे पास चार शब्द हैं – 'कतरा', 'कदम', 'कनक' और 'कनखी'। वर्णमाला में त, द, न यह क्रम है, इस आधार पर देखा जाए तो ये शब्द 'कतरा', 'कदम', 'कनक', 'कनखी' के क्रम में आएँगे। उसके पश्चात 'कपट' और 'कपाल' शब्द आएँगे। इसके बाद अब हम 'कलम' और 'कलिंग' शब्दों पर विचार करते हैं। 'क' और 'ल' पहले और दूसरे स्थान के वर्ण, दोनों में समान हैं। उस स्थिति में तीसरे स्थान का वर्ण देखा जाएगा। तीसरे स्थान पर 'कलिंग' में 'इ' की मात्रा है, जो 'कलम' के पश्चात आएगी। इस प्रकार उक्त सभी शब्दों वर्णक्रम क्रमशः इस प्रकार होगा – 'कंचन', 'कतरा', 'कदम', 'कनक', 'कनखी', 'कपट', 'कपाल', 'कलम', 'कलिंग'।

हिंदी के वर्णक्रम और उनके अनुसार कोश में उन्हें व्यवस्थित करने के बारे में जानकारी हासिल करने के बाद आइए कुछ अभ्यास किया जाए ताकि आपको हिंदी के शब्दों को वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित करना अच्छी तरह से समझ में आ जाए। इससे आपको शब्दों को हिंदी वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने या हिंदी शब्दकोश में शब्द-विशेष को ढूँढने में मदद मिलेगी।

अभ्यास 1

हिंदी के निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश की दृष्टि से उपयुक्त वर्णक्रम में रखिए :

1. पत्ता, पदार्थ, पदभार, परीक्षा, परिग्रह, परदेसी, परंपरा, प्रशासन, प्रवंचना, पोषण

   ....

   ....

2. अपनापन, धूमकेतु, भँवरा, नर्मदा, गुमराह, तनुजा, पत्थर, लगाम, सितारा, शलाका

   ....

   ....

3. क्ष, क्ल, क्र, क्व, क्य, कृ, क्रि

   ....

   ....

4. कबंध, कक्ष, क्षुधा, कर्णप्रिय, कट्टर, कर्तृवाच्य, क्षेम, कंटक, कच्चा, कर्कश

   ....

   ....

5. अक्षम, अपंग, अरूप, अंकुर, अग्नि, अक्खड़, अरुण, अगस्त, अकृत्रिम, अखण्ड

   ....

   ....

6. ऋत्विज, एकत्व, एंबुलेंस, ऋक्ष, ऋग्वेद, एकत्रित, ऊँचा, ऊश्म, ऊर्जस्वी, ऊर्ध्व

   ....

   ....

अब तक आपको हिंदी शब्दकोश में वर्णक्रम-व्यवस्था स्पष्ट हो गई होगी और आपने अभ्यास भी कर लिया होगा। आप इस प्रकार के अभ्यास को जारी रखें ताकि सत्रांत परीक्षा में इस प्रकार के प्रश्न को हल करने में आपको कोई मुश्किल न हो। जैसा कि आपको पहले ही स्पष्ट किया ही जा चुका है कि **सत्रांत परीक्षा में इससे संबंधित प्रश्न भी पूछा जाएगा**। आइए, अब हम अंग्रेजी शब्दकोश की वर्णक्रम-व्यवस्था पर विचार करें।

अंग्रेजी वर्णक्रम :

जैसा कि आप जानते हैं कि अंग्रेजी भाषा रोमन लिपि में लिखी जाती है, जबकि हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली भाषा है। रोमन स्वर-आधारित लिपि है और हिंदी व्यंजन-आधारित। दोनों के वर्णों की संख्या में भिन्नता है और वर्तनी में उनका संयोजन भी भिन्न है। हिंदी वर्णमाला में स्वरों को स्वतंत्र रूप से भी लिखा जाता है और मात्राओं के रूप में भी। मात्राएँ भी व्यंजन वर्ण के बाईं ओर भी आ सकती हैं (जैसे, किन, दिल आदि में), दाईं ओर भी आ सकती हैं (जैसे, काम, दीवार आदि में)। इसी तरह, वे व्यंजन वर्ण के ऊपर भी हो सकती हैं (जैसे, रेल, सैर आदि में) और नीचे भी (जैसे, मुख्य, भूख)। इसके अलावा, वे व्यंजन वर्ण के बीच में भी आ सकती हैं (जैसे, रुपया, रूप आदि में)। जबकि अंग्रेजी में मात्राएँ नहीं होतीं। इसके अलावा, दोनों में अंतर का एक आधार यह भी है कि हिंदी वर्णमाला में पहले स्वर आते हैं और उसके बाद व्यंजन। जबकि अंग्रेजी में स्वर स्वतंत्र रूप से तो लिखे जाते हैं, लेकिन वे व्यंजनों के साथ ही संयोजित होते हैं, अलग से नहीं।

हिंदी शब्दकोशों की तुलना में अंग्रेजी शब्दकोशों में अंग्रेजी भाषा के वर्णों के क्रम का निर्वाह अपेक्षाकृत सरल है। कोश में प्रविष्टियाँ प्रथम वर्ण 'a' से प्रारंभ होकर अंतिम वर्ण 'z' तक जाती हैं। प्रत्येक शब्द में वर्णों का क्रम हिंदी

के समान ही रहता है। यानी अंग्रेजी शब्दकोशों में भी क्रमशः पहले, दूसरे, तीसरे स्थान के वर्णों को भी वर्णमाला के क्रमानुसार लिया जाता है। शब्दकोश में शब्दों की वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्था को समझने के लिए हम उदाहरण की सहायता ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, Compact Oxford Reference Dictionary में 'a' से प्रारंभ हाने वाले निम्नलिखित शब्दों को देखिए :

1. aardvark
2. aaron
3. aback
4. abacus
5. abandon
6. abandoned
7. abase
8. abashed
9. abate
10. abattoir
11. abbas
12. abbess
13. abbey
14. abbot
15. abbreviate
16. abbreviation
17. abdicate
18. abdomen
19. abduct
20. abel
21. abelard
22. abhor
23. abide
24. abject
25. ablaze
26. abnormal
27. aboard
28. abrade
29. abridge
30. absent
31. abuse
32. abyss
33. acacia
34. accede

उपर्युक्त शब्दों को गौर से देखने पर आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि पहले 'aa' के शब्द (क्रम संख्या 1 और 2, अर्थात 'aardvark', 'aaron') लिए गए फिर 'ab' के शब्द।

एक ही वर्ण से बनने वाले पहले दो शब्दों 'aa' के बाद अगले दो वर्ण ab से आरंभ होने वाले शब्दों को लिया गया है। इसके अंतर्गत कुल 14 शब्द हैं (क्रम संख्या 3 से 16)। इसलिए इन्हें वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने के लिए 'ab' से आरंभ हाने वाले शब्दों में भी तीसरे और चौथे स्थान के वर्णों के क्रम को ध्यान में रखा गया। जैसे, ba, abb, abc, abd, abe आदि। इस आधार पर आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि 'aba' के आठ शब्द हैं – aback, abacus, abandon, abandoned, abase, abashed, abate, abattoir.

इसके बाद चौथे स्थान के वर्णक्रम को देखा गया है – 'abac'। इनसे बने दो शब्द हैं – aback, abacus।

पाँचवें स्थान के वर्णक्रम को देखने पर पता चलता है कि 'k' वर्ण, अंग्रेजी के 'u' से पहले आता है इसलिए 'aback' पहले रखा गया, 'abacus' बाद में।

इस प्रकार आपने देखा कि शब्दकोश में केवल पहले और दूसरे स्थान के वर्णक्रम का ही ध्यान नहीं रखा जाता अपितु तीसरे, चौथे, पाँचवे, छठे स्थान तक भी वर्णक्रम को देखा जाता है। 'ab' के अंतिम वर्ण 'abyss' जिसमें तीसरे स्थान के 'y' तक के सभी वर्ण आ गए। उसके बाद 'ac' से आरंभ होने वाले शब्द लिए गए। इस तरह से पूरे शब्दकोश में वर्णक्रम का निर्वाह किया जाता है।

अंग्रेजी के वर्णक्रम और उनके अनुसार कोश में उन्हें व्यवस्थित करने के बारे में जानकारी हासिल करने के बाद आइए कुछ अभ्यास किया जाए। इससे आपको शब्दों को अंग्रेजी वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी। आपका यह प्रयास सत्रांत परीक्षा की दृष्टि से भी सार्थक ही सिद्ध होगा।

अभ्यास 2

अंग्रेजी के निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश की दृष्टि से उपयुक्त वर्णक्रम में रखिए :

1. copy, copt, cooler, copper, cord, cotton, coolant, cough, co-operative, cosmic

   ....

   ....

2. reparable, repatriate, repair, replication, repatriation, reparative, repetition, reorganization, repartee, repairable

   ....

   ....

3. notifiable, notoriety, nourish, notarial, notorious, notification, nought, notability, notional, notation

....

....

4. scald, scallop, scalariform, scallion, scallywag, scalawag, scalpriform, scalable, scalene, scaled

....

....

अब तक आपको हिंदी और अंग्रेजी शब्दकोशों में वर्णक्रमों की व्यवस्था स्पष्ट हो गई होगी और आपने इसका समुचित अभ्यास भी कर लिया है। **हमें विश्वास है कि आप अपना यह अभ्यास जारी रखेंगे ताकि सत्रांत परीक्षा में इस प्रकार के प्रश्न को हल करने में आपको कोई मुश्किल न हो।** स्वाभाविक है कि अच्छे अभ्यास के कारण इससे आपको सत्रांत परीक्षा के प्रश्नों को हल करने में आसानी होगी। आइए, अब हम कोशों में व्याकरणिक कोटि पर विचार करें।

3.5.2 व्याकरणिक कोटि

जिस प्रकार कोश-निर्माण एक कला है, उसी प्रकार कोश में वांछित शब्द तक पहुँचना और उसका प्रसंगगत अर्थ ढूँढना भी कला से कम नहीं है। शब्दकोश में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति, व्याकरणिक कोटि, अर्थछायाएँ एवं प्रयोग उपलब्ध रहते हैं। कोश-प्रयोक्ता द्वारा इनके संबंध में सामान्य ज्ञान प्राप्त किए बिना सही प्रयोग नहीं किया जा सकता। किसी भी शब्द का अर्थ दिए हुए संदर्भ में उसकी व्याकरणिक कोटि (संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि) से निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, आचार्य रामचंद्र वर्मा के 'प्रामाणिक हिंदी शब्दकोश' की निम्नलिखित प्रविष्टि देखते हैं :

गोल[1] वि. [सं.] 1. वृत्त या चक्र के आकार का। 2. ऐसे घनात्मक आकार का, जिसके तल का प्रत्येक बिंदु उसके अंदर के मध्य बिंदु से समान दूरी पर हो, गेंद आदि के आकार का, सर्ववर्तुल। *पद गोल बात* = ऐसी अस्पष्ट बात, जिसके कई अर्थ हों या हो सकते हों। *मुहा. गोल करना* = कोई चीज कहीं से चुपके से हटा देना, गायब करना। *गोल रहना* = बिल्कुल चुप रहना। *गोल होना* = कहीं से चुपचाप हट जाना, खिसक जाना। पुं. 1. मंडलाकार क्षेत्र, वृत्त। 2. गोलाकार पिंड, गोला। (स्फियर)

गोल [2] पुं. [अ. गोल] मंडली, झुंड।

गोल [3] पुं. [अं.] 1. लक्ष्य या उद्देश्य। 2. खेल के मैदान में दोनों ओर बना हुआ वह स्थान जहाँ बाजी जीतने के लिए गेंद आदि को पहुँचा देना किसी पक्ष के खिलाड़ियों को अभीष्ट होता है।

आपने गौर किया होगा कि यह 'गोल' शब्द 'विशेषण' की कोटि में भी है और 'पुल्लिंग' संज्ञा शब्द भी है। स्रोत की दृष्टि से देखें तो कहीं यह संस्कृत से आया है, कहीं अरबी से और कहीं अंग्रेजी से। समध्वनिक होने के कारण ऐसे शब्द एक ही प्रतीत होते हैं, परंतु आपने ध्यान किया होगा कि संस्कृत से व्युत्पन्न 'गोल' शब्द 'विशेषण' है। वहाँ उसका अर्थ भिन्न है। इसी तरह अंग्रेजी से आगत 'गोल' शब्द एवं अरबी के 'गोल' शब्द का अर्थ भिन्न है। मुहावरे में 'गोल' शब्द से 'गोल करना', 'गोल रहना', 'गोल होना' भिन्न-भिन्न अर्थों के द्योतक हैं। अनुवाद के दौरान अनुवादक के समक्ष यह पूरी तरह से स्पष्ट रहना चाहिए कि किसी शब्द की व्याकरणिक कोटि और प्रकृति क्या है, उसका स्रोत क्या है, अन्यथा अनुवाद करते समय अनेक भूलें हो सकती हैं। इसे अंग्रेजी के निम्नलिखित तीन वाक्यों से अच्छी तरह से समझा जा सकता है :

1. There is a stone lying on the road.
2. The student will stone the teacher.
3. He is a stone deaf.

तीनों वाक्यों में 'stone' शब्द का प्रयोग हुआ है। पहले वाक्य में 'stone' संज्ञा (noun) शब्द है, जिसका अर्थ 'पत्थर' है। दूसरे वाक्य में 'stone' क्रिया (verb) शब्द है जिसका 'मारना' क्रिया से संबंध है, तीसरे वाक्य में 'stone' विशेषण (adjective) शब्द है, जिसका अर्थ 'नितांत पूरी तरह' है।

इस प्रकार आपने देखा कि समध्वनिक एवं समवर्तनी वाले शब्द व्याकरणिक भेद से भिन्न-भिन्न अर्थ को द्योतित करते हैं। अंतः अनुवाद करते समय व्याकरणिक कोटि को जानना अति-आवश्यक है। शब्दकोश में प्रत्येक शब्द के साथ उसकी व्याकरणिक कोटि और उसका स्रोत दिया जाता है। शब्दकोश देखते समय यदि इन संकेतों को समझ कर शब्द के विभिन्न अर्थों में से वांछित अर्थ ग्रहण किया जाए तो अनुवाद करते समय गलतियों की संभावना कम हो जाएगी। अनुवाद करते समय यह जानना आवश्यक है कि जिस शब्द का अनुवाद किया जाना है, वह व्याकरणिक दृष्टि से किस कोटि में आता है।

3.5.3 संदर्भ-सापेक्षता एवं अन्य जानकारियाँ

प्रत्येक भाषा में अनेक शब्द ऐसे होते हैं, जिन्हें सामान्यतः हम पर्याय के रूप में स्वीकार करते हैं, किंतु प्रयोग के धरातल पर अर्थों में थोड़ा-बहुत अंतर होते हुए भी विशिष्ट अर्थछायाएँ उनके साथ जुड़ी रहती हैं। इन प्रयोगगत सूक्ष्म भेदों का ज्ञान ही अनुवादक को उपयुक्त शब्द-चयन में सफल बना सकता है। शब्दकोश एकभाषी हो अथवा द्विभाषी, लेकिन इतना तो अवश्य ही है कि किसी शब्द के अनेक विकल्प उपलब्ध होते हैं। अनुवाद करते समय अनुवादक के सम्मुख यह दुविधा रहती है कि इतने विकल्पों में से किस प्रतिशब्द को चुने। शब्दकोश का उपयोग करते समय यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि शब्द विशेष का सीधे-सीधे निर्विकल्प अर्थ मिल जाएगा और अनुवाद में उसका प्रयोग कर लिया जाएगा। यह अपेक्षा निर्मूल है, क्योंकि कोश में शब्दों के अन्य विकल्प भी दिए हुए होते हैं। ऐसे में शब्द विशेष के सभी अर्थों तथा प्रयोगों को गौर से देखना पड़ता है और यह निर्णय लेना पड़ता है कि प्रस्तुत संदर्भ में कौन-सा अर्थ और उसका प्रतिशब्द उपयुक्त होगा। इसका मूल कारण यही है कि कोश में विषय के आधार पर अथवा प्रयोग-संदर्भ को ध्यान में रखते हुए एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ दिए होते हैं। इसे समझने के लिए हम 'रस' शब्द को उदाहरण के तौर पर लेते हैं। 'रस' सामान्य शब्द न होकर अर्ध-पारिभाषिक शब्द है, यानी उसका सामान्य अर्थ में भी प्रयोग होता है और पारिभाषिक अर्थ में भी। पारिभाषिकता की दृष्टि से देखें तो 'रस' शब्द का काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, आयुर्वेद, साहित्य आदि विभिन्न संदर्भों में विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है। आचार्य रामचंद्र वर्मा के 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में 'रस' संबंधी प्रविष्टि इस प्रकार है :

> **रस** पुं. [सं.] 1. वनस्पतियों अथवा उनके फूल-पत्तों आदि में रहनेवाला वह तरल पदार्थ, जो दबाने, निचोड़ने आदि पर निकलता या निकल सकता है, जैसे अंगूर, ऊख, जामुन आदि का रस। 2. वृक्षों के शरीर से निकलने या पोंछकर निकाला जाने वाला तरल पदार्थ, निर्यास जैसे ताड़, शाल आदि वृक्षों में से निकला या निकाला हुआ रस। 3. किसी चीज को उबालने पर निकलने वाला उसका सार भाग, रसा। 4. प्राणियों के शरीर में से निकलने वाला कोई तरल पदार्थ, जैसे दूध, पसीना, रक्त आदि। 5. प्राणियों, विशेषतः मनुष्यों के शरीर में खाद्य पदार्थों के पहुँचने पर उनका पहले-पहल बनने वाला वह तरल रूप, जिससे आगे चलकर रक्त बनता है। (वैद्यक में इसे शरीरस्थ सात धातुओं में से पहली धातु माना गया है।) 6. जल, पानी। 7. पानी में घोला हुआ गुड़, चीनी, मिसरी आदि, शरबत। 8. किसी पदार्थ का सार भाग, तत्त्व, सत्त। 9. वैद्यक में धातुओं आदि को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। 10. पारा। 11. शिंगरफ, हिंगुल। 12. जहर, विष। 13. खाने-पीने की चीज मुँह में पड़ने पर उससे जीभ को होने वाला अनुभव या मिलने वाला स्वाद। (हमारे यहाँ वैद्यक में ये छह रस माने गये हैं – अम्ल, कटु, कषाय, तिक्त, मधुर और लवण।) 14. कविता आदि में उक्त रसों के आधार पर माना हुआ छह की संख्या का वाचक शब्द। 15. कार्य, विषय, व्यक्ति आदि के प्रति होनेवाला अनुराग, प्रीति, प्रेम, मुहब्बत। 16. यौवनकाल में मनुष्य के मन में अनुराग या प्रेम का होने वाला संचार। मुहा. *रस भीजना या भीनना* = (क) मनुष्य में यौवन का आरंभ होना। (ख) अनुराग या प्रेम का संचार होना। 17. किसी काम या बात से किसी प्रकार का संबंध होने पर उससे मिलने वाला आनंद या उसके प्रति होनेवाली रुचि, कार्य या व्यापार के प्रति होनेवाली कुतूहलमूलक प्रवृत्ति या उससे होनेवाली सुखद अनुभूति, दिलचस्पी, जैसे (क) इस पुस्तक में हमें कोई रस नहीं मिला। (ख) वे अब सार्वजनिक कार्यों में विशेष रस लेने लगे हैं। (इंटरेस्ट) 18. साहित्यिक क्षेत्र में (क) कथानकों, काव्यों, नाटकों आदि में रहनेवाला वह तत्व जो अनुराग, करुणा, क्रोध, रति आदि मनोभावों को

जाग्रत, प्रबल तथा सक्रिय करता है। यह तत्व कवियों, लेखकों आदि की प्रतिभा, रचना कौशल और उपयुक्त शब्दयोजना तथा वाक्य-विन्यास से उत्पन्न होता है। (ख) हमारे यहाँ के साहित्यकारों के मत से यह उक्त तत्व और अनुभाव, विभाव और संचारी की सहायता से सहृदय पाठकों के मन में रहने वाले स्थायी भावों को परिपक्व, पुष्ट और व्यक्त करके उन्हें प्रसन्न तथा संतुष्ट करके उनके साथ एकात्मकता स्थापित करता है। इसके ये नौ प्रकार या भेद कहे गए हैं – अद्भुत, करुण, भयानक, रौद्र, वीभत्स, वीर, शांत, शृंगार और हास्य। 19. कविता में उक्त नौ रसों के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द। 20. अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के वश में रहने की अवस्था का भान, उदा. राजत अंग रस विरस अति, सरस सरस रस भेव। – केशव। 21. मन की तरंग, मौज। 22. उमंग, जोश। 23. काम क्रीड़ा, केलि, विहार। 24. गुण, तत्व, रूप विशेषता आदि के विचार से होने वाला वर्ग या विभाग, तरह, प्रकार, जैसे एक रस, समरस।

स्पष्ट है कि आचार्य रामचंद्र वर्मा ने अपने कोश में 'रस' शब्द के 24 अर्थ दिए हैं। साहित्य, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, आयुर्वेद आदि विभिन्न संदर्भों में उसके अर्थ ही नहीं दिए गए, बल्कि मुहावरे आदि से संबंधित अन्य जानकारी भी उपलब्ध कराई है। अनुवाद के दौरान इन विभिन्न विकल्पों में से विषय विशेष से संबंधित अर्थ का चयन किया जा सकता है। इसी प्रकार, हम 'प्रामाणिक हिंदी कोश' से ही एक अन्य उदाहरण लेते हैं :

ललित स्त्री. [सं.] [भाव. लालित्य] 1. सुंदर, मनोहर। 2. प्रिय, प्यारा। पुं. 1. साहित्य में एक अलंकार, जिसमें किसी प्रस्तुत कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन न करके समान अथवा प्रतिबिंब रूप किसी दूसरे कार्य या घटना का इस प्रकार उल्लेख होता है कि वह प्रस्तुत कार्य घटना पर ठीक तरह से घटित हो, जैसे तुमने उसे बिगाड़ करके मानो घर आने वाली लक्ष्मी का द्वार बंद कर दिया। 2. एक प्रकार का विषम वर्णवृत्त। 3. षाड़व जाति का एक राग जो रात के अंतिम पहर में गाया जाता है। 4.शृंगार रस में सुकुमारता से और आकर्षक रूप से अंग हिलाना जो एक हाव माना गया है। 5. मनोहर अंगभंगी।

कोश में 'ललित' शब्द का सामान्य अर्थ सुंदर, मनोहर, प्रिय है, परंतु अलंकारशास्त्र में 'ललित' शब्द एक अलंकार का नाम है, वहीं छंदशास्त्र के संदर्भ में 'ललित' एक विषम वृत्त है और संगीतशास्त्र में 'ललित' एक राग का नाम है, जो रात के अंतिम पहर में गाया जाता है। इसी तरह से 'रस' के संदर्भ में 'ललित' शृंगार रस का एक हाव माना गया है। इस प्रकार शब्दकोश में किसी भी शब्द के बहुविकल्पों में से विषय के आधार पर अथवा संदर्भ को ध्यान में रखकर उपयुक्त शब्द का चयन करना पड़ता है।

आइए अब हम एक उदाहरण हिंदी-अंग्रेजी कोश से लेते हैं। निम्नलिखित प्रविष्टि श्री महेंद्र चतुर्वेदी और डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा संपादित 'व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी कोश' (A Practical Hindi-English Dictionary) से ली गई है :

ज़िंदगी zindagi: (nf) life; liveliness; – भर all one's life, throughout life; – के आख़िरी दिन गिनना/- के दिन पूरे करना to pass time somehow, to count the last days of life; – बसर करना to spend life; to carry on anyhow; – भारी होना life to hang heavy; – में मौत का मजा चखना to know death in life, to undergo tremendous hardships in life; – से बेजार होना to be fed up/tired of life.

इस उदाहरण में आपने गौर किया होगा कि 'ज़िंदगी' प्रविष्टि के अंतर्गत 'ज़िंदगी-भर', 'ज़िंदगी के आख़िरी दिन गिनना/ज़िंदगी के दिन पूरे करना', 'ज़िंदगी बसर करना', 'ज़िंदगी भारी होना', 'ज़िंदगी में मौत का मजा चखना', और 'जिंदगी से बेजार होना' आदि अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए हर जगह 'ज़िदगी' शब्द की पुनरावृत्ति करने के स्थान पर 'डैश' को प्रयुक्त किया गया है।

स्पष्ट है कि कोशों में प्रयोग-संदर्भों की जानकारी के साथ-साथ प्रविष्ट शब्द से संबद्ध अन्य शब्द, उनके विषय-क्षेत्र, उस शब्द-विशेष के साथ जुड़े मुहावरे-कहावतें आदि को भी शामिल किया हुआ होता है। इसके अतिरिक्त कई

शब्दकोशों में विभिन्न विषयों से संबद्ध अन्य सूचनाएँ भी होती हैं, जैसे Compact Oxford Reference Dictionary में 16 परिशिष्टों में संसार के देशों के नाम, उनकी राजधानी, उनकी मुद्रा (Currency), संक्षिप्ति (Abbreviation), अमेरिका के विभिन्न राज्य, संसार के विभिन्न देशों के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपतियों की सूची, इंगलैंड के राजा और रानियों की सूची, मूक-बधिरों के लिए प्रयुक्त वर्णमाला, संकेतकों की सूची, नाप-तौल के पैमाने, गणित में प्रयुक्त चिह्नों की सूची, मीट्रिक प्रणाली, रासायनिक तत्वों की सूची, संगीत, भूगोल, ज्योतिषशास्त्र आदि से संबंधित विशेष चिह्नों की सूची दी गई है। अनुवाद करते समय अनुवादक इस प्रकार की अतिरिक्त जानकारी का भी लाभ उठा सकते हैं।

इसी प्रकार आचार्य रामचंद्र वर्मा ने 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में भी परिशिष्ट में अनुवादकों, अधिकारियों, व्यापारियों, विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए महत्त्वपूर्ण अंग्रेजी-हिंदी शब्दावली का अंग्रेजी वर्णक्रम के अनुसार संकलन किया है। विविध प्रसंगों में अनुवाद करते समय परिशिष्ट में शामिल इस प्रकार की जानकारियाँ अनुवादकों के लाभकारी हो सकती हैं। इसी प्रकार Chamber's Twentieth Century Dictionary में भी कोश के अंत में संगीत संबंधी चिह्न तथा संक्षिप्तियाँ, गणित में प्रयुक्त चिह्नों की अर्थ सहित सूची, यूरोपीय प्राचीन ग्रंथों तथा बाइबिल में प्रयुक्त नामों के उच्चारणों की सूची, अंग्रेजी ईसाई नामों के उच्चारण तथा अर्थ सहित सूची, औपचारिक संबोधनों के संदर्भ और सूची, कुछ अमेरिकी उच्चारणों तथा वर्तनी की सूची, ग्रीक एवं रूसी वर्णमाला तथा मीट्रिक प्रणाली की सूची भी दी गई है। विविध प्रसंगों में अनुवाद करते समय इस प्रकार की जानकारियाँ काम आ सकती हैं।

अब आप समझ गए होंगे कि शब्दकोश में केवल शब्दों का अर्थ ही नहीं होता, अपितु अनेक अन्य जानकारियाँ भी उपलब्ध रहती हैं। इनका पूरा उपयोग करने के लिए आपको शब्दकोश देखना आना चाहिए।

3.6 कोश में शब्द ढूँढने का तरीका

अधिकांशतः कोश वर्णक्रम के अनुसार होते हैं, इसलिए किसी भी भाषा के कोश को देखने से पूर्व उस भाषा के वर्णक्रम का ज्ञान होना आवश्यक है। इससे शब्द ढूँढने में आसानी रहती है। शब्दकोश में शब्द ढूँढने से पूर्व कोश के पृष्ठ के शिरोभाग को देखना चाहिए। जब आप कोश खोलेंगे तो देखेंगे कि आमतौर पर बाएँ पृष्ठ की बाईं ओर उस पृष्ठ का पहला शब्द और बाएँ पृष्ठ के दाईं ओर उस पृष्ठ का अंतिम शब्द शिरोभाग पर लिखा होता है। इसी प्रकार दाएँ पृष्ठ के शिरोभाग पर भी दाईं ओर पृष्ठ का पहला शब्द और बाईं ओर पृष्ठ का अंतिम शब्द लिखा होता है। जिससे शब्द ढूँढने में आसानी हो जाती है। व्यर्थ में समय भी नष्ट नहीं होता। एक-एक शब्द को भी नहीं देखना पड़ता। उदाहरण के लिए, आप आचार्य रामचंद्र वर्मा का 'प्रामाणिक हिंदी कोश' देखिए। कोश के पृष्ठ 2 के शिरोभाग में बाईं ओर 'अंगज' शब्द एवं दाईं ओर 'अँगोछना' लिखा हुआ है। 'अंगज' से आरंभ होकर 'अँगोछना' तक की प्रविष्टि इस पृष्ठ पर है यह सूचना शिरोभाग से ही मिल जाती है।

इसी प्रकार, अंग्रेजी शब्दकोशों में भी शब्द ढूँढा जा सकता है। कुछ शब्दकोशों में बाएँ पृष्ठ के बाईं ओर कोने में तथा दाएँ पृष्ठ के दाईं ओर कोने में पहली और आखिरी प्रविष्टि एक साथ दे देते हैं, जैसे Compact Oxford Reference Dictionary में दोनों प्रविष्टियाँ एक साथ दे दी गई हैं। उदाहरण के लिए, पृष्ठ संख्या 180 और 181 देखिए। इसमें बाएँ पृष्ठ के बाईं ओर कोने में शिरोभाग पर coolant/copper लिखा हुआ है। इसी तरह, दाएँ पृष्ठ के दाईं ओर कोने में शिरोभाग पर Copper/Corgi लिखा है। इससे अभिप्राय है कि Coolant से प्रारंभ होकर Copper तक के शब्द बाएँ पृष्ठ पर हैं। Copper से Corgi तक के शब्द दाएँ पृष्ठ पर हैं। इस प्रकार शब्दों को ढूँढना आसान हो जाता है। यदि हमें Cord शब्द ढूँढना है तो वह दाएँ पृष्ठ पर मिल जाएगा। Copper और Corgi के बीच में Cord शब्द आता है। और, यदि हमें Cost शब्द ढूँढना है तो हमें अगले पृष्ठों पर देखना होगा क्योंकि इस पृष्ठ पर 'cor' तक के ही शब्द हैं। Cost में cos है। इसलिए एक-एक शब्द को देखने के बजाए पृष्ठ के शिरोभाग को देखकर ही हम वांछित शब्द को जल्दी ढूँढ सकते हैं। इस प्रकार शब्दकोश को देखने से पूर्व उसको देखने की तकनीक जानना आवश्यक है।

3.7 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करके आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि कोश उपयोग की प्रविधि कोश-संकल्पना से जुड़ा घटक है। कोश के उपयोग की प्रविधि जान लेने से कोश से वांछित जानकारी प्राप्त करनी आसान हो जाती है। कम समय में जिज्ञासा-समाधान के लिए वांछित शब्द अथवा प्रविष्टि ढूँढने में भाषा विशेष के अकारादि (वर्णमाला) क्रम का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कोश के आरंभ में दी गई भूमिका, संक्षिप्ताक्षर, संकेत चिह्न एवं रूपबंध (फॉर्मेट) आदि की जानकारी भी अपेक्षित है। इससे प्रविष्टि का अर्थ एवं विवेचन कम समय में एवं समग्रता से समझा जा सकता है। संज्ञा शब्दों के मानक उच्चारण संबंधी नियम अथवा पद्धति आदि का ज्ञान भी कुछ कोशों से होता है। शब्द अथवा प्रविष्टि विशेष का लिप्यंतरण एवं भाषा विशेष में उसके उच्चारण का लिप्यंतरण भी कोश के आरंभिक वक्तव्यों से स्पष्ट होता है।

कोशों के माध्यम से अध्येता अथवा प्रयोक्ता को भाषा के वर्णक्रम (प्रविष्टि क्रम), शब्द (नए, पुराने, आगत, विदेशी आदि), उपभाषा, वर्तनी, व्युत्पत्ति, शब्द-स्रोत, धातु, प्रतिशब्द, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, पद, उच्चारण, उद्धरण, सूक्ति, विषय, मानक/अमानक प्रयोग, लेखन विधि, इतिहास, अंतःकथा, भाषा-साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान संबंधी अनेक जानकारियाँ मिलती हैं। अनुवादक अथवा अध्येता, कोश का उपयोग करने से पूर्व कोश की प्रकृति, भूमिका में कोश देखने के निर्देश और संकेत प्रणाली को समझ ले तो वह कोश से अधिक सहायता ले सकता है।

कोश उपयोग की प्रविधि को भली प्रकार से जानने के दौरान इस इकाई में आपने अंग्रेजी और हिंदी के शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का अभ्यास भी किया है। उम्मीद है कि अब आप शब्दों को वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित कर सकेंगे। इकाई के भाग 3.8 में दिए गए अभ्यासों के उत्तर से अपने उत्तर मिलाइए और यह स्वयं ही जाँच कीजिए कि क्या आपने शब्दों को सही क्रम से व्यवस्थित किया है या नहीं। **आपसे अनुरोध है कि शब्दों को उपयुक्त वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने का भरपूर अभ्यास करें। हम आपको यह ध्यान दिलाना चाहते हैं कि सत्रांत परीक्षा में अंग्रेज़ी और हिंदी के चयनित शब्दों को वर्णक्रम/अकारादिक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने से संबंधित प्रश्न भी शामिल किए जाएँगे।** उस स्थिति में आपके द्वारा किए गए भरपूर अभ्यास उन प्रश्नों को हल करने में मददगार सिद्ध होंगे।

3.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. कोश उपयोग की प्रविधि से आप क्या समझते हैं? कोश उपयोग के संदर्भ में प्रक्रिया और प्रविधि में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. शब्दकोश में संकेत प्रणाली से क्या अभिप्राय है? कोश ग्रंथों में इनकी क्या भूमिका होती है?
3. कोशों में प्रयुक्त संकेतों को कितने वर्गों में विभाजित किया जाता है?
4. शब्दकोश के संदर्भ में वर्णक्रम से क्या अभिप्राय है? हिंदी तथा अंग्रेजी वर्णक्रम में अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. कोश-प्रयोक्ता को विषय संदर्भ का क्यों ध्यान रखना होता है?

इकाई में दिए गए अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

1.	पत्ता	पदभार	पदार्थ	परंपरा	परदेसी
	परिग्रह	परीक्षा	पोषण	प्रवंचना	प्रशासन
2.	अपनापन	गुमराह	तनुज	धूमकेतु	नर्मदा
	पत्थर	भँवरा	लगाम	शलाका	सितारा
3.	कृ	क्य	क्र	क्रि	क्ल
	क्व	क्ष			

4.	कंटक	कक्ष	कच्चा	कट्टर	कबंध
	कर्कश	कर्णप्रिय	कर्तृवाच्य	क्षुधा	क्षेम
5.	अंकुर	अकृत्रिम	अक्खड़	अक्षम	अखंड
	अगस्त	अग्नि	अपंग	अरुण	अरूप
6.	ऊँचा	ऊर्जस्वी	ऊर्ध्व	ऊष्म	ऋक्ष
	ऋग्वेद	ऋत्विज	एंबुलेंस	एकत्रित	एकत्व

अभ्यास 2

1.	coolant	cooler	co-operative	copper	copt
	copy	cord	cosmic	cotton	cough
2.	reorganization	repair	repairable	reparable	reparative
	repartee	repatriate	repatriation	repetition	replication
3.	notability	notarial	notation	notifiable	notification
	notional	notoriety	notorious	nought	nourish
4.	scalable	scalariform	scalawag	scald	scaled
	scalene	scallion	scallop	scallywag	scalpriform

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, भोलानाथ, *कोशविज्ञान,* दिल्ली, शब्दकार।
- *'अनुवाद' (पत्रिका),* अंक 94-95, कोश विशेषांक, जनवरी-जून 1998, नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- बुल्के, फादर कामिल, *अँगरेजी-हिंदी कोश,* नई दिल्ली, अमरकोश, एशियन एजुकेशनल।
- वर्मा, रामचंद्र, (संपा.), *प्रामाणिक हिंदी कोश*।
- वर्मा, रामचंद्र, (संपा.), *मानक शब्द कोश*।
- बृहत् प्रशासन शब्दावली, नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।
- बृहत् हिंदी कोश, आगरा, ज्ञानमंडल लिमिटेड।
- वर्मा, धीरेंद्र (संपा.), हिंदी साहित्य कोश, भाग 1, 2।
- The Compact Oxford Reference Dictionary.
- Chamber's Twentieth Century Dictionary.